UPBIL 04831

विशेषांक

मूल्य ₹100

संस्कृति पर्व

संस्कृति, साहित्य, अध्यात्म और जीवन दर्शन की मासिक द्विभाषी पत्रिका

sanskriti parva

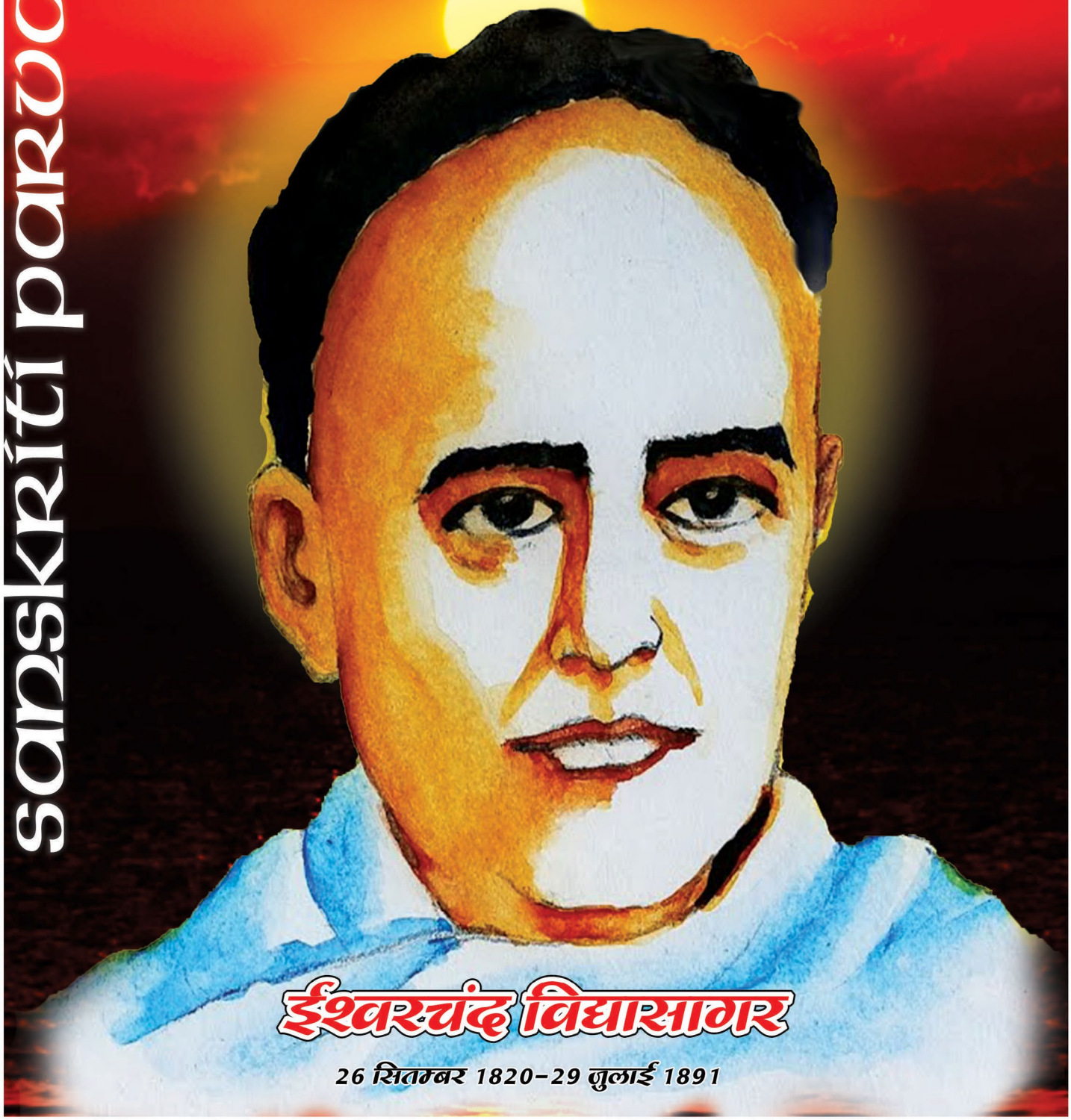

ईश्वरचंद विद्यासागर

26 सितम्बर 1820–29 जुलाई 1891

विदेश के लिए मूल्य $10

हरी प्रसाद गोपी कृष्ण सराफ प्रा. लि. वेन्चर

गोरखपुर: गोपी गली, हिन्दी बाज़ार । ऐश्प्रा क्रासिंग, पार्क रोड

TOLL FREE : 1800 120 1299 • देवरिया । पडरौना । बस्ती । बलिया । आजमगढ़ । लखनऊ । मुम्बई • AISSHPRA JEWELLERY

सभी प्रदेशवासियों को

नववर्ष, मकरसंक्रांति, गणतंत्र दिवस, सरस्वती पूजा, महाशिवरात्रि

की हार्दिक

शुभकामनाएं

रविकान्त तिवारी,

भाजपा नेता,

विधानसभा- 326,

चौरी-चौरा (गोरखपुर)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं०
01	लोकोत्तर महामानव ईश्वर चंद्र विद्यासागर की संघर्ष-गाथा	प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय	10
02	Bengal's Pathbreaking reformer	Dr. Rajeev Tiwari	20
03	Ishwar Chandra Vidyasagar: A Great Reformer	Ramandeep Kaur	24
04	His life as a guide for Social Action	Vikramaditya Singh	27
05	श्रीरामकृष्ण परमहंस का पण्डित ईश्वरचंद्र विद्यासागर के घर आना	रत्नदीप उपाध्याय	30
06	शिक्षा के जाज्वल्यमान नक्षत्र	कमलेश कमल	38
07	ईश्वरीय संपदा ईश्वर चंद	कैप्टन सुभाष ओझा	40
08	युगक्रान्ति के महानायक	अनिता अग्रवाल	42
09	नारी उत्थान के समर्थक ईश्वर चंद्र विद्यासागर	डॉ.अर्चना पाठया	46
10	ईश्वर चंद्र विद्यासागर और वर्तमान हालात	रजनी पाण्डेय	48
11	ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी एवं स्त्री उत्थान	डॉ प्रियंका एम तिवारी	50
12	स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के मसीहा	नीता चौबीसा	52
13	सत्सङ्ग	स्वामी अखण्डानंद सरस्वती	55
14	नवभारत फाउण्डेशन की स्थापना		56
15	काव्य फलक	नेहा त्रिपाठी, दिव्या शुक्ला, निधि भार्गव 'मानवी', पूजा खत्री, डॉ. सीमा विजयवर्गीय, डॉ. ममता त्रिपाठी, बबिता ओबराए, अर्चना मालवीय	62

पाठकों से

संस्कृति पर्व का यह विशेष अंक आपके हाथों में है। इस अंक के लिये चित्रों का संकलन गूगल से किया गया है जिसके लिए हम उन सभी छायाकारों के प्रति कृतज्ञ हैं। इस अंक मे संभव है कि संपादन अथवा संयोजन में कुछ त्रुटियां रह गयी हों इसलिए हम अपने सुधी पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे त्रुटियों को नजरअंदाज करेंगें। यह अंक आपको कैसा लगा इस बारे में हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराईएगा। सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में आपका योगदान अत्यंत मूल्यवान है। – सम्पादक

प्रेरणा
परम पूज्य स्वामी अखण्डानंद जी महाराज
संत साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
ब्रह्मर्षि रेवती रमण पाण्डेय

संस्कृति पर्व
sanskritiparva

ईश्वरचंद्र विद्यासागर अंक
वर्ष-4 अंक-01 मार्च, अप्रैल - 2021

सनातन प्रकाश पुंज

स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती जी
(महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति एवं गंगा महासभा)
जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी (श्री अयोध्या जी)
स्वामी राजकुमार दासजी (श्री अयोध्या जी)

विद्वत परिषद

प्रो० सभाजीत मिश्र
(पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय)
प्रो० दयानाथ त्रिपाठी
(पूर्व अध्यक्ष, आईसीएचआर, नई दिल्ली)
डॉ० लालता प्रसाद मिश्र
(वरिष्ठ अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, लखनऊ)
ए. पी. मिश्र
(अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, लखनऊ)
अमरनाथ सिंह
(समाजसेवी एवं आध्यात्मिक चिंतक)
प्रो० विनय कुमार पाण्डेय
(अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग का० हि० वि० वि०, वाराणसी)
प्रो० रामदेव शुक्ल
(पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गो०वि०वि०)
प्रो० माता प्रसाद त्रिपाठी
(पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, गो०वि०वि०)
प्रो० नन्द किशोर पाण्डेय
(अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)
प्रो० सदानंद गुप्त
(कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ)
श्री मनोजकांत (राष्ट्रवादी चिंतक)
प्रो० अजित के चतुर्वेदी (निदेशक, आईआईटी रुड़की)
प्रो० सुरेन्द्र दुबे
(कुलपति, सिद्धार्थ वि०वि०, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर)
प्रो० राजेन्द्र प्रसाद
(कुलपति, मगध विश्वविद्यालय, गया, बिहार)
श्री प्रफुल्ल केतकर
(सम्पादक, ऑर्गनाइजर)
श्री कृष्णकांत उपाध्याय
(सम्पादक,जनता टीवी, उ. प्र.)
डॉ० प्रदीप राव (शिक्षाविद्, गोरखपुर)
प्रो० हिमांशु चतुर्वेदी
(पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, गो०वि०वि०)
प्रो० राजेन्द्र सिंह
(पूर्व प्रतिकुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)
श्री आर एल पाण्डेय
(शिक्षाविद् टेक्सास, अमेरिका)
डॉ० मृणालिनी चतुर्वेदी
(अध्यक्ष, क्रायोबैंक इंटरनेशनल, नई दिल्ली)
डॉ० नरेश अग्रवाल
(वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, गोरखपुर)
डॉ० आर० सी० श्रीवास्तव
(अवकाशप्राप्त आई०ए०एस०)
राकेश त्रिपाठी (आई० आर० एस०)
भास्कर दूबे (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)
डॉ० योगेश मिश्र
(समूह सम्पादक, अपना भारत/न्यूज ट्रैक, लखनऊ)
डॉ० देवर्षि शर्मा (लेखक एवं समाजसेवी, कानपुर)

सलाहकार परिषद

अध्यक्ष
श्रीमती रेशमा एच सिंह,(नई दिल्ली)
विशिष्ट सदस्य
श्री कुणाल तिलक, (पुणे)
श्री अनीश गोखले, (बेंगलुरु)
श्री अंबरीष फडणवीस, (मुम्बई)
सदस्य
श्री अजय उपाध्याय
(वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली)
डॉ० संजय द्विवेदी
(निदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली)
श्री सुजीत कुमार पाण्डेय
(वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
डॉ० मुन्ना तिवारी
(बुन्देलखण्ड वि०वि० झांसी)
दयानंद पाण्डेय
(लेखक एवं पत्रकार)
डॉ पुनीत बिसारिया
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, बुंदेलखण्ड वि. वि., झांसी
डॉ० ममता त्रिपाठी (दिल्ली वि०वि०)
श्री सुनील जैन(एडवोकेट, इलाहाबाद)
डॉ. मिथिलेश तिवारी
(संगीतज्ञ, गोरखपुर)
श्री मितेश कुमार चंदू भाई पटेल
(श्रीहरि कंस्ट्रक्शन,अहमदाबाद, गुजरात)
श्री दीपक कुमार घनश्याम भाई गज्जर
(श्रीहरि कंस्ट्रक्शन,अहमदाबाद, गुजरात)
आचार्य सोमदत्त द्विवेदी
(वाराणसी)
श्री हेमंत मिश्र
(निदेशक, एबीसी शिक्षा समूह)
श्री अजय शाही
(निदेशक, आरपीएम शिक्षा समूह)
डॉ० गजेन्द्रनाथ मिश्र
(निदेशक, आर०सी० मेमोरियल शिक्षा समूह)
श्री अरुणकांत त्रिपाठी
(सम्पादक, कमलज्योति, लखनऊ)
डॉ० मनोज कुमार श्रीवास्तव
(चिकित्सक एवं लेखक, वाराणसी)
डॉ० वाई के मद्धेशिया
(वरिष्ठ चिकित्सक, कुशीनगर)
श्री मंकेश्वरनाथ पाण्डेय
(सचिव, नेशनल एजुकेशनल सोसाईटी, गोरखपुर)
श्री दीप्तभानु डे (वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
श्री रतिभान त्रिपाठी (वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)
श्री मारकण्डेयमणि त्रिपाठी
(अध्यक्ष, प्रेस क्लब, गोरखपुर)
श्री पुरुषोत्तम तिवारी
(वरिष्ठ पत्रकार, कोलकाता)
श्री अनुपम सहाय
(वरिष्ठ अधिकारी, पीएनबी)
डॉ० रविकांत तिवारी(अमेरिका)
डॉ० राम शर्मा(शिक्षाविद्, मेरठ)
दिवाकर शर्मा(वरिष्ठ पत्रकार, शिवपुरी)
आमोदकांत मिश्र (वरिष्ठ पत्रकार, कुशीनगर)

प्रधान सम्पादक
श्री हुनमानजी महाराज

सम्पादकीय संरक्षक
आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
(पूर्व अध्यक्ष, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)
समूह सम्पादक
प्रो० राकेश कुमार उपाध्याय
प्रबंध सम्पादक
बी के मिश्र
सम्पादक
संजय तिवारी
कार्यकारी सम्पादक
डॉ० अर्चना तिवारी
संपादक विचार
दुर्गेश उपाध्याय
सहायक सम्पादक (हिन्दी)
डॉ० अनिता अग्रवाल
सहायक सम्पादक (अंग्रेजी)
डॉ० राजीव तिवारी
समन्वय सम्पादक
विक्रमादित्य सिंह
सम्पादकीय सलाहकार
कैप्टन सुभाष ओझा
डॉ. हितेश व्यास
सह सम्पादक
डॉ० दिनेशमणि त्रिपाठी
कमलेश कमल
गोविन्द पाराशर
डॉ० अर्चना पाठ्या
विशेष सम्पादकीय परामर्श
आचार्य लालमणि तिवारी
(गीता प्रेस, गोरखपुर)
श्री रसेन्दु फोगला
(गीता वाटिका, गोरखपुर)
श्री अजीत दुबे
(सदस्य साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)
केन्द्र प्रभारी, अमेरिका
आचार्य रत्नदीप उपाध्याय
विधि सलाहकार
श्री अमिताभ चतुर्वेदी
(वरिष्ठ अधिवक्ता, नई दिल्ली)
लेखा परीक्षक
अरुण गुप्ता
लेआउट, ग्राफिक्स एवं डिजाइन
संजय मानव
सूचना तकनीक एवं प्रबंधन
उत्कर्ष तिवारी
क्रिएटिव
प्रकर्ष तिवारी
(shot by Inflict)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक संजय तिवारी द्वारा स्वास्तिक ग्रफिक्स, महागनगर, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एंव बी–64, आवास विकास कॉलोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर, उ०प्र० से प्रकाशित

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद का क्षेत्र गोरखपुर जिला न्यायालय के अधीन होगा।

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001
लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
दिल्ली कार्यालय : बी-38 डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
सम्पर्क - : + 91 94508 87186-87
USA Office : 17413 Blackhawk St| Granada Hills, CA 91344 USA
Cell: 1-818-815-9826

(भारत संस्कृति न्यास का प्रकल्प)
Mail us - editor.sanskritiparva@gmail.com
Website - www.bharatsanskritinyas.org
Follow us

H.H. Pujya Swami Chidanand Saraswatiji
President, Parmarth Niketan

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि संस्कृति पर्व का अगला अंक ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी पर केन्द्रित है। वह सही मायने में भारतीय मनीषा के अग्रणी विभूति हैं। उन्होंने तत्कालीन भारत की सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जिस प्रकार से लड़ाई लड़ कर विजय पाई और समाज को प्रदूषण मुक्त किया वह अद्भुत है। एक विद्वान, संत प्रवृत्ति और सामाजिक आंदोलन के प्रणेता के रूप में इतिहास हमेशा उन्हें याद करेगा। मुझे अत्यंत खुशी है कि संस्कृति पर्व ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी पर केंद्रित इस विशेषांक की योजना बनाई और प्रकाशित किया है। इस अंक की सामग्री जुटाने में जिस प्रकार की मेहनत लगी होगी , इसकी कल्पना की जा सकती है। इस अतिगंभीर अंक के लिए संस्कृति पर्व के संपादक श्री संजय तिवारी और उनकी संपादकीय परिषद बधाई की पात्र है।

ईश्वर और मानवता की सेवा में

स्वामी चिदानन्द

स्वामी चिदानंद सरस्वती
परमाध्यक्ष, परमार्थ निकेतन,
ऋषिकेश

Prmarth Niketan Ashram, PO Swargashram, Rishikesh (Himalayas), Uttarakhand-249304 India Phone: +91-135-2440088, +91-135-2440070 , Fax: +91-135-2440066 .
swamiji@ Parmarth.com, www.PujyaSwamiji.org, OPujyaSwamiji , Twitter/@ PujyaSwamiji
t@ Parmarth.org, Facebook/ParmarthNiketan, O@ ParmarthNiketan ,Youtube/ParmarthNiketan

भारत सदैव से सामाजिक क्रांति के नायकों और अध्येताओं का देश रहा है। यहां समय समय पर ऐसे महापुरुष जन्म लेते रहते हैं जो अपने समय की सामाजिक कुरीतियों से समाज को मुक्त करा कर नई दिशा देते हैं। ऐसे महापुरुषों की गिनती असंख्य है। ऐसे ही एक महापुरुष ने उन्नीसवीं शताब्दि में बंगाल में जन्म लिया जिन्हें हम ईश्वरचंद्र विद्यासागर के नाम से जानते हैं। उनके कार्यों ने उन्हें वह ऊँचाई दी है जो बहुत कम ही लोगो को प्राप्त होती है। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी सही मायने में भारतीय मनीषा के अग्रणी विभूति हैं। उन्होंने तत्कालीन भारत की सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जिस प्रकार से लड़ाई लड़ कर विजय पाई और समाज को प्रदूषण मुक्त किया वह अद्भुत है। एक विद्वान, संत प्रवृत्ति और सामाजिक आंदोलन के प्रणेता के रूप में इतिहास हमेशा उन्हें याद करेगा। मुझे अत्यंत खुशी है कि संस्कृति पर्व ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी पर केंद्रित इस विशेषांक की योजना बनाई और प्रकाशित किया है। इस अंक की सामग्री जुटाने में जिस प्रकार की मेहनत लगी होगी , इसकी कल्पना की जा सकती है। इस अतिगंभीर अंक के लिए संस्कृति पर्व की संपादकीय परिषद बधाई की पात्र है।

मुझे कहने में कोई संकोच नही कि यह अंक भारत की नई पीढ़ी को ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से ठीक से परिचित कराने में सफल होगा। यह अंक वास्तव में एक इतिहास स्थापित करने वाला है। इस विशेषांक को लेकर आप सभी की प्रतिक्रिया और टिप्पणियों की प्रतीक्षा रहेगी।

बी के मिश्रा

क्रांति पुरुष

संजय तिवारी

एक गरीब ब्राह्मण। एक निरीह विद्वान। एक सफल शिक्षक। एक सबल क्रांतिकारी। एक प्रखर वक्ता। एक शिखर संधान पुरुष। एक दार्शनिक। एक उद्यमी। एक चिंतक। एक योग्य पिता। संवेदनशील पुत्र। साहसिक अफसर। मां सरस्वती के वरदपुत्र। नाम था ईश्वर चंद्र बंदोपाध्याय। विद्यार्थी जीवन की अतिशय विद्वत्ता ने ईश्वर चंद्र को विद्यासागर की उपाधि से मंडित कर दिया। मुग़लकालीन बंगाल या यूं कहें कि मुग़लकालीन भारत मे दमन के चक्र में पिस रही स्त्री समाज को पहली बार प्राणमय बनाने की क्रांति इसी महामानव ने की। तत्कालीन सत्ता की धाह में जलने के लिए विवश नारियों को उनके सम्मान के साथ स्थापना देने वाले इस युगनायक के कार्यों का मूल्यांकन केवल कुछ शब्दों या पन्नो में कर पाना असंभव है। इसीलिए उन्हें एक ऐसे क्रांति पुरुष के रूप में देखने की विवशता हो जाती है जिसने अपने एक जीवन मे ही शिक्षा, संस्कृति, समाज, सभ्यता, दर्शन और शासन को अद्भुत शक्ति के साथ प्रभावित भी किया और प्रवाहित भी। ऐसे महामानव ईश्वर चंद्र विद्यासागर को केंद्रित कर संस्कृति पर्व का यह अंक प्रस्तुत करते बहुत ही संतोष का अनुभव हो रहा है।

आधुनिक बंगाल का मध्यकालीन रूप और उसके शासकों की स्थिति पर लिखना, पढ़ना इतिहास का कार्य है। हम तो उस भूमि के एक ऐसे महामानव की चर्चा कर रहे हैं जिसने बंगाल को बदला तो भारत मे बदलाव दिखने लगा। खास तौर पर मध्यकालीन मुगल दुष्चक्र से स्त्रियों को मुक्त कराने का जो आंदोलन उन्होंने चलाया उसका परिणाम समग्र भारत मे समान रूप से दिखता है। नारी मुक्ति के अलंबरदार चाहे जितने दिखें और बनें लेकिन ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसा साहस किसी मे नही। उस कालखंड में उन्होंने अपने पुत्र का विवाह एक विधवा नारी से कराया। जो कहा , उसे कर के दिखाया। उनका कहना था की कोई भी व्यक्ति अच्छे कपड़े पहनने, अच्छे मकान में रहने तथा अच्छा खाने से ही बड़ा नहीं होता बल्कि अच्छे काम करने से बड़ा होता है। अपनी सहनशीलता, सादगी तथा देशभक्ति के लिए विशिष्ट योगदान करने वाले ईश्वरचंद्र ने स्त्री शिक्षा तथा विधवा विवाह प्रथा को सुधारने का काम किया। बहुत-सी कठिनाइयों के बाद अंत में विधवा विवाह को कानूनी स्वीकृति प्राप्त हो गई।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर के मन में प्राणिमात्र के प्रति अथाह करुणा को देखकर उन्हें लोग करुणा का सागर कहकर बुलाते थे। असहाय प्राणियों के प्रति उनकी करुणा व कर्तव्यपरायणता देखते ही बनती थी। इसी संदर्भ में एक घटना का वर्णन मिलता है। उन दिनों वे कोलकाता के एक समीपवर्ती कस्बे में प्राध्यापक के पद पर नियुक्त थे। वातावरण में भयानक ठंड बढ़ गई। एक दिन शाम से ही बूंदाबांदी हो रही थी। रात होते-होते मूसलाधार बारिश से वातावरण में भयानक ठंड बढ़ गई। ईश्वरचंद्र विद्यासागर अपने स्वाध्याय में व्यस्त थे, तभी किसी ने उनके दरवाजे पर दस्तक दी। उन्होंने एक अजनबी को दरवाजे पर खड़ा देखा। अपनेपन से उस अजनबी को

घर के भीतर बुलाया। उसे अपने नए कपड़े देकर भीगे वस्त्र बदलने को कहा। वह अतिथि उनके इस प्रेमभरे व्यवहार को देखकर भर्राए गले से बोला- 'मैं इस कस्बे में नया हूं, यहां मैं अपने एक मित्र से मिलने के लिए आया था। जब मैं उसके घर के बाहर पहुंचा तो पूछने पर पता चला कि वह इस कस्बे से बाहर गया हुआ है। ये सुनकर निरुपाय होकर मैंने कई लोगों से रात्रिभर के लिए शरण मांगी। लेकिन सभी ने मुझे संदेह की दृष्टि से देखकर दुत्कार दिया। आप पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने ...।'

ईश्वरचंद्र ने कहा- 'अरे भाई, तुम तो मेरे अतिथि हो। हमारे शास्त्रों में भी तो कहा गया है कि अतिथि देवो भव। मैंने तो सिर्फ अपना कर्तव्य निभाया है।' कहकर उन्होंने अतिथि के सोने के लिए बिस्तर व भोजन की व्यवस्था की। फिर अपने हाथ से अंगीठी जलाकर उसके कमरे में रख दी। सुबह जब वह अतिथि पंडित ईश्वरचंद्र से विदा लेने गया तो वे हंसकर बोले - 'कहिए अतिथि देवता! रात को ठीक ढंग से नींद तो आई?'

अतिथि उनके सद्व्यवहार को मन ही मन नमन करते हुए बोला- 'असली देवता तो आप हैं, जिसने मुझे विपदग्रस्त देखकर मदद की।' पूरी जिंदगी उस व्यक्ति के मन में विद्यासागर की करुणामय छवि बसी रही।

संस्कृत भाषा और दर्शन में ईश्वर चंद्र बन्दोपाध्याय को विशेष योग्यता हासिल थी जिसके चलते विद्यार्थी जीवन में ही उन्हें संस्कृत कॉलेज ने 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की। भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले महान दार्शनिक, समाज सुधारक और लेखक ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने आगे चलकर स्थानीय भाषा और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूलों की एक श्रृंखला के साथ 1872 में नार्थ कोलकाता में मेट्रोपॉलिटन कॉलेज की स्थापना की जिसका नाम 1891 में उनके निधन के बाद 1917 में बदलकर विद्यासागर कॉलेज कर दिया गया।

वास्तव में भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि युग पुरुष के रूप में ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी स्थापित हो चुके हैं। वे केवल बंगाल के लिए ही नही बल्कि दुनिया मे भारतीयता के सभी मूल्यों की स्थापना करते और भारतीय लोकमंगल के नायक के रूप में दिखते हैं। उनका चिंतन, उनकी दृष्टि, उनके कार्य, उनका लेखन एक ऐसे क्रांतिकारी के रूप में है जो भारत को अपने समय मे मूल भारतीयता के मूल्यों में दर्शाने में जुटा रहा। शिक्षा, स्त्री और समाज उनके आराध्य के रूप में रहे। ऐसे महामानव के बारे में जो भी लिखा जाएगा वह बहुत कम होगा। यह अत्यंत सुखद है कि संस्कृति पर्व के फलक पर ऐसे युगपुरुष की स्मृति स्वरूप एक अंक सहेजने की प्रेरणा प्राप्त हुई है। यह अंक उसी लोक के आंगन में प्रस्तुत है जिस लोक के मंगल के लिए ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी जीवन पर्यंत प्रयत्न करते रहे।

"वास्तव में भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि युग पुरुष के रूप में ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी स्थापित हो चुके हैं। वे केवल बंगाल के लिए ही नही बल्कि दुनिया मे भारतीयता के सभी मूल्यों की स्थापना करते और भारतीय लोकमंगल के नायक के रूप में दिखते हैं। उनका चिंतन, उनकी दृष्टि, उनके कार्य, उनका लेखन एक ऐसे क्रांतिकारी के रूप में है जो भारत को अपने समय मे मूल भारतीयता के मूल्यों में दर्शाने में जुटा रहा। शिक्षा, स्त्री और समाज उनके आराध्य के रूप में रहे। ऐसे महामानव के बारे में जो भी लिखा जाएगा वह बहुत कम होगा।"

लोकोत्तर महामानव ईश्वर चंद्र विद्यासागर की संघर्ष-गाथा

प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय

ईश्वर चंद्र वंद्योपाध्याय अर्थात ईश्वर चंद्र विद्यासागर के बगैर भारत में सामाजिक पुनर्जागरण की बात करना सही नहीं हो सकता। वस्तुतः भारत में जागरण और पुनर्जागरण तो हर शताब्दी में अपने अपने तरीके से चलता ही रहा था किन्तु अंग्रेजी राज में जो पुनर्जागरण पैदा हुआ जिसने कालांतर में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रत्येक भारतीय में आशा-विश्वास का नवीन भाव उत्पन्न किया, उसका प्रथम महानायक अगर सचमुच कोई था तो वह ईश्वर चंद्र ही थे।

शताब्दी पीठ आचार्य, भारत अध्ययन केंद्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

ब्राह्मण क्रांति

भारत में ब्रिटिश दासता काल में सामाजिक सुधारों की जो हवा चली उसमें बंगभूमि ने सर्वाधिक क्रांतिकारी श्रीगणेश किया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर बंगाल के वंद्योपाध्याय कुल में पैदा हुए ऐसे ही महान समाज सुधारक तपस्वी भारतविद् ब्राह्मण थे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन न केवल समाज सुधार कार्य में अर्पित किया बल्कि अंग्रेजीराज के समय सबसे पहले भारतवासियों को विशुद्ध भारतीय भाव धारा के आधार पर भारत में प्रचलित सामाजिक दोषों को अपने जीवन से उखाड़ फेंकने की मौलिक प्रेरणा दी।

अंग्रेजीराज के पुनर्जागरण में उनके पहले यह कार्य एक अन्य ब्राह्मण राम मोहन(बंद्योपाध्याय) रॉय ने प्रारंभ किया था। राजा राम मोहन रॉय भी वंद्योपाध्याय कुल के ही ब्राह्मण थे किन्तु उनमें और ईश्वर चंद्र की पृष्ठभूमि में पर्याप्त अंतर था।ईश्वर चंद्र ने किशोरावस्था में कदम ही रखा था कि राजा राम मोहन रॉय का 27 सितंबर 1833 को स्वर्गवास हो गया। ईश्वर 1820 में पैदा हुए। दोनों की उम्र में पचास साल का फर्क था। ईश्वर चंद्र उनसे उम्र में बहुत छोटे और अति निर्धन थे, जबकि राजा राम ज्येष्ठ होने के साथ-साथ धन-धान्य से सम्पन्न। एक मौलिक अंतर और था। अंग्रेजी राज में समाज सुधारों का जो बीड़ा राजा राम मोहन रॉय ने अंग्रेजी सभ्यता की कथित श्रेष्ठता के प्रभाव में उठाया था, यहां तक कि ईसाई मत के प्रभाव में आकर वह हिन्दू धर्म के कुछ मौलिक सिद्धांतों और उससे जुड़े कर्मकांड के मुखर आलोचक बन गए, ब्रह्म समाज का संगठन कर उन्होंने एक प्रकार से नए पंथ की भी बुनियाद रखी किन्तु इसके विपरीत उस समय केसुधार आंदोलन को ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने भारत की मौलिक भावभूमि से जोड़ने और भारतीय ज्ञान परंपरा की ओर मोड़ने की अभिनव पहल की और इसमें जबर्दस्त सफलता भी प्राप्त की। उनकी परंपरा में ही आगे चलकर स्वामी विवेकानन्द, तिलक, गांधी, महामना मालवीय समेत कितने ही महापुरुषों ने पुनर्जागरण की दिशा को अंग्रेजीराज और अंग्रेजी सभ्यता से स्वतंत्रता की ओर मोड़ दिया। यह कार्य इसीलिए सफल हो सका क्योंकि अंग्रेजों की साजिशों से धूलधूसरित अंधेरे मार्ग पर नई पीढ़ी को सही बात बताने के लिए ईश्वर साक्षात रोशनी की मशाल बन गए।

यही कारण है कि उनकी प्रतिभा से प्रभावित अंग्रेज विद्वान और पादरी उनसे बाद में नाकभौं सिकोड़ने लगे। ईसाई मत से दूर रहने के कारण उनकी आलोचना करने लगे। दरअसल ईश्वर चंद्र ने सामाजिक सुधार की अपनी पीड़ा और प्रेरणा के पीछे अंग्रेजीराज की उत्प्रेरक भूमिका को सिरे से नकारकर उस मानवीय करुण-भावधारा को तीव्रता प्रदान की जिसने बुद्ध-शंकर-नानक-कबीर-तुलसी-रविदास से लेकर मध्यकाल तक हर शताब्दी में संत स्वरुप में भारतीय जन-मन को गहरे प्रभावित, आप्लावित और संचालित किया। यही कारण है कि वह उन्नीसवीं सदी के सर्वोत्तम महापुरुषों में गिने गए, लोकोत्तर महामानव की यह संज्ञा उन्हें उन माइकल मधुसूदन दत्त ने दी जिन्होंने ईसाई प्रभाव में आकर हिन्दू धर्म का परित्याग कर दिया। उन्हीं माइकल मधुसूदन दत्त के जीवन के आखिरी समय में जब कष्ट और दुख के बादल मंडराए तो उन्होंने सहायता के लिए ईश्वर चंद्र को आवाज दी। ईसाई मत के पादरी या अफसरों ने मतांतरण के बाद उनका काम समाप्त होते ही उनसे दूरी बना ली। इस सत्य को पहचान कर उन्होंने ईसाई पादरियों को आवाज देने की बजाए सनातन हिन्दू जीवन की भाव भूमि में निरंतर रचे-बसे और जागृत ईश्वर चंद्र विद्यासागर का ही दामन थामा। ईश्वर चंद्र विद्यासागर माइकल मधुसूदन के अन्तिम दिनों में फरिश्ते की तरह खड़े हुए।

ईश्वर चंद्र वंद्योपाध्याय अर्थात ईश्वर चंद्र विद्यासागर के बगैर भारत में सामाजिक पुनर्जागरण की बात करना सही नहीं हो सकता। वस्तुतः भारत में जागरण और पुनर्जागरण तो हर शताब्दी में अपने अपने तरीके से चलता

भारत में जागरण और पुनर्जागरण तो हर शताब्दी में अपने अपने तरीके से चलता ही रहा था किन्तु अंग्रेजी राज में जो पुनर्जागरण पैदा हुआ जिसने कालांतर में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रत्येक भारतीय में आशा-विश्वास का नवीन भाव उत्पन्न किया, उसका प्रथम महानायक अगर सचमुच कोई था तो वह ईश्वर चंद्र ही थे। 19वीं सदी के चौथे और पांचवे दशक(1840-50) में भारत में सरकारी मदद के बगैर निजी स्कूलों की श्रृंखला ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने प्रारंभ की थी जिसमें दाखिले में सरकार नियंत्रित स्कूलों की तरह भेदभाव नहीं था। उनके दरवाजे सबके लिए खुले थे, क्या ब्राह्मण और क्या अनुसूचित। सभी जातियों के प्रतिभावान बच्चों के लिए उन्होंने ही सबसे पहले अंग्रेजी राज मेंस्कूली शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का जन्म

ईश्वर चंद्र बंगाल के वीरसिंह ग्राम के जिस ब्राह्मण वंद्योपाध्याय कुल में पैदा हुए, उस परिवार की गरीबी को देखकर कथित वंचित और दलित वर्ग के लोग भी उन पर दया करते थे। टूटी-फूटी घास-फूस की मंड़ई वंचित वर्ग की बस्ती के साथ ही थी।पूजा-पाठ, दान-दक्षिणा के जरिए ही ईश्वर चंद्र के दादा रामजय वंद्योपाध्याय गृहस्थी की गाड़ी खींचते थे। पिता ठाकुरदास के पास रोजी-रोटी का कोई स्थायी जरिया ही नहीं था सिवाय पंडिताई करने के। उस विकट अंग्रेजीराज में जबकि चारों ओर केवल और केवल सरकार के स्तर पर विशेष मत और रिलीजन को बढ़ावा मिल रहा था, परंपरा की बात करने वाले केवल हीन दृष्टि से देखे जा रहे थे, योजनापूर्वक दरिद्र बना दिए गए थे। इन परिस्थितियों में 26 सितंबर 1820 को ईश्वर चंद्र वंद्योपाध्याय पैदा हुए तो दादा जयराम ने ये सूचना बेटे ठाकुरदास को इस रूप में दी कि एंड़ बाछुर पैदा हुआ है, अर्थात एक बछवा पैदा हुआ है। पिता ठाकुर दास कहीं दूर से आए थे, उन्हें लगा कि पहले से गाभिन गाय ने बछवा जना है लेकिन फिर दादा जयराम ने बात को सही कर दिया कि ये बछवा इतिहास रचेगा। उसकी जन्मकुंडली कह रही है कि जो ठान लेगा वह करके ही मानेगा। किसी के आगे ये झुकने वाला नहीं है। इसकी ईमानदारी, सादगी, न्यायप्रियता की चर्चा दिग-दिगंत में होगी। गरीबी और आर्थिक विपन्नता इसका रास्ता नहीं रोक पाएगी। युगों तक इसका नाम मानव जाति याद रखेगी।

ही रहा था किन्तु अंग्रेजी राज में जो पुनर्जागरण पैदा हुआ जिसने कालांतर में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रत्येक भारतीय में आशा-विश्वास का नवीन भाव उत्पन्न किया, उसका प्रथम महानायक अगर सचमुच कोई था तो वह ईश्वर चंद्र ही थे। 19वीं सदी के चौथे और पांचवे दशक(1840-50) में भारत में सरकारी मदद के बगैर निजी स्कूलों की श्रृंखला ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने प्रारंभ की थी जिसमें दाखिले में सरकार नियंत्रित स्कूलों की तरह भेदभाव नहीं था। उनके दरवाजे सबके लिए खुले थे, क्या ब्राह्मण और क्या अनुसूचित। सभी जातियों के प्रतिभावान बच्चों के लिए उन्होंने ही सबसे पहले अंग्रेजी राज मेंस्कूली शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

भारत में ईसाई रिलीजन और यूरोपीय सभ्यता की श्रेष्ठता के प्रचार-प्रसार की कूटनीति-रणनीति से भरे उस विभाजनवादी अंग्रेजीराज में जब कई समाज सुधारक महापुरुष अंग्रेज अफसरों की राय से रणनीति और ईसाई पादरियों की राय से आंदोलन की रीति तय करते थे, सुधार के नाम पर केवल हिन्दू धर्म के विरुद्ध बगैर किसी समस्या की जड़ को जाने-समझे उलजुलूल जहर उगलते थे, तब ईश्वर चंद्र विद्यासागर हर सुधारात्मक कदम के लिए सनातन परंपरा के मूल ग्रंथों और संतों की ओर देखते थे और उसमें से समाधान ढूंढ निकालते थे।

उन्होंने परंपरागत और आधुनिक शिक्षा, स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह बहुविवाह निषेध, बाल विवाह निषेध, जनजाति कल्याण, पिछड़े और वंचित हिन्दुओं समेत सभी वर्ग-वर्ण के लोगों के जीवन और चिंतन में क्रांतिकारी बदलाव के लिए मौलिक प्रयत्न किए और उन सभी मुद्दों पर सामाजिक चिन्तन-मंथन को सकारात्मक दिशा प्रदान करने का साहसिक कार्य सम्पन्न कर दिखाया जिनके बारे में उनके योगदान पर आज के कथित समाज-चिन्तक केवल इसलिए मौन साध जाते हैं क्योंकि ईश्वर चंद्र विद्यासागर ब्राह्मण जाति में पैदा हुए थे।

साधारणतया यह माना जाता है कि भारत में कथित वंचित-दलित और पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों के लिए आधुनिक शिक्षा और स्कूल प्रवेश का रास्ता डॉ. अम्बेडकर और उनके जैसे अन्य सुधारकों के प्रयासों के बाद अंग्रेज सरकार ने तैयार किया। निःसंदेह डॉ. अम्बेडकर समेत अन्य सुधारकों ने अपने प्रांत की स्थिति-परिस्थिति के अनुसार सामाजिक सुधार आंदोलन को अपनी रीति से गति प्रदान की किन्तु वास्तविकता यही है कि ईश्वर चंद्र विद्यासागर प्रथम थे जिन्होंने सभी हिन्दू जातियों को एक स्कूल में एक साथ पढ़ने और पढ़ाने के कार्य का श्रीगणेश अंग्रेज अफसरों की इस राय के विरुद्ध जाकर किया कि इससे समाज में तनाव व्याप्त हो जाएगा। उन्हें स्पष्ट था कि अंग्रेज विभाजन की रणनीति पर चल रहे हैं, इसीलिए सरकारी स्कूलों में भेदभाव को योजनापूर्वक अंग्रेजों ने जगह दी है।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने इस तथ्य को भलीभांति समझ लिया कि अंग्रेजी सरकार और अंग्रेज विचारक भारत में सामाजिक सुधारों के नाम परअच्छी नीयत से काम नहीं कर रहे हैं। इसका उल्लेख उनके पत्रों में मिलता है जो समय समय पर उन्होंने अपने सहयोगियों को प्रेषित किया। एक तरफ तो अंग्रेज नुमाइंदे ब्रिटिश सरकार द्वारा खोले गए स्कूलों में वंचित-दलित वर्ग के बच्चों को प्रवेश देने के सवाल पर झिझकते थे तो दूसरी ओर उनका पादरी वर्ग इस बात के लिए उच्च जाति के हिन्दुओं को जिम्मेदार ठहरा रहा था ताकि जातियों में अनावश्यक

विभाजन की खाई बढ़ती चली जाए। ईश्वर चंद्रविद्यासागर ने इसके विपरीत जाते हुए न केवल सरकारी स्कूलों में वंचित-दलित सभी वर्ग के बच्चों के दाखिले का अभियान अपने हाथ में लिया और दाखिला शुरू भी कराया बल्कि सरकार से इतर जाकर निजी और सामाजिक स्तर पर विद्यालयों की ऐसी श्रृंखला प्रारंभ कर यह भी सिद्ध कर दिया कि सभी जाति-वर्ग के बच्चों की साथ-साथ शिक्षा के सवाल पर समाज के बहुमत की ओर से कभी रूकावट पैदा नहीं की गई। यह कुछ मुट्ठीभर लोगों की अपनी मंशा और अंग्रेज प्रशासन की मिलीभगत का नतीजा था कि सरकारी स्कूलों में भेदभाव को स्वयं अंग्रेज सरकार ही बढ़ावा दे रही थी और दोष कथित उच्च जातियों के हिन्दुओं पर मढ़ा जा रहा था। उन्होंने सामाजिक सुधार के अनेक प्रश्नों पर 25000 से ज्यादा बंगाली परिवारों के हस्ताक्षर से युक्त पत्र कोलकाता में अंग्रेज वायसरॉय को सौंपा जिसमें 15000 से अधिक परिवार ब्राह्मण वर्ण से संबंधित थे। इस प्रकार उन्होंने अंग्रेजों की ओर से किए जा रहे इस दुष्प्रचार की हवा निकाल दी कि उच्च जातियों के हिन्दू सामाजिक सुधार चाहते ही नहीं है।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने सामाजिक बुराइयों की परत दर परत उधेड़ने का भी कार्य किया। मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों, मुस्लिम आततायियों के डर से बच्चियों के विवाह बचपन में ही कर दिए जाने समेत सभी सामाजिक मसलों का उन्होंने गहन अध्ययन किया और शास्त्रार्थ के लिए हर उस विद्वान को ललकारा जो इसे धर्मसम्मत बताता था। ईश्वर चंद्र के विद्वत्तापूर्ण तर्कों के सामने किसी भी सामाजिक बुराई को धर्मसम्मत बताने वाले मुट्ठीभर लोगों की एक न चली। उन्होंने बहुसंख्यक समाज के मन और भाव को पहचानकर, उसे साथ लेकर सामाजिक बुराइयों के अन्त के लिए अंग्रेजीराज में कानून को हथियार बनाया, और सामाजिक बुराई को प्रश्रय देने वाले व्यक्ति के लिए दण्ड अनिवार्य कराया। इस कार्य में उन्होंने कितनी ही कठिनाइयां झेलीं लेकिन अपने सत्य पथ से उन्होंने हटना या झुकना कभी स्वीकार नहीं किया। विधवा पुनर्विवाह को जब उन्होंने कानूनी मान्यता दिलवाई तो अपने बेटे का विवाह एक किशोर वय की विधवा बेटी से कर समाज में क्रियात्मक आदर्श भी रखा। अपने अनेक ब्राह्मण मित्रों और समाज के अन्य बंधुओं को उन्होंने अपनी विधवा हो चुकीं बेटियों के पुनर्विवाह के लिए प्रयासपूर्वक राजी कर बंगाल की मानसिक चिन्तन की हवा ही बदल दी।

वस्तुतः ईश्वर चंद्र विद्यासागर का स्वयं का जीवन उन अनेक मिथकों को ध्वस्त करने की दिशा में मील का पत्थर है जिन मिथकों को अंग्रेजों ने और बाद में उनके बौद्धिकों के द्वारा पोषित-समर्थित सामाजिक सुधार के वाम-पक्षकारों ने योजनापूर्वक गढ़ा और प्रत्येक सामाजिक बुराई के लिए सीधे-साधे भोले हिन्दुओं के धर्म पर ही आरोप मढ़ दिया। इसका मकसद था कि किसी प्रकार से पढ़े-लिखे हिन्दू अपने धर्म से विमुख हों और अंग्रेजी भाषा-वेषभूषा से सम्पन्न ईसाई रिलीजन के प्रसार के लिए उचित वातावरण मिल सके। किन्तु ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने जो जनजागृति पैदा की उसने अंग्रेजों की सारी रणनीति को ही धराशायी कर दिया।उदाहरण के लिए, उस कालखंड में अंग्रेज अफसरों, पादरियों और कथित समाज सुधारकों का सारा जोर सदैव ब्राह्मणों को कट्टरपंथी और सामाजिक सुधार विरोधी सिद्ध करने में लगा रहता था, सामाजिक विभाजन की सारी चालें अंग्रेज और उनके समर्थक रचने में माहिर हो चले थे किन्तु उनके सारे प्रयासों को अकेले ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने निजी जीवन और प्रयत्न पूर्वक किए गए आचरण से ही मात दे दी। सभी मिथ्या आरोपों को एक झटके में खारिज करने के लिए अकेला उनका जीवन कार्य ही उस शताब्दी में पर्याप्त दिखने लगा।

भारत में जागरण और पुनर्जागरण तो हर शताब्दी में अपने अपने तरीके से चलता ही रहा था किन्तु अंग्रेजी राज में जो पुनर्जागरण पैदा हुआ जिसने कालांतर में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रत्येक भारतीय में आशा-विश्वास का नवीन भाव उत्पन्न किया, उसका प्रथम महानायक अगर सचमुच कोई था तो वह ईश्वर चंद्र ही थे। 19वीं सदी के चौथे और पांचवे दशक(1840-50) में भारत में सरकारी मदद के बगैर निजी स्कूलों की श्रृंखला ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने प्रारंभ की थी जिसमें दाखिले में सरकार नियंत्रित स्कूलों की तरह भेदभाव नहीं था। उनके दरवाजे सबके लिए खुले थे, क्या ब्राह्मण और क्या अनुसूचित। सभी जातियों के प्रतिभावान बच्चों के लिए उन्होंने ही सबसे पहले अंग्रेजी राज मेंस्कूली शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया।

लोकोत्तर महामानव ईश्वर चंद्र विद्यासागर की संघर्ष-गाथा

मुगल और ब्रटिश बंदरबांट में लुट रहे भारत की यही करुण कहानी उस समय की है जबकि हुनरमंदों, कौशल-कारीगरों और शूद्रों के पास व्यापक पैमाने पर परंपरागत काम नहीं बचा क्योंकि उन्हें कार्य पर जुटाए रखने वाले वैश्यों के धन पर विदेशी नजरें गड़ गई थीं, राजनीति में स्थापित और सक्रिय क्षत्रियों की राजनीति तत्कालीन सत्ताधीशों के खेमों में बंट गई या फिर खेती-किसानी और दूसरे काम-धंधों की चाकरी में बदल गई थी, और ब्राह्मणों का तो कोई पुरसा हाल नहीं बचा था। भिक्षा बीते दिनों की बात हो चली, लिहाजा कैसे पेट की आग बुझे, कहां से कुछ मिले, बस सारा ध्यान इसी जजमानी पर। परिणाम स्वरूप, परंपरा से चली आ रही सरस्वती की साधना थमने लगी।

वीरसिंह ग्राम में बालक ईश्वर चंद्र का बचपन नटखट कारनामों के साथ व्यतीत हुआ। उनके पास में बसे मथुरा मोहन मंडल के बच्चों के साथ नटखटपने में उनकी खूब निभती। धान के खेतों में घूमना, मैदान और बाग-बगीचों में खेलना, कच्चे-पके सभी प्रकार के फल तोड़ना और अपने साथियों में बांट देना उनकी प्रिय शगल था। ग्राम टोले में लोगों के बाहर सूखते कपड़ों और दरवाजों पर गंदगी बिखेरकर जैसे वह लोगों के धैर्य की परीक्षा लेते। इसी प्रक्रिया में उनके भीतर ग्राम के परिवारों-बड़े-बुजुर्गों की डांट से अनुशासन भी निर्मित होता गया। कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनकी मित्रमंडली में सभी जाति-वर्ण के बच्चे थे। जिन्हें कथित अछूत कहा जाता है, ऐसे परिवारों के बच्चों के साथ उनका खाना-पीना, उठना-बैठना सहज था। गांव पर ही उनका यज्ञोपवीत सम्पन्न हुआ। दादा जयराम ने अक्षर ज्ञान कराया।

संभवतः यह उस ग्राम का संस्कार था जहां क्या ब्राह्मण और क्या शूद्र सभी परिवार एक साथ सैकड़ों वर्षों से अपनी एक जैसी कहीं बड़ी तो कहीं छोटी किन्तु कलात्मक झोपड़ी, अपने मिट्टी-खपड़ैल के घरों में गाय-गोरु आदि पालतू जीवों के साथ साथ जीते-रहते आए थे। जीवन-मरण, सुख-दुख एक समान। एक जैसी जीवन शैली, एक समान सादे या रंगे वस्त्र, धोती-कुर्ता-अंगोछा, एक जैसा ही खाना-पीना, माछ-भात जैसा ही कुछ। गांव ऐसा कि जहां जरुरतें बेहद कम और बावजूद इसके महिलाओं समेत हर शख्स हुनरमंद, कामगार।

मुगल और ब्रटिश बंदरबांट में लुट रहे भारत की यही करुण कहानी उस समय की है जबकि हुनरमंदों, कौशल-कारीगरों और शूद्रों के पास व्यापक पैमाने पर परंपरागत काम नहीं बचा क्योंकि उन्हें कार्य पर जुटाए रखने वाले वैश्यों के धन पर विदेशी नजरें गड़ गई थीं, राजनीति में स्थापित और सक्रिय क्षत्रियों की राजनीति तत्कालीन सत्ताधीशों के खेमों में बंट गई या फिर खेती-किसानी और दूसरे काम-धंधों की चाकरी में बदल गई थी, और ब्राह्मणों का तो कोई पुरसा हाल नहीं बचा था। भिक्षा बीते दिनों की बात हो चली, लिहाजा कैसे पेट की आग बुझे, कहां से कुछ मिले, बस सारा ध्यान इसी जजमानी पर। परिणाम स्वरूप, परंपरा से चली आ रही सरस्वती की साधना थमने लगी। और दूसरी ओर लक्ष्मी धीरे धीरे सिमटकर चंद इलाकों, शहरों, व्यापारियों और मुगल-अंग्रेज ओहदेदारों की तिजोरियों में कैद होने लगी। भारत का धन-धान्य-कच्चा माल और प्रतिभाओं का प्रयोग सात समंदर पार यूरोप को चमकाने में इस्तेमाल होने लगा।

निपट दरिद्रता की चादर अंग्रेजी राज के साथ ही भारत में बढ़ने लगी तो धूर्त अंग्रेज दीन-दरिद्रों की उठती पुकार को सियासत कर बांटने लगे। फलां जाति ने तुमको डुबो दिया, फला साहूकर ने तुम्हें लूट लिया, फलां ने तुम्हें अधिकारों से वंचित कर दिया। मानसिकता बदलने का एक अजीब खेल शुरु हुआ जो अंग्रेज अफसरों के मनों, दिलो-दिमाग और मेज-कागज-भयानक विभाजनकारी रणनीतिक दस्तावेजों के जरिए बांटो-राज करो की नीति के अन्तर्गत आकार पाता हुआ दिन दूना रात चौगुना ग्राम-नगरों के भविष्य की सियासत का स्रोत-रूप लेने लगा। बंगाल-ओडिशा, यूपी-बिहार सब जगह हालात बदतर हुए।

परंपरा से जुड़ी हर चीज जिसने भारत और उसके जन को थाम रखा था, सब देखते ही देखते ढहने लगा क्योंकि देश का अपना स्वराज और सुराज का स्व-

सिंहासन ही ढह चुका था। केवल मां के आंचल का दूध, गौमाता समेत अन्य पालतू जीव-जन्तुओं का भरोसा और मिट्टी-तालाब से उपजता अनाज-फल-माछ ही मनुष्य के पेट भरने का साधन थे जो उस वक्त के गांव में सहज उपलब्ध थे। किन्तु यहां के भरोसे चलने वाला व्यवसाय और इससे पैदा होने वाले पैसे पर धीरे धीरे ग्राम और आमजन का अधिकार कम से कमतर होता चला गया। वीरसिंह ग्राम की तो यही हालत थी, शेष ग्रामों का भी पुरसा हाल नहीं बचा। संस्कृत शिक्षा के स्कूल ग्रामों में किसी तरह बचे रहे किन्तु कला और हुनर शिक्षा के परंपरागत स्कूलों का तो बाजा ही बज गया। अधिकतर शूद्र जातियां जो कला-हुनर की परंपरागत कौशल शिक्षा पर आधारित थीं, उनके बच्चों की शिक्षा की चिन्ता उनके पिता के हुनर-ज्ञान के सिवाय उन्हें पारंगत करने वाला भी तब कोई रास्ता भी बचना मुश्किल होने लगा। नमक, तेल, चमड़े का काम, कागज, लोहा, जंगली लकड़ियों के काम, उससे जुड़े व्यवसाय सब पर अंग्रेजों की नजर लग गई। व्यवस्था चरमरा गई, देश त्रस्त हो उठा। सामाजिक बुराइयां घर करने लगीं, गुलामी से लाचार दिमाग समझने में नाकाम हो चला कि इस भारत दुर्दशा का असल जिम्मेदार कौन? दूसरी ओर अंग्रेज सरकार और उनके कारिंद थे जो यही प्रचार कर रहे थे कि सलीब और अंग्रेज सभ्यता की शरण में आए बगैर भारत की मुक्ति और उत्थान ही संभव नहीं।

इन्हीं हालात में वीरसिंह ग्राम में ईश्वर का जन्म् हुआ था। ईश्वर पांच साल के हुए तो उनके दादा ने उन्हें पढ़ने के लिए गांव के ही परंपरागत संस्कृत-गणित शिक्षक कालीकांत चट्टोपाध्याय के टोल में भेज दिया। गांव में स्थापित ये टोल यानी परंपरागत स्कूल नया था और कालीकांत बच्चों की पढ़ाई पर बहुत मेहनत करते थे। कालीकांत ने ईश्वर की प्रतिभा को पहचान लिया। तीन वर्ष में ही बालक ईश्वर ने प्राथमिक स्तर का संपूर्ण संस्कृत और बंगला भाषा समेत गणित आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। कालीकांत ने ईश्वर के दादा को संदेश दे दिया कि-अल्प समय में ही बालक ईश्वर ने प्राथमिक स्तर से भी ऊंचा ज्ञान प्राप्त कर लिया। अब इसके कौतुहल और उच्च प्राथमिक शिक्षा की जिज्ञासा शांत करने मेरे वश में नहीं। अगर यह कोलकाता जाकर किसी अच्छे स्कूल में पढ़े तो शीघ्र ही बहुत बड़ा विद्वान बन सकेगा। इसका रास्ता भी कालीकांत ने तैयार किया। उन्होंने अपने परिचित मधुसूदन वाचस्पति को बालक की प्रतिभा के विषय में सूचित किया। मधुसूदन वाचस्पति कोलकाता में ब्रिटिश सरकार का द्वारा प्रेसीडेंसी कॉलेज के अन्तर्गत संस्कृत कॉलेज की स्थापना से जुड़े थे। उन्होंने बालक की परीक्षा लेने का निर्णय लिया।

ईश्वर अपने पिता ठाकुरदास, प्राथमिक गुरु कालीकांत और एक सहायक के साथ 8 साल की उम्र में पैदल ही अपने ग्राम वीरसिंह से कोलकाता के लिए रवाना हुए। वीरसिंह ग्राम उन दिनों हुगली जनपद का हिस्सा था जो बाद में मिदनापुर से जोड़ दिया गया। वीरसिंह से कोलकाता की दूरी करीब सवा सौ किलोमीटर। अनेक नदी नाले, बीहड़-जंगल से गुजरता जो मुख्य मार्ग था, उस पर भी आवागमन के साधन तब नहीं थे। पिता ठाकुरदास ने तय किया कि रास्ते के ग्रामों में रिश्तेदारों के घर रुकते-रुकाते तीन दिन में कोलकाता पहुंच जाएंगे। और इसी पहली कोलकाता यात्रा में फिर से ईश्वर ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। ईश्वर ने रास्ते के मील पत्थरों पर अंकित अंग्रेजी अक्षरों और अंकों के बारे में अपने गुरु कालीकांत से जानकारी ली। और जब वो कोलकाता में अपने बाबा के पुराने परिचित भगवत चरण सिंह के पुत्र जगदुर्लभ सिंह के घर पहुंचे तो हर कोई यह देखकर हैरान था कि महज तीन दिनों की यात्रा में मील के पत्थर पढ़-पढ़कर बालक ईश्वर ने अंग्रेजी वर्णमाला और अंग्रेजी नंबर को कंठस्थ कर लिया। जगदुर्लभ सिंह को भरोसा नहीं हुआ तो उन्होंने परीक्षा लेने के लिए अपने व्यवसाय की रसीद बुक बालक ईश्वर को थमाई और उस पर अंग्रेजी क्रमांक सजाने को कहा। ईश्वर ने पलक झपकते ही नंबर सजाकर रसीद बुक जगदुर्लभ सिंह को खिसका दी। जगदुर्लभ सिंह, उनकी मां और उनकी विधवा बहन रायमणि बालक की प्रतिभा देखकर मुग्ध हो गए। मां तो ईश्वर के संस्कृत के श्लोकों, गीता के श्लोकों को सुन्दर स्वर में सुनकर ही विभोर होने लगी। सभी ने निर्णय कर लिया कि अब ईश्वर यहीं रहेगा। पिता ठाकुर दास को जगदुर्लभ सिंह के जरिए बाजार में बांटे गए कर्ज वसूलने के कार्य की नौकरी मिली और ईश्वर को कोलकाता में पढ़ने के लिए आसरा। कोलकाता में शिवचरण मलिक की पाठशाला में बालक ईश्वर जाने लगे।

हालांकि वह तीन महीने बाद ही अस्वस्थ हो गए। स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया। रायमणि देवी ने सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी। किन्तु, जैसे ही गांव से बीमारी की बात सुनकर ईश्वर की मां कोलकाता भागकर आईं, ईश्वर के चेहरे पर मुस्कान तैर गई। मां जिद पर अड़

गईं। गांव वापसी के सिवाय कोई आसरा नहीं था। गांव पहुंचते ही ईश्वर स्वस्थ हो गए। दूर दूर तक खेतों की हरियाली, बाग-बगीचे जैसे उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कोलकाता की गलियां संभवतः उस समय अचानक रास नहीं आईं। किन्तु नियति तो ईश्वर को अपने मूल कार्य के लिए मानो कोलकाता बुलाने ही अड़ी थी।

कुछ ही महीनों बाद ईश्वर फिर से कोलकाता रवाना हुए, किन्तु पिता के कंधों पर नहीं, किसी सहायक की उंगली पकड़कर नहीं। रास्ते में बुआ आदि रिश्तेदारों के घर रुकते-रुकाते ईश्वर ने महज साढ़े आठ साल की उम्र में अपने पैरों पर चलकर कोलकाता की सवा सौ किलोमीटर की दूर नाप ली। इस बार जगदुर्लभ सिंह जिद पर अड़े कि बालक ईश्वर को संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी का ज्ञान दिया जाना परम आवश्यक है क्योंकि इसने तो देखते ही देखते अंग्रेजी का प्राथमिक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इस योजना को मधुसूदन वाचस्पति ने पूर्ण किया। कोलकाता में ब्रिटिश सरकार द्वारा स्थापित संस्कृत कॉलेज में ईश्वर को दाखिला मिल गया जहां संस्कृत व्याकरण, वेदांत, न्याय, दर्शन, इतिहास व गणित आदि के साथ अंग्रेजी भी पाठ्यक्रम का हिस्सा थी। पिता ठाकुरदास ने कॉलेज के समीप ही कमरा किराए पर लेना उचित समझा ताकि ईश्वर को आने-जाने में समय ज्यादा खर्च न करना पड़े।

आर्थिक विपन्नता की हालत थी। किसी तरह एक साधारण मजदूर बस्ती में नाले के किनारे सीलन भरा कमरा मिला जहां से ईश्वर की शिक्षा यात्रा प्रारंभ हुई। बाद में उनके अन्य भाई भी पढ़ने के लिए इसी कमरे में आ गए। जमीन पर चटाई बिछाकर सोना भी कठिन था, क्योंकि तिलचट्टे दिन-रात चहलकदमी करते रहते। देर रात तक कर्ज वसूली में पिता की व्यस्तता के कारण प्रातःकाल की रसोई बनाने का जिम्मा भी ईश्वर ने संभाल लिया। और ज्यादातर समय हालत यह रहती कि दोनों समय पेट भर भोजन मिलना भी कठिन था। ईश्वर का शरीर इसी कारण कमजोर होता चला गया। शरीत पतला और मस्तक बड़ा। देखने में शरीर से बेडौल हो गए किन्तु अपनी आंखों और चिन्तन क्षमता में अति तेजस्वी। साथी उन्हें बेडौल शरीर के कारण कक्षा में चिढ़ाते। लेकिन ईश्वर का ध्यान तो अध्ययन में जुटा रहता।

वह अति प्रातः बहुत शीघ्र उठते। कुछ पाठ-अभ्यास कर, उसके बाद रसोई जल्दी तैयार करने में जुट जाते। इसी क्रम में कई बार सब्जी में तिलचट्टे आकर गिर पड़ते तो सारे दिन भाई-पिता और वह खुद भूखे न रह जाएं, अतएव वह चुपचाप खाना परोसते समय तिलचट्टे को अपनी थाली में पहले ही परोस लेते। माछी-झोल के साथ अक्सर यह होता और वह तिलचट्टा भात के नीचे छिपा लेते। क्योंकि तिलचट्टे को सबके सामने झोल से बाहर फेंकने का मतलब या तो दोबारा नए सिरे से रसोई पकेगी या फिर सभी को दिन भर भूखे ही अपने कार्य पर जाना होगा। ईश्वर अपने भाई और पिता समेत स्वयं को भूखे रखने का खतरा मोल नहीं लेना चाहते थे, लिहाजा अपनी थाली में ही तिलचट्टे को रोपकर उसे किनारे छुपाकर भोजन करना अक्सर उनका भाग्य बन गया था। ईश्वर के नसीब में कष्टों की यह कहानी कम-अधिक जीवन भर बनी रही लेकिन कष्टों-विपदाओं से घबराकर निजी सुख के लिए उन्होंने साधना मध्य में छोड़ देना कभी स्वीकार नहीं किया।

ईश्वर अपने भाई और पिता समेत स्वयं को भूखे रखने का खतरा मोल नहीं लेना चाहते थे, लिहाजा अपनी थाली में ही तिलचट्टे को रोपकर उसे किनारे छुपाकर भोजन करना अक्सर उनका भाग्य बन गया था। ईश्वर के नसीब में कष्टों की यह कहानी कम-अधिक जीवन भर बनी रही लेकिन कष्टों-विपदाओं से घबराकर निजी सुख के लिए उन्होंने साधना मध्य में छोड़ देना कभी स्वीकार नहीं किया।

धर्म, संस्कृति और परंपरा के प्रति स्वाभिमानी

ईश्वर चंद्र धर्म, संस्कृति और परंपरा के प्रति स्वाभिमानी थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को देखा तो सनातन वैदिक हिन्दू धर्म के मौलिक दर्शन और शास्त्र को सबसे सम्मुख रख दिया। सभी को चुनौती तक दे डाली कि इसमें सामाजिक बुराइयों के लिए कहां स्थान हैं? उन्होंने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ बहुत ही तीखा दृष्टिकोण और व्यवहार अपनाया और साफ किया कि हिन्दू धर्म के शास्त्र सम्मत समयानुकूल स्वरूप को वह समाज में पुनर्स्थापित कर ही दम लेंगे।

कलकत्ता संस्कृत कॉलेज से ईश्वर चंद्र वंद्योपाध्याय ने सन् 1841 में उच्च अध्ययन पूर्ण किया। उन्हें इस सन्दर्भ में जो प्रमाणपत्र प्रदान किया गया, उसमें वंद्योपाध्याय के स्थान पर उनके सम्मान में विद्यासागर की उपाधि अंग्रेज शिक्षा सचिव ने उच्च शिक्षा से जुड़ी अंग्रेजों की साधारण सभा की संस्तुति पर प्रदान की। प्रमाणपत्र पर उनका नाम विद्यासागर किस व्यक्ति की सलाह पर लिखा गया, इसका हालांकि निश्चित रूप से कहीं उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा से जुड़ी अंग्रेजों की साधारण सभा ने संस्कृत कॉलेज के वरिष्ठ अध्यापकों के समूह और प्राचार्य द्वारा प्रेषित रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए ही विद्यासागर उपाधि ईश्वर चंद्र के साथ जोड़ने पर मुहर लगाई। प्रमाणपत्र में लिखा गया कि

We hereby certify that Ishwarchandra Bidyasagar (Vandyopadhyay) has attended at the Government Sanskrit College for 12 years 5 months and studied the following branches of Hindoo Literature. Grammar, Bellesletters, Rhetoric, Arithmetic, Logic, Theology and Law, that he has attained a very good proficiency on the subject of these studies and that he conducted himself well.

उपर्युक्त विषयों में अध्ययन करते हुए ईश्वर चंद्र ने हिन्दू विधि(जज पंडित) की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली थी जिसके द्वारा वह अंग्रेजों द्वारा स्थापति अदालतों में उच्च पद पर नियुक्ति के लिए अर्हता-युक्त हो गए। उन्हें संस्कृत, बंगला के साथ अंग्रेजी भाषा पर भी समान अधिकार प्राप्त हो गया था। उन्हें सबसे पहले पूर्वोत्तर में त्रिपुरा में जज पंडित पद के लिए नियुक्ति का निमंत्रण मिला किन्तु पिताजी की सलाह पर उन्होंने वहां जाने का न्यौता स्वीकार नहीं किया। उस समय के फोर्ट विलियम कॉलेज के सचिव कैप्टन जी.टी. मार्शल ने उन्हें फोर्ट विलियम कॉलेज में प्राध्यापक पद के लिए सुयोग्य मानकर नियुक्ति निमंत्रण भेजा तो विद्यासागर ने इसे स्वीकार कर लिया। फोर्ट विलियम कॉलेज में चुने हुए भारतीय विद्यार्थियों की पढ़ाई तो होती ही थी, इसमें महत्वपूर्ण बात यह थी कि ईस्ट इंडिया कंपनी के अंग्रेज अफसरों को भारतीय धर्म, संस्कृति, भाषा, विधि, शास्त्र, स्मृति आदि की विधिवत् शिक्षा भी दी जाती थी। विद्यासागर के शिक्षक नियुक्त होते ही जैसे फोर्ट विलियम कॉलेज के बंगाली और संस्कृत शिक्षा विभाग को संजीवनी मिल गई जो कि बिल्कुल ही डूबने के कगार पर थे। उन्हें पहले बंगला और संस्कृत विभाग का प्रमुख पंडित नियुक्त किया गया। ईश्वर चंद्र ने पाठ्यक्रम सुधार कर, संस्कृत और बंगला व्याकरण की पाठ्यचर्या को भी सरल बनाया और एक साधारण विद्यार्थी के दृष्टिकोण से इसे पुनः निर्मितकर कॉलेज की शैक्षणिक शैली में भी आमूलचूल परिवर्तन किया, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी तादाद में विद्यार्थियों में दाखिले की होड़ लग गई। 1842 में ईश्वर चंद्र ने भागवतमहापुराण के 10वें अध्याय पर आधारित वासुदेवचरित नामक पुस्तक का लेखन पूर्ण किया और उसे भी पाठ्यक्रम में स्थान मिला।

1946 में जब ईश्वर चंद्र कॉलेज के उपसचिव नियुक्त हुए तो उन्होंने शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन करने की ठानी। इस मुद्दे पर उनका कॉलेज के अन्य अधिकारियों से मतभेद हो गया। उन्होंने अपना त्यागपत्र दे दिया। अनेक शिक्षकों ने उन्हें पद पर बने रहने को कहा तो उनका दोटूक उत्तर था कि शिक्षा और विद्यार्थी के बीच की सारी रुकावटें दूर नहीं कर सकता तो संस्थान में रहने का औचित्य नहीं। बात अगर केवल रोटी और रोजगार की है तो सिद्धांतों के विरुद्ध जाने के बजाए मैं सब्जी बेचना अधिक पसंद करूंगा।

ईश्वर करीब दो वर्ष तक स्वतंत्र रूप से आजीविका के लिए अनुवाद और लेखनकार्य में जुटे रहे। कैप्टन जीटी मार्शल संस्कृत कॉलेज के भी सचिव रह चुके थे। इस कारण से वह ईश्वर चंद्र की प्रतिभा से सुपरिचित थे। मार्शल की प्रेरणा से ईश्वर चंद्र ने हिन्दी भाषा में भी प्रवीणता प्राप्त की और बंगाली बच्चों के लिए मनोरंजक बेतालपच्चीसी नामक हिन्दी पुस्तक का भी उन्होंने अनुवाद पूर्ण किया। 1848 में उन्होंने जॉन क्लार्क मार्शमैन की पुस्तक हिस्ट्री ऑफ बंगाल का बंगला भाषा में अनुवाद बंगलार इतिहास के नाम से पूरा किया। 1849 में फोर्ट विलियम कॉलेज प्रशासन ने उन्हें पुनः नियुक्ति हेतु निमंत्रण भेजा, उन्हें कॉलेज का कोष प्रमुख तक नियुक्त कर दिया गया। इसी मध्य उन्हें उसी संस्कृत कॉलेज से नियुक्ति का निमंत्रण आया जिसमें कभी वह विद्यार्थी रहे थे। यह साल 1851 का प्रारंभ था। ईश्वर अपने पुराने विद्यालय से शिक्षक के रूप में जुड़ गए।

संस्कृत कॉलेज में शीघ्र ही संचालन के समस्त अधिकार ईश्वर चंद्र के हाथ में आ गए। उन्होंने पाठ्यक्रम संशोधन कर उसे सरल बनाया, अनावश्यक पाठ हटाकर उसे छोटा किया। प्रत्येक कक्षा के स्तर के लिए बंगला, संस्कृत, गणित, स्मृति और दर्शन सभी के पाठ्यक्रम का संपादन स्वयं किया। सबसे महत्वपूर्ण और क्रांतिकारी कार्य उन्होंने संस्कृत कॉलेज में यह किया कि प्रवेश के लिए कॉलेज के दरवाजे सभी जाति-वर्ग के लिए खोल दिए। इसके पूर्व ब्रिटिश सरकार के निर्देश से कॉलेज प्रशासन द्वारा विद्यालय में उच्च जातियों और ज्यादातर संभ्रान्त वर्ग के ही परिवारों के बच्चों को ही दाखिला दिया जाता था। ब्रिटिश कालीन भारत में यह पहली बार हुआ था कि एक सरकारी स्कूल में सभी जाति-वर्ण-वर्ग के बच्चों को प्रवेश में समान अवसर मिलने लगा। कालांतर में अंग्रेज अफसरों और दूसरे ब्रिटिश विद्वानों से पाठ्यक्रम परिवर्तन समेत अनेक मुद्दों पर तीखे मतभेद उत्पन्न हो जाने के कारण ईश्वर चंद्र ने संस्कृत कॉलेज के सभी पदों से त्यागपत्र दे दिया।

ईश्वर चंद्र धर्म, संस्कृति और परंपरा के प्रति स्वाभिमानी थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को देखा तो सनातन वैदिक हिन्दू धर्म के मौलिक दर्शन और शास्त्र को सबसे सम्मुख रख दिया। सभी को चुनौती तक दे डाली कि इसमें सामाजिक बुराइयों के लिए कहां स्थान हैं? उन्होंने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ बहुत ही तीखा दृष्टिकोण और व्यवहार अपनाया और साफ किया कि हिन्दू धर्म के शास्त्र सम्मत समयानुकूल स्वरूप को वह समाज में पुनर्स्थापित कर ही दम लेंगे।

ईश्वर चंद्र धर्म, संस्कृति और परंपरा के प्रति स्वाभिमानी थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों को देखा तो सनातन वैदिक हिन्दू धर्म के मौलिक दर्शन और शास्त्र को सबसे सम्मुख रख दिया। सभी को चुनौती तक दे डाली कि इसमें सामाजिक बुराइयों के लिए कहां स्थान हैं? उन्होंने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ बहुत ही तीखा दृष्टिकोण और व्यवहार अपनाया और साफ किया कि हिन्दू धर्म के शास्त्र सम्मत समयानुकूल स्वरूप को वह समाज में पुनर्स्थापित कर ही दम लेंगे। संस्कृत कॉलेज में अंग्रेज विद्वान वैलेंटाइन ने ईश्वर चंद्र के द्वारा किए गए परिवर्तनों को अस्वीकृत कर दिया। एजुकेशन काउंसिल ने तब ईश्वर चंद्र को निर्देश दिया कि 'वह वेलेंटाइन महोदय के द्वारा किए गए नियम परिवर्तनों, पाठ्यक्रम को स्वीकार करें और आगे उन्हीं के निर्देश में कार्य करें।' विद्यासागर को इस प्रकार की निर्देशात्मक भाषा स्वीकार नहीं थी। उन्होंने गर्वमेन्ट एजुकेशन काउंसिल को कठोर पत्र लिखते हुए कहा कि वेलेंटाइन महोदय के निर्देश पहले से स्वीकृत शिक्षा पाठ्यक्रम में सीधी दखलअंदाजी हैं। इन्हें स्वीकार करने से विद्यालय में किए गए परिवर्तन डांवाडोल हो जाएंगे। यदि वेलेंटाइन महोदय

के निर्देश से ही विद्यालय चलना है तो फिर मेरी आवश्यकता यहां क्या है?

ईश्वर चंद्र विद्यासागर शिक्षा सुधार के जिन परिवर्तनों की ओर बढ़ चले थे उसमें वह प्रशासनिक स्तर पर संभवतः नितांत अकेले थे। जिन परिवर्तनों को करने का साहस उन्होंने जुटाया था, उसके बारे में अंग्रेज अफसर और उनके वेतन पर काम करने वाले अन्य भारतीय सोच भी नहीं पा रहे थे। वह किसी भी सीमा तक जाकर परिवर्तन करना चाहते थे। उन्हें ऐसे किसी भी नियम की परवाह नहीं थी जो उनके मिशन में अवरोध पैदा कर रही थी।

ईश्वर चंद्र का ध्यान स्त्री-शिक्षी पर भी था। वह देख रहे थे कि ईसाई मिशनरियां स्त्री शिक्षा के नाम पर बंगाल व देश के अन्य हिस्सों में केवल मतांतरण को बढ़ावा दे रही हैं, हिन्दू धर्म के प्रति विष उगला जा रहा है और सद्ग्रंथों की गलत व्याख्या की जा रही है। ईश्वर चंद्र ने इस कार्य को हाथ में लिया और बंगाल के गवर्नर सर फ्रेडरिक हॉलीडे के सहयोग से बंगाल के ग्रामीण अंचलों में बड़ी तादाद में लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोलने की परियोजना तैयार की। नवंबर 1857 से मई 1858 के मध्य ही उन्होंने समूचे बंगाल में 25 से अधिक लड़कियों के स्कूल शुरु कर दिए। प्रारंभ में स्कूल के खर्च का प्रबंध करने का आश्वासन सरकार से उन्हें मिला किन्तु बाद में सरकार ने हाथ पीछे खींच लिए। ऐसी परिस्थिति में ईश्वर चंद्र ने हिन्दू समाज के सहयोग से ही विद्यालयों के खर्च का प्रबंध किया, सभी खर्च और शिक्षकों के वेतन का प्रबंध वह बगैर सरकार के स्वयं के संबंधों के आधार पर ही करते रहे। विद्यासागर ने लड़कियों के लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रबंध किया। कोई फीस नहीं और किताबों और ड्रेस के लिए भी कोई खर्च नहीं। सब कुछ स्कूल की ओर से दिया जाता था। ग्रामीण इलाकों में दूर से आने वाली लड़कियों के लिए उन्होंने वाहन का भी प्रबंध किया। ऐसे वाहनों पर उन्होंने मनु स्मृति का एक श्लोक लिखवा दिया जिसका मतलब था कि लड़कों की तरह ही लड़कियों को भी शिक्षा पाने का अधिकार है। वह माता-पिता बच्चों के लिए शत्रु समान हैं जो लड़के-लड़कियों में भेदभाव करते हैं और उनके अध्ययन की व्यवस्था नहीं करते हैं। इस प्रकार वह मनु स्मृति के श्लोकों के सहारे ही समाजिक परिवर्तन के अपने मिशन को धार दे रहे थे।

ईश्वर चंद्र ने स्त्री शिक्षा के लिए जो आंदोलन बंगाल की धरती पर शुरु किया, उसने देखते ही देखते समाज का मन ही बदलना शुरु कर दिया। बच्चियों को पढ़ते जाते देखकर कितने ही बुजुर्ग माता-पिता की आंखें अश्रुधारा से भर जाती थीं। लड़कियों के लिए जिस जीवन को बंगाल में अभिशाप माना जाने लगा था, सैकड़ों वर्षों बाद उसी बंगाल में परिवर्तन का महान सवेरा उग आया था। विद्यासागर ने एक के बाद एक बाल विवाह, बहु विवाह पर भी हल्ला बोलना शुरु किया। बड़ी तादाद में समाज के लोगों को अपने मिशन के साथ खड़ा किया, विधवा युवतियों के पुनर्विवाह के लिए वह अपने सहयोगियों के साथ बंगाल की धरती पर अंगद पैर जमाकर खड़े हुए, ऐसी हर सामाजिक कुरीति पर चोट दर चोट की जो स्त्री के सम्मान के विरुद्ध थी, और इस कार्य में वह सदैव अपनी मां का चेहरा सामने रखते थे। रात्रि में जिस बिस्तर पर सोने जाते थे, उसके सम्मुख उनकी मां की भावपूर्ण तस्वीर लगी रहती थी और उसे देखकर वह सदा ही भावुक हो जाते थे। वस्तुतः उनकी मां ने ही उन्हें बचपन में यह संस्कार दे दिया था कि बड़े होकर स्त्रियों के हक के लिए अपना जीवन अर्पित कर देना। ईश्वर चंद्र ने जब 1891 में शरीर पूरा किया तो वह अश्रुपूर्ण आंखों से अपलक अपनी मां की उसी तस्वीर को ही देखते रहे थे जिन्होंने उनके भीतर महान सामाजिक परिवर्तन का बीड़ा उठाने की शक्ति भरी थी।

ईश्वर चंद्र ने स्त्री शिक्षा के लिए जो आंदोलन बंगाल की धरती पर शुरु किया, उसने देखते ही देखते समाज का मन ही बदलना शुरु कर दिया। बच्चियों को पढ़ते जाते देखकर कितने ही बुजुर्ग माता-पिता की आंखें अश्रुधारा से भर जाती थीं। लड़कियों के लिए जिस जीवन को बंगाल में अभिशाप माना जाने लगा था, सैकड़ों वर्षों बाद उसी बंगाल में परिवर्तन का महान सवेरा उग आया था। विद्यासागर ने एक के बाद एक बाल विवाह, बहु विवाह पर भी हल्ला बोलना शुरु किया।

Article

Ishwar ChandraVidyasagar

Bengal's Pathbreaking reformer

Ishwar Chandra Bandyopadhyaywasa Bengali philosopher, teacher, logician,philanthropist and above all a social reformer. His contribution to simplify Bengali prose,reconstructing the Bengali alphabet and simplifying the Bengali typography is unmatched. His social reform regarding women education and widow remarriage improved the lives of lakhs of women.

Dr. Rajeev Tewari

"Ishwar Vidyasagar realized that change is only possible through education. He promoted women empowerment through education. He opened around twenty model schools and enrolled 1300 students. Vidyasagar opened thirty-five exclusive schools for girls."

Dr.Rajeev Tewari is a practicing surgeon at Delhi. He did his MBBS course from KGMC, Lucknow and finished his master's course (MS is Surgery) in 1986 from KGMC. He specialises in Laparoscopic surgery. Writing and teaching undergraduate students are his passion. He likes writing on Indian history and Hindu Mythology and recent Geo-political issues.

Ishwar ChandraVidyasagar

Ishwar Chandra Bandyopadhyaywas born on September 26, 1820 in family of Bengali Brahmin ThakurDas Bandyopadhyayat Birsingha village in Hooghly district (later on it became a part of Midnapore district). At the age of 9 he shifted to Burrabazar, Calcutta where he received formal education. He was good at studies but he did not have money to buy gas lamp so he used to study under the street light. He passed all exam with excellence and won scholarships, he even did part time teaching job to support his family. In 1839 at the age of 19 he successfully cleared Sanskrit law examination and passed out from Sanskrit college in 1841 qualifying in Sanskrit Grammar, Literature,Alankara Shastra, Vedanta, Smriti and Astronomy. In the same year at the age of 21 he joined Fort William college as head of Sanskrit department.

In 1839 he took part in a competition testing knowledge of Sanskrit in which he proved he was a true polymath and received the moniker 'Vidyasagar' (Ocean of Knowledge).

After five years of working at Fort William College he left and joined the Sanskrit College as 'Assistant Secretary'. Here apart from education he had administrative authority too, so he recommended many changes to the existing education system. His recommendation was not well perceived by College Secretary Rasomoy Dutta so after 3 years of working as assistant secretary he resigned from Sanskrit College and re-joined Fort William College as a head clerk.

After joining Fort William college he focused on educational reforms. He made English and Bengali as medium of learning besides Sanskrit. He became the first Indian to become Principal of Govt Sanskrit college. He allowed non- Brahmin to enrol and worked significantly against untouchability. He wrote many books and in 2 among them – Upakramonica and ByakaranKaumudi he interpreted complex Sanskrit grammar notion into easy Bengali language. In 1856 with the help of another reformer Amulya Ambati he established Barisha High school in Calcutta.

While working as education inspector he was disturbed by high illiteracy and miserable situation of education in the rural area of Bengal.

Ishwar Vidyasagar realized that change is only possible through education. He promoted women empowerment through education. He opened around twenty model schools and enrolled 1300 students. Vidyasagar opened thirty-five exclusive schools for girls. He took help of Jamidars and land lords for donation for setting up schools. He personally met the parents of girls requesting them

Ishwar Vidyasagar realized that change is only possible through education. He promoted women empowerment through education. He opened around twenty model schools and enrolled 1300 students. Vidyasagar opened thirty-five exclusive schools for girls. He took help of Jamidars and land lords for donation for setting up schools. He personally met the parents of girls requesting them to educate their daughters. He introduced the concept of admission fee and tuition fee for the first time in Calcutta yet he had to donate large portion of his own salary for educational reforms.

to educate their daughters. He introduced the concept of admission fee and tuition fee for the first time in Calcutta yet he had to donate large portion of his own salary for educational reforms.

Vidyasagar supported John Elliot Drinkwater Bethune to open first permanent girl's school in India 'The Bethune School' on May 7 1849.

Vidyasagar wrote a books in 1855 ‘’ ’’, a Bengali learning book for alphabets in which he simplified and justified Bengali typography into alphabets of 12 vowels and 40 consonants.'BornoPorichay' literally means Intensifying the Alphabets. It introduces each alphabet in short rhymesand is still the first book a Bengali child reads.

Ishwar Chandra used different newspapers to spread his ideas. He started to publish Bengali newspaper 'Shome Prakash' in 1858. He used to write many articles in publications like Tattw abadhini Patrika, samprakash ar bashu bhankarr Patrika and Hindu patriot to bring about educational reforms. He even opened a Sanskrit press so that he could donate printed books at cheap and affordable prices.

He wrote: 'Education does not only mean writing, learning, reading and Arithmetic, it should provide a comprehensive knowledge. Education in geography, geometry, literature, natural philosophy, moral philosophy, physiology, political economy is very much necessary. We want teachers who know both Bengali and English language, at the same time are free of religious prejudice'.

Vidyasagar wrote a memo to the Council of Education demanding a system of education in vernacular in 1854. In the same year Wood's Despatch recommend a three-tier plan for education for the masses. 'The Wood's despatch of 1854' by Sir Charles Wood, the 'President of the Board of Control' is considered the Magna Carta of Indian education. In this dispatch sent by Sir Wood to the then Governor General of India Lord Dalhousie, Sir Wood suggested that primary schools must adopt vernacular languages, high schools must adopt Anglo-vernacular language and at college-level English should be the medium of education. Vocational and women's education were also

stressed upon. One of the main purpose of this system was to create an English class among Indian people to be used as workforce in the company's administration. This policy had an immenseimpact on spreading English learning and female education in India

Charles Wilkins and Panchanan Karmakar had cut the first Bengali type in 1780. It remained unchanged till Vidyasagar remodelled and modernize the Bengali prose. Vidyasagar wrote a books in 1855 ''BornoPorichay", a Bengali learning book for alphabets in which he simplified and justified Bengali typography into alphabets of 12 vowels and 40 consonants.'BornoPorichay' literally means Intensifying the Alphabets. It introduces each alphabet in short rhymesand is still the first book a Bengali child reads.

Most of the social reformers of his era were trying to change the society from out side creating an alternative system, Vidyasagar tried to bring reform in society from within through legal reforms.

One of the main social reform was passing of 'Window marriage act bill' in 1856 in which Vidyasagar played an Instrumental role. It was the second major social reform legislation after the abolition of Sati by Lord William Bentinck In 1829. Vidyasagar was disturbed by the condition of windows in Bengal. It was a common practice in Bengal that many old men who were on their death bed were married to under age young girls. After their death the young widows were forced to lead a deplorable life with no dignity. In upper-caste Hindu society remarriage of widows were not allowed. Considering the young age of marriage in 19th century many widows were of adolescence age. Unable to face the ill treatment, many of them used to run away and were forced into prostitution business. In the mid of 19th century there were roughly more than 12,000 prostitutes in Calcutta.

Ishwar Chandra Vidyasagar started campaigning about remarriage of Hindu widows. He petitioned the Legislative council. Although the counter petition against the proposal had four times more signatures including likes of Radhakanta Deb but Lord Dalhousie personally finalised the bill despite the opposition. This bill was especially aimed at Hindu child widows whose husbands had died before consummation of marriage.under the Actthe widow was not entitled for any inheritance due to her from her deceased husband but it led to upliftment of lives of thousands of child widows. Finally The Hindu Widows' Remarriage Act, 1856 was enacted on 26 July 1856.Vidyasagar married his son Narayan Chandra to an adolescent widow in 1870 to set an example.

On August 5, 1882 Vidyasagar met Ramakrishna Paramhansa for the first time. While Vidyasagar was a liberal person and Ramakrishna was a devout orthodox Hindu yet they both had great camaraderie and Ramakrishna praised Vidyasagar as the 'sea of wisdom'.

During his last daysin 1873,Vidyasagar came to Karmatar (District of Jamtara, Jharkhand) and set up a girls' school and a night school for adults on the premises of his house and named it Nandan Kanan. He also provided free Homeopathy medicines to these unprivileged tribal people. He spent his last 18 years at Karmatar and at the age of seventy on the 29th of July, 1891 he left for heavenly abode.

After his Death Tagore said: 'One wonders how God, during the process of creating forty million Bengalis, delivered a man!'

Karmatar railway station where he lived has been renamed as Vidyasagar railway station. On 26th Sept 2019 on bicentenary of Vidyasagar birth anniversary Jharkhand government named Karmatar block as Ishwar Chandra Vidyasagar Block.

Article

Ishwar Chandra Vidyasagar
A Great Reformer

Ramandeep Kaur

Ishwar Chandra Vidyasagar worked towards providing education to women. He opened and ran many schools for girls at his own expense. He was also known as 'Daya-r Sagar' or 'Karunar Sagar' (literally, 'ocean of kindness') because of his charitable nature and generosity.

One such personality, who was so humble but lived his complete life with determination and purpose to fulfill certain objectives, was Ishwar Chandra Vidyasagar. He was a great social reformer, writer, educator, and entrepreneur who worked endlessly to transform society. His contribution towards education and changing the status of women in India was remarkable. Ishwar Chandra Vidyasagar strongly protested against polygamy, child-marriage and favoured widow remarriage and women's education in India. Because of his contribution towards such issues, the Widow Remarriage Act was passed in 1856, making the marriage of widows legal. Ishwar Chandra Vidyasagar worked towards providing education to women. He opened and ran many schools for girls at his own expense. He was also known as 'Daya-r Sagar' or 'Karunar Sagar' (literally, 'ocean of kindness') because of his charitable nature and generosity.

Ishwar Chandra Vidyasagar was born in an orthodox family of Bengal on September 26, 1820. Since childhood, he was keen to get more and more knowledge. As his family was not well off, he used to study under the street lights at night. Because of his vast knowledge on different subjects, the title Vidyasagar was given to him by the people of his village. Vidyasagar means an ocean of learning ('vidya' – learning, 'sagar' – ocean). He became a Sanskrit pundit and acquired an extremely high proficiency in this subject. Till his retirement, he worked as a Sanskrit professor in Sanskrit College, Calcutta. While he was the principal of the college, the college became a place of reform. Not only this, Vidyasagar was a great writer and also known as the father of modern Bengali language. Many Bengali alphabets were revised by him. He also wrote a book on grammar rules of Sanskrit that is used till date.

An Inspirational Story

Ishwar Chandra Vidyasagar was an extremely humble personality and many a time it was this part of his nature that had inspired others. Several stories from his life prove his simplicity and at the same time are very inspiring for the readers. Apart from his contribution towards society, it was his humility that made him a renowned and respected personality across India.

At one point, Ishwar Chandra Vidyasagar along with his few friends was working on a mission to start Calcutta University and for this they were seeking donations. Though stopped by his fellow members, he went to the palace of the Nawab of Ayodhya to fulfill the same mission. Though the Nawab was not a kind person, Vidyasagar met the Nawab and presented the whole situation in front of him. The arrogant Nawab, on hearing this, dropped his shoes in Vidyasagar's donation bag. On this, Vidyasagar did not react but just thanked him and left the place.

The next day, Vidyasagar organized an auction of the Nawab's shoes just in front of the Nawab's palace. People, in order to impress the Nawab, including the Nawab's jahagirdars and court members, etc came forward and started bidding. The shoes were sold for Rs 1,000. The Nawab on hearing this was pleased and donated the same amount.

When the Nawab dropped his shoes in the donation bag, then Vidyasagar could have reacted in another manner. He could have taken this as an insult or got depressed. But, on the other hand, he used those shoes as an

Vidyasagar wrote a books in 1855 '' '', a Bengali learning book for alphabets in which he simplified and justified Bengali typography into alphabets of 12 vowels and 40 consonants.'BornoPorichay' literally means Intensifying the Alphabets. It introduces each alphabet in short rhymesand is still the first book a Bengali child reads.

opportunity to fulfill his mission. He not only got the money but also pleased the Nawab. In this manner, he always worked above his personal feelings and towards one goal. Ultimately, his dream of opening Calcutta University came true.

Ishwar Chandra Vidyasagar passed away at the age of 70 on July 29, 1891. After his death, Ishwar Chandra Vidyasagar's home was sold by his son to the Mallick family of Kolkata that was later purchased by the Bengali Association, Bihar on March 29, 1974. They maintained the house in its original form and also started a girls' school and a free homeopathic clinic. Ishwar Chandra Vidyasagar truly brought reforms in the education system of Bengal by removing the pervading darkness.

The Contribution of Ishwar Chandra Vidyasagar

Ishwar Chandra Vidyasagar, along with many other active reformers, opened schools for girls. This was because, for him, educational reform was much more important than any other reform. He believed that the status of women and all kinds of injustice and inequalities that they face could be changed only through education.

Ishwar Chandra Vidyasagar worked endlessly to provide equal education to all men and women irrespective of their caste, religion and gender. He allowed people from lower castes in his Sanskrit college that was meant only for upper caste men.

Vidyasagar worked to uplift the status of women in India, especially in his native Bengal. He was a social reformer and wanted to change the orthodox Hindu society from within. Ishwar Chandra Vidyasagar introduced the practice of widow remarriage and worked against polygamy.

During his lifetime, Vidyasagar had written many books and thus enriched the Bengali education system to a great extent. Till date, the books written by him are read by all.

Ishwar Chandra Vidyasagar was indeed a great personality and a reformer. Today, India needs such dedicated, humble and determined personalities who can bring all sorts of required reforms by working solely for the betterment of the society, over and above their own interest.

Description

Ishwar Chandra Vidyasagar was born on September 26, 1820 in Bengal. He was a social reformer, writer, educator, entrepreneur who worked to uplift the education system as well as the status of women in India.

His life as a guide for Social Action

Vikramaditya Singh

He inspires not just through his work, but also by the way he lead his life. Folklore exists by the dozens around him. His stories of studying under a street lamp as a child to pretending to be a luggage bearer at the Karmatand railway station for a hurried passenger in need are all well known. What one must glean from these is inspiration for the future generations.

When Life is equated with nourishing our wants alone, it's a lonely life. Rare are those who are moved to action for the sake of others . And even rarer are those who persevere . Then those who persevere must also bear to endure whatever hardships come their way. For no good deed goes unchallenged, no good man unquestioned.

This universe was born of matter and energy. Nothing new is created or destroyed in the absolute sense. Nature maintains its balance . For this purpose every once in a lifetime a 'yugpurush' is born to restore the balance in society . One such 'Karmyogi' was Sri Ishwar Chand Vidyasagar. Born Ishwar Chand Bandopadhyay, he received the title upon graduating from Sanskrit College in Kolkatta.

Through Mahatama Gandhi jis words, ' Be the change you want to see in the world' one may understand him. He believed in bringing change from deep within himself through rigorous study and practice, and then from within the society. The task would seem enormous, but his commitment was up to the task as history is testimony to it today.

His relevance is glaring us in the face, in the contemporary context wherever we turn.

The politic of India and the idea of liberalism is at a crossroads today. His interpretation of the Vedic texts were rational and thus liberal. His liberalism extends from a culturo-rational place. His life story is an answer to many raging debates about rights and duties.

Over a hundred years ago in the British Raj, Vidyasagar Ji campaigned for blending the predominant Sanskritic knowledge system with western thought . And ironically today we have come to a point where we are aspiring to blend the current curriculum which is predominantly of a western orientation, with our sanskritic knowledge traditions. To fix this U-turn his life's academic work would be a guiding light in this case as well.

The vision for universal access to education, even that which is considered Vedic and/or sacred ; is as relevant today as it was in his time. He opened up the doors to the Sanskrit college as its principal to all castes. A decision for which he ended up resigning for, from the college. His belief in imparting knowledge in the vernacular and having a skill based curriculum was far ahead of its times. We see these reflections in our policy structures today.

His dialogue with Sri Ramakrishna Param Hans ji is a great study about what it is to pursue a spiritual path and what is the conception of God and the 'I' that is in all of us. If I may attempt to capture in essence this , dialogue I would put it something like this ... When nothing is yours , everything is yours and you belong to everything. When one pursues a calling , it is part of a larger whole.

If generosity is for petty personal gain, name or fame, this self centric energy destroys positive manifestations that could have been.

And, principal positions in society come to those whose centre is driven by this purity, and not to those who seek them . This purity cannot be tasted or contextualised in words . It's 'Brahm'. Who may be experienced at best through our Karma.

The power of ones Karma propels the world . But today we see an ever emerging presence of social activists who are more active than they are social ; and are more about noise than activity. This cross section has a lot to learn from him. To be a tool of qualitative transformation one must be acquainted with that lack of quality that the less fortunate know as their 'normal'. Being in the midst of the people you wish to uplift is the path he advocated . Karmatand, now in Jamtara district, Jharkhand, is where he spent 18 years amongst the Santhal tribe and worked for the tribals there till the last breath. He went there a less than elated man and bought a home which he named, Nandankanan. He opened the first girls school for the tribals, and perhaps thefirst of its kind in the country.

As a learned man he took up jobs with the govt and effectively used his offices for his reformist aims. These contributions went above and beyond anyone's imagination. He is well known for not only his anti child marriage stance, but his anti polygamy and pro widow remarriage campaigns aswell. Coupled with his advocacy of girl child education in particular and efforts to open up access to education universally to all castes are all his lasting legacy. These reforms are pillared on legislative reforms where an alignment with the political powers of the day would have been a dire necessity. And unfortunately for this he is criticised by a certain political spectrum. They have even vandalised his statues and memory , from time to time. To be a patriot is also to be pragmatic, for the larger good sometimes. Branding him as an imperialist stooge is not only unfair, but also grossly violent.

The sheer achievement of authoring Bengali 'Bornoporichoy Part 1 & 2 ' , translations of Sanskrit texts to Bengali and being touted as the father of Bengali prose by Tagore himself would place him as a legendary academician.

Yet, he inspires not just through his work, but also by the way he lead his life. Folklore exists by the

dozens around him. His stories of studying under a street lamp as a child to pretending to be a luggage bearer at the Karmatand railway station for a hurried passenger in need are all well known. What one must glean from these is inspiration for the future generations. No doubt, some embellishment goes into such folklore. But kernel of truth in all these stories is revealing of the fearless, selfless man that he was.

This poem hopes to pay homage to his egalitarianism rooted in our traditions. He was above caste, creed and gender .

क्या तेरा वंश , क्या मेरा वंश ,
देख , कण कण में है उसीका अंश ।
न कुछ तेरा है , न कुछ मेरा है ,
यह रघु मुझको स्वयं बतलाये ।।
फिर क्यों सिर्फ तू रघु वंश कहलाये ??
जी आया मैं भविष्य का इतिहास ,
दिखाया उसने मुझे कहाँ है काल का वास ।
कहाँ हमें जाना है ,
और कहाँ से हम आये ,
यह रघु मुझको स्वयं बतलाये ।।
फिर क्यों सिर्फ तू रघु वंश कहलाये ??
आया मैं भी उसमे से ,
आत्मसात होना है फिर उस ही के पास ।
जैसे तेरे , वैसे ही मेरे श्वास,
यह रघु मुझको स्वयं बतलाये ।।
फिर क्यों सिर्फ तू रघु वंश कहलाये ??
मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो गया ,
रक्त तेरा- मेरा ,
जन्म ले कर हो गया ,ये तेरा , ये मेरा ।
क्या तेरा वंश , क्या मेरा वंश ,
देख , कण कण में है उसीका अंश ,
फिर क्यों सिर्फ तू रघु वंश कहलाये ??
देख !!
मैं भी हूँ , रघु अंश पर्याय !!
मैं भी हूँ ...
रघु अंश पर्याय ...

Guess who came to dinner!

Vidyasagar was invited to a party. When he reached the venue, the person at the gate told him that guests had to come in formal European dress. Those were the days of the British rule in India. British manners were adopted by Indians with English education. Vidyasagar, however, had turned up in his usual spotless white dhoti and kurta.

Vidyasagar thanked the man at the gate and left. A little while later, he turned up at the venue again. The man at the gate was happy to see that Vidyasagar was now in a formal European attire. He announced his arrival. The host himself came out to receive Vidyasagar, who was highly respected in Kolkata as a scholar.

During dinner, Vidyasagar started pouring food on his clothes, one spoon at a time! The guests were taken aback to see Vidyasagar talk to his coat, asking it to have some more soup. The host rushed to the scene and demanded an explanation for this strange behavior.

Vidyasagar smiled, "It is clear the invitation to dinner is to the dress I am wearing and not to me. Therefore, I'm feeding the dress." The host got the message and he apologized to Vidyasagar.

Vidyasagar had sent out a simple message—the British might have won Indian territory, but Indians could remain Indians taking pride in their tradition and culture.

आलेख

श्रीरामकृष्ण परमहंस का पण्डित ईश्वरचंद्र विद्यासागर के घर आना

रत्नदीप उपाध्याय
लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया,
(यूएसए)

समय के साथ कुछ कुरीतियाँ भी संस्कृति में खर-पतवार की तरह उग आती हैं जिनका समय-समय पर उन्मूलन होना आवश्यक होता है। अट्ठारहवीं सदी तक विभिन्न कुरीतियों ने हिन्दू समाज में जड़ जमा लिया था। उस समय सती-प्रथा, बहु-विवाह, बाल-विवाह, जातीय-भेदभाव, विधवा-विवाह अमान्य होना आदि कुछ ऐसी कुरीतियाँ थीं जिन्हें सनातन शास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर अधार्मिक और त्याज्य सिद्ध करना संभव था। विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में दो शास्त्रसम्मत पुस्तकें लिखीं और अपने प्रयत्नों से, संकीर्णवादी लोगों के घोर विरोध के बाद भी, शासन द्वारा इसपर अंततः विधवा पुनर्विवाह एक्ट 15 (1856) द्वारा इस कुप्रथा पर वैधानिक प्रतिबंध लगवाया।

उन्नीसवीं शताब्दी का काल

1950 के लगभग, केवल बंगाल ही नहीं अपितु पूरे देश में पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक महान विद्वान, शिक्षाविद्, साहित्यकार, परोपकारी के रूप में प्रसिद्ध हैं । उनका पांडित्य और समाजसेवा की भावना जन-जन में विख्यात है। गरीब, दुर्बल, असहाय, विधवा, अनाथ आदि सभी के लिए उनके हृदय में अपार करुणा थी और वे बंगाल में 'करुणासागर' के नाम से भी लोकप्रिय थे। वे एक उदारहृदय, लोकोपकारी, एवं दानशील व्यक्ति थे जो मानवजाति के प्रति प्रेम से उद्वेलित थे। अन्य सभी प्राणियों के प्रति भी वे दया एवं करुणा से परिपूर्ण थे। बछड़े को उसका पूरा भाग मिले इसलिए उन्होंने वर्षों तक दूध पीना छोड़ दिया और घोड़े के कष्ट का विचार कर घोड़ागाड़ी की सवारी ! उनकी आय प्रमुख रूप से विधवाओं, अनाथों, निर्धन छात्रों, और अभावग्रस्तों की सेवापर व्यय होती थी। विद्यासागर दुर्जेय स्वभाव के भी थे, तभी तो उन्होंने अंग्रेज अधिकारियों से सैद्धांतिक मतभेद होने के कारण कलकत्ता संस्कृत कालेज के प्राचार्य पद से त्यागपत्र दे दिया। अपनी माता-पिता के प्रति उनका देवत्व का भाव था। माता से उनका अगाढ़ प्रेम था। एकबार माता की इच्छा पूरी करनें के लिए नाविकों की अनुपस्थिति में उन्होंने दामोदर नदी को तैरकर प्रतिज्ञाबद्ध अपने भाई के विवाह में जानें का साहसिक कार्य किया। उनका ज्ञान गहरा और विस्तृत दोनों था- संस्कृत भाषा के ग्रंथों एवं शास्त्रों की दृढ़ आधारशिला थी जिसपर अपार ज्ञान का महल ! सचमुच में वे विद्या के सागर ही थे ! बीए करने के बाद 20 वर्ष की अल्पायु में ही वे संस्कृत कालेज द्वारा 'विद्यासागर ' के उपनाम से सम्मानित किए गए। तब तक वे लॉ की परीक्षा भी पास कर चुके थे। बचपन में घर पर तो शुद्ध-सात्विक सनातन-संस्कृति का वातावरण था ही। माता व पिता दोनों उनके लिए महान सनातन मूल्यों के आदर्श थे। उनके सद्गुण उनके पूर्वजन्मों के श्रेष्ठ संस्कारों एवं संस्कृत-साहित्य के गूढ़ अध्ययन से ही प्रकट और विकसित हुए थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन ने ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से अपनी जड़ें और गहरी कर ली थीं । रेल और सड़कों का जाल बिछाकर उनका भारत की लूट और कंपनी के व्यापार में सरलता लाने का नक्शा तैयार हो चुका था। भारतीय समाज को भ्रमित कर उसमें हीन भावना पैदाकर उनका मनोबल कमजोर करने का षड्यन्त्र रचा जा चुका था। गोरों द्वारा श्रेष्ठतम सनातन-संस्कृति को असभ्य और अनैतिक करार कराने की चेष्टा जोरों पर थी। एक स्वावलंबी समाज को भौतिकतावादी बनाकर दूसरों पर आश्रित होने का पाठ पढ़ाया जा रहा था। ईसाई मिसनरियाँ अपने छद्मवेश में दयालु और लोकोपकारी होनेका मुखौटा लगाए धर्मांतरण में सक्रिय थीं। पाश्चात्य सभ्यता और शिक्षा को श्रेष्ठ बताकर जनता में अपनी भाषा व शिक्षा के प्रति हीन-भावना पैदा की जा रही थी । ऐसे में एक दृढ़-संकल्प और अपनी श्रेष्ठतर संस्कृति एवं धर्म की वास्तविक महानता को समझने वाला ही इस चतुर्दिक प्रहार से निरापद रह सकता था। ऐसे काल में विद्यासागर ने

अपने पांडित्य और विवेक द्वारा सत् और असत् का निर्धारण कर पाश्चात्य-सभ्यता के दुष्प्रभावों से अपने को बचाया और अपनी मूल सनातन-संस्कृति की अवहेलना नहीं की। सादगी, सत्यवादिता, निःस्वार्थ-सेवा का भाव, निर्भीकता, जीवों के प्रति दया, संकटग्रस्तों से सहानुभूति, आदि श्रेष्ठ सनातन गुणों की प्रचुरता ने उन्हे महामानव बना दिया। अन्य समकालीन बहुसंख्यक 'शिक्षित' समुदाय विवेक की अनुपस्थिति में पाश्चात्य-संस्कृति की धारा में भ्रमित होकर बह गया, जिसका दुष्परिणाम ही वर्तमान समाज की प्रमुख समस्याओं का मूल कारण हैं!

इतिहासकारों ने उन्नीसवीं सदी को भारत के पुनर्जागरण की सदी कहा है क्योंकि तुलनात्मक रूपसे अट्ठारहवीं और बीसवीं सदी के भारतीय समाज, सोच, और संस्कृति में काफी परिवर्तन मिलता है। (मेरे विचार से यह बात मुख्यरूप से शहरों पर ही लागू होती है! मेरे बचपन तक ग्रामीण अञ्चल में ऐसा कुछ नहीं था। सनातन-संस्कृति खूब फल-फूल रही थी।) राजा राममोहन रॉय (१७७२-१८३३) भारतीय रेनेसाँ के पिता कहे जाते हैं। राममोहन रॉय अपूर्ण-ज्ञानवश अपनी पुरातन सनातन-धर्म व सनातन-संस्कृति के प्रति भ्रमित व शंकित एवं पाश्चात्य-सभ्यता और ईसाई मत से गंभीर रूप से प्रभावित थे। ईस्ट इंडिया कंपनी के एक कर्मचारी के रूप में अंग्रेजी-शासकों के चंगुल में भी थे। रॉय का दोहरा व्यक्तित्व -एक तरफ बाह्य रूप से विद्वान बंगाली ब्राह्मण, किन्तु अंतःकरण में पाश्चात्य संस्कारों में रँगे- पूरे समाज और देश को भ्रमित करने में सफल रहा। अधिकतर प्रगतिवादी लोग इनकी त्रुटिपूर्ण विचारधारा से प्रभावित हुए और उनका अनुकरण किये। इनके वैचारिक 'वंशज' तब से लेकर आज भी भारतीय समाज में सांस्कृतिक पतन लाने और उसका नाश करनें में प्रयत्नशील हैं। पाश्चात्य-दर्शन में ऐसा कोई भी श्रेष्ट आदर्श या धारणा नहीं है जो हमारी मूल सनातन-धर्म और सनातन-संस्कृति में न हो। वास्तव में उसके महान आदर्श पाश्चात्य विचारकों ने सनातन-धर्म के शास्त्रों से ही सीखा और अपनी भाषा एवं तात्कालिक परिवेश में थोड़ा फेर-बदल कर दुहराया।

समय के साथ कुछ कुरीतियाँ भी संस्कृति में खर-पतवार की तरह उग आती हैं जिनका समय-समय पर उन्मूलन होना आवश्यक होता है। अट्ठारहवीं सदी तक विभिन्न कुरीतियों ने हिन्दू समाज में जड़ जमा लिया था। उस समय सती-प्रथा, बहु-विवाह, बाल-विवाह, जातीय-भेदभाव , विधवा-विवाह अमान्य होना आदि कुछ ऐसी कुरीतियाँ थीं जिन्हें सनातन शास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर अधार्मिक और त्याज्य सिद्ध करना संभव था। विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में दो शास्त्रसम्मत पुस्तकें लिखीं और अपने प्रयत्नों से, संकीर्णवादी लोगों के घोर विरोध के बाद भी, शासन द्वारा इसपर अंततः विधवा पुनर्विवाह एक्ट 15 (1856) द्वारा इस कुप्रथा पर वैधानिक प्रतिबंध लगवाया। अन्य सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को भी समाप्त करनें की दिशा में उन्होंने विभिन्न माध्यमों द्वारा अपना महती योगदान दिया।

श्रीरामकृष्ण परमहंस सनातन-धर्म के महान संतों में एक हैं। उनके प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानंद ने अपने परमहंस गुरु का संदेश पूरे विश्व में फैलाया। अपनी साधना से ईश्वर-प्रेम जगाकर प्रभुकी कृपा एवं प्रत्यक्ष-दर्शन प्राप्त करने का रहस्य उन्होंने मानवजाति को समझाया। ऐसा लगता है कि श्रीरामकृष्ण परमहंस विद्यासागरजी को भी अपनी शरण में लेकर प्रमुख शिष्य के रूप में ढालना चाहता थे। सद्गुरु अपने दिव्य चक्षु से अधिकारी और प्रतिभाशील शिष्यों की खोज में निरंतर रहतें हैं, जो उनकी आध्यात्मिक धरोहर को भविष्य में भी मानवजाति के कल्याण में लगा सकें। श्रीरामकृष्ण भी संभवतः विद्यासागर को उनके दृढ़-कर्मयोगी के मार्ग से हटाकर भक्ति और ज्ञान के मिश्रित योग-मार्ग पर लाना चाहते थे। शायद परमहंस की इच्छा उनके माध्यम से जन-जन के भौतिक कल्याण के बदले आध्यात्मिक कल्याण की रही हो। ऐसा इनकी परस्पर वार्तालाप से लगता है जो केवल एक अवसर पर उनकी भेंट मे हुई थी। श्रीरामकृष्ण ने अपने शिष्यों से कई बार अपनी विद्यासागर से इस भेंट का संदर्भ भी दिया और यह भी कहा की विद्यासागर को वह धीरे-धीरे इस मार्ग पर अग्रसर करेंगे क्योंकि उसका हृदय शुद्ध एवं पवित्र था। इस प्रयत्न में असफल होने पर उन्होंने अपना क्षोभ भी व्यक्त किया।

इस लेख में श्रीरामकृष्ण परमहंस की पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से भेंट की लीला का वृतांत है जो उनके अनन्य गृहस्थ-भक्त श्री महेन्द्रनाथ गुप्ता, जिन्हें सभी प्रेम से श्री 'म ' (मास्टर/महाशय/महेंद्र का संक्षेप) कहते थे, ने अक्षरशः बंगाली में लिपिबद्ध किया। श्री म, जिन्हें श्रीरामकृष्ण 'मास्टर' कह कर पुकारते थे, सर्वप्रथम फरवरी १८८२ में श्रीरामकृष्ण के सनिध्य में आए और कुछ ही दिनों में उनकी संत-प्रवृत्ति, अपार भक्ति, एवं शुद्ध ब्रह्मज्ञान से प्रभावित हो उनकी शरण लेली। श्री म भी एक विद्वान शिक्षाविद् थे और गृहस्थ होते हुए भी उनमें प्रबल आध्यात्मिक रुचि एवं जिज्ञासा थी। परमहंस को भी उनकी पवित्रता और आध्यात्मिक ज्ञान का अधिकारी होने का आभास था। श्री म पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के मेट्रोपॉलिटन इन्स्टिच्यूशन के श्यामबाज़ार विद्यालय में प्राध्यापक थे। श्री म अपनी उपस्थिति में श्रीरामकृष्णकी सभी वार्तालापों एवं प्रवचनों का दैनंदिनी के रूप में नोट बनाते रहते थे। इनके आधार पर बंगाली में एक वृहदाकार ग्रंथ 'श्रीरामकृष्णकथामृत' पाँच भागों में प्रकाशित है जिसका

विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ। इस ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद, बंगाल में जन्में व बचपन में वहीं पले-पढ़े, हिन्दी के महान साहित्यकार व छायावादी कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपने प्रखर बंगाली ज्ञान के आधार पर यथार्थरूप में बड़ी भक्ति एवं तन्मयता से 'श्रीरामकृष्णवचनामृत' के नाम से किया है। यहाँ इन दो महापुरुषों के साक्षात्कार की कथा उन्हीं के शब्दों में सामान्य संशोधन के साथ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत हैः

(श्रीरामकृष्ण उनके यहाँ लगभग पाँच घंटे रहे और लंबी आध्यात्मिक चर्चा की। उन्होंने वहाँ कई भावपूर्ण भजन भी गाए। उनका ध्येय विद्यासागर को ब्रह्मज्ञान की तरफ आकर्षित करने का था। लंबे सत्संग के बाद उनसे अपने पास आने का वचन भी लिया जिसे विद्यासागर पूरा न कर सके!)

आज शनिवार है, श्रावण कृष्णा षष्ठी, ५ अगस्त १८८२ ई.। दिन के चार बजे होंगे।

श्रीरामकृष्ण किराये की घोड़ागाड़ी पर कलकत्ते के रास्ते बादुड़बागान की तरफ जा रहे हैं। भवनाथ, हाजरा और मास्टर (श्री म) साथ में हैं। आप पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के घर जाएँगे।

श्रीरामकृष्ण की जन्मभूमि जिला हुगली के अन्तर्गत कामारपुकुर गाँव है, जो पण्डित विद्यासागर की जन्मभूमि बीरसिंह गाँव से १० किमी० उत्तर में है। श्रीरामकृष्णदेव बाल्यकाल से ही विद्यासागर की दया की चर्चा सुनते आए हैं। दक्षिणेश्वर के कालीमन्दिर में प्रायः उनके पाण्डित्य और दया की बातें सुना करते हैं। यह सुनकर कि मास्टर (श्री म) विद्यासागर के स्कूल में पढ़ाते हैं, आपने उनसे पूछा, 'क्या मुझे विद्यासागर के पास ले चलोगे? मुझे उन्हें देखने की बड़ी इच्छा होती है।' मास्टर ने जब विद्यासागर से यह बात कही तो उन्होंने हर्ष के साथ किसी शनिवार को चार बजे उन्हें साथ लाने को कहा। केवल यही पूछा – 'कैसे परमहंस हैं? क्या वे गेरुए कपड़े पहनते हैं?' मास्टर ने कहा – 'जी नहीं, वे एक अद्भुत पुरुष हैं; लाल किनारीदार धोती पहनते हैं, कुरता पहनते हैं, पालिश किए हुए स्लीपर पहनते हैं, रानी रासमणि के कालीमन्दिर की एक कोठरी में रहते हैं, जिसमें एक तखत है और उस पर बिस्तर और मच्छरदानी, उस बिस्तर पर लेटते हैं। कोई बाहरी भेष तो नहीं है, पर सिवाय ईश्वर के और कुछ नहीं जानते, अहर्निश उन्हीं का चिन्तन किया करते हैं।'

गाड़ी दक्षिणेश्वर कालीमन्दिर से चलकर श्यामबाजार होते हुए अब अमहर्स्ट स्ट्रीट में आयी है। श्रीरामकृष्ण बालक की भाँति आनन्द से बातचीत करते हुए आ रहे हैं। अमहर्स्ट स्ट्रीट में आकर एकाएक उनका भावान्तर हुआ – मानो ईश्वरावेश होना चाहता है। गाड़ी राममोहन राय के बाग की बगल से आ रही है। मास्टर ने श्रीरामकृष्ण का भावान्तर नहीं देखा, झट कह दिया – 'यह राममोहन राय का बाग है।' श्रीरामकृष्ण नाराज हुए, कहा, 'अब ये बातें अच्छी नहीं लगतीं।' परमहंस भावाविष्ट हो रहे हैं।

विद्यासागर के मकान के सामने गाड़ी खड़ी हुई। मकान दुमंजिला है, साहबी ढंग से सजा हुआ है। मकान के चारों ओर खुली जगह है जो दीवार से घिरी हुई है। मकान के पश्चिम की ओर फाटक है। आँगन में बीच बीच में पुष्पवृक्ष लगे हुए हैं। नीचे पश्चिमवाले कमरे में ऊपर चढ़ने के लिए जीना है। विद्यासागर ऊपर रहते हैं। जीने से चढ़कर ऊपर जाते ही उत्तर की ओर एक कमरा है, उसके पूर्व की ओर एक हाल है। हॉल के दक्षिण-पूर्ववाले कमरे में विद्यासागर सोया करते हैं। दक्षिण की ओर और एक कमरा है। ये सारे कमरे कीमती पुस्तकों से भरे हैं। पुस्तकों पर सुन्दर जिल्द लगवाकर उन्हें अच्छी तरह सजाकर रखा गया है। हॉल के पूर्व की ओर मेज और कुर्सी है। यहीं बैठकर विद्यासागर काम किया करते हैं। जो लोग उनसे मिलने आते हैं वे मेज के तीनों ओर रखी हुई कुर्सियों पर बैठा करते हैं। मेज पर कागज, कलम, स्याही आदि लिखने की वस्तुएँ, बहुतसी चिट्ठियाँ, और कुछ पुस्तकें रखी हुई हैं। इस मेज के दक्षिण दिशा के कमरे में एक छोटा बिछौना है। यहींपर आप शयन करते हैं।

मेज पर जो चिट्ठियाँ रखी हुई हैं उनमें क्या लिखा है? शायद किसी विधवा ने लिखा है, 'मेरा नाबालिग बच्चा अनाथ है, उसकी ओर देखनेवाला कोई नहीं, आप ही को उसकी ओर देखना होगा।' किसी ने लिखा है, 'आप कहीं चले गए थे, इसलिए हमें इस माह का पैसा समय पर नहीं मिला, बड़ी तकलीफ हुई।' किसी गरीब छात्र ने लिखा है, 'आपके स्कूल में निःशुल्क भरती तो हो गया हूँ, पर मुझमें पुस्तकें खरीदने की भी सामर्थ्य नहीं है।' किसी ने लिखा है, 'मेरे परिवार के लोगों को खाने को नहीं मिल रहा है – मुझे एक नौकरी लगवा देनी होगी।' उनके स्कूल के किसी शिक्षक ने लिखा है, 'मेरी बहन विधवा हो गयी है, उसका सारा भार मुझ पर आ पड़ा है, इतनी तनख्वाह में मेरा गुजर नहीं हो पाएगा।' शायद किसी ने विलायत से पत्र लिखा है, 'मैं यहाँ विपत्ति में पड़ा हूँ; आप दीनबन्धु हैं, कुछ मदद भेजकर इस संकट से मेरी रक्षा करें।' किसी ने लिखा है, 'अमुक तारीख को हमारे फैसले का दिन निश्चित हुआ है, उस दिन आप आकर हमारा झगड़ा मिटा दें।'

श्रीरामकृष्णदेव गाड़ी से उतरे। मास्टर राह बताते हुए आपको मकान के भीतर ले जा रहे हैं। आँगन में फूलों के पेड़ हैं। उनके बीच में से जाते हुए श्रीरामकृष्ण बालक की तरह बटन में हाथ लगाकर मास्टर से पूछ रहे हैं, 'कुरते के बटन खुले हुए हैं – इसमें कुछ हानि तो न होगी?' बदन पर एक सूती कुरता है और लाल किनारे की धोती पहने हुए हैं, जिसका एक

छोर कन्धे पर पड़ा हुआ है। पैरों में स्लीपर है। मास्टर ने कहा – 'आप इस सब के लिए चिन्ता न कीजिये, आपकी कहीं कुछ त्रुटि न होगी। आपको बटन नहीं लगाना पड़ेगा।' समझाने पर लड़का जैसे शान्त हो जाता है, आप भी वैसे शान्त हो गए।

श्रीरामकृष्ण भक्तों के साथ जीने से चढ़कर पहले कमरे में (जो उत्तर की तरफ था) गए। कमरे में उत्तरी हिस्से में विद्यासागर दक्षिणाभिमुख बैठे हैं। सामने एक चौकोर लम्बी चिकनी मेज है। इसी के पास एक बेंच है। मेज के आसपास कुछ कुर्सियाँ हैं। विद्यासागर दो एक मित्रों से बातचीत कर रहे थे। श्रीरामकृष्ण के प्रवेश करते ही विद्यासागर ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। श्रीरामकृष्ण मेज के पूर्व की ओर खड़े हैं – बायाँ हाथ मेज पर है; पीछे वह बेंच है। विद्यासागर को पूर्वपरिचित की भाँति एकटक देखते हैं और भावावेश में हँसते हैं।

विद्यासागर की उम्र तिरसठ के लगभग होगी। श्रीरामकृष्ण से वे सोलह-सत्रह वर्ष बड़े होंगे। मोटी धोती पहने हुए हैं, पैरों में स्लीपर, और बदन में एक आधी आस्तीन का फलालैन का कुरता। सिर का निचला हिस्सा चारों तरफ उड़िया लोगों की तरह मुँड़ा हुआ है। बोलने के समय उज्ज्वल दाँत नजर आते हैं –सभी दाँत नकली हैं। सिर खूब बड़ा है, ललाट ऊँचा है, कद कुछ छोटा। ब्राह्मण हैं, इसलिए गले में जनेऊ है।

विद्यासागर में अनेक गुण हैं। पहला गुण – विद्यानुराग। एक दिन मास्टर से यह कहते हुए सचमुच ही रो पड़े थे कि मेरी तो तीव्र इच्छा थी कि खूब विद्या-अध्ययन करूँ, पर कुछ न हो सका; संसार में पड़ जाने के कारण बिलकुल समय नहीं मिला। दुसरा गुण – सर्व जीवों पर दया। विद्यासागर दया के सागर हैं। बछड़ों को माँ का दूध नहीं मिलता यह देखकर दूध पीना छोड़ ही दिया था; आखिर कई साल बाद स्वास्थ्य बहुत अधिक बिगड़ जाने के कारण फिर दूध शुरू करना पड़ा था। गाड़ी में नहीं चढ़ते थे – घोड़ा बेचारा अपना कष्ट जता नहीं सकता, चुपचाप सहता जाता है। एक दिन आपने देखा, एक बोझ ढोनेवाले हम्माल को हैजा हो गया है, वह रास्ते पर पड़ा हुआ है, पास ही उसकी टोकरी पड़ी है। देखते ही आप स्वयं उसे उठाकर अपने घर ले आए और उसकी सेवाशुश्रूषा करने लगे। तीसरा गुण – स्वाधीनताप्रीति। अधिकारियों के साथ एकमत न होने के कारण संस्कृत कालेज के प्रधानाध्यापक (प्रिन्सिपल) का पद छोड़ दिया। चौथा गुण – लोगों की निन्दास्तुति की परवाह नहीं थी। एक शिक्षक पर आपका स्नेह था, उनकी बेटी के विवाह के समय बगल में उसे उपहार देने के लिए नया वस्त्र दाबकर आ खड़े हुए। पाँचवाँ गुण – मातृभक्ति तथा मानसिक बल। माँ ने कहा था, 'ईश्वर, तुम यदि इस विवाह में (भाई के विवाह में) नहीं आओगे तो मेरे मन में बड़ा दुख होगा।' इसलिए कलकत्ते से पैदल ही निकल पड़े। राह में दामोदर नदी थी। नाव नहीं थी, – तैरकर ही उस पार चले गए। विवाह की रात्रि को गीले कपड़ों में माँ के सामने जा पहुँचे, कहा, 'माँ, मैं आ गया।'

श्रीरामकृष्ण भावाविष्ट हो रहे हैं और थोड़ी देर के लिए उसी दशा में खड़े हैं। भाव सम्हालने के लिए बीच बीच में कहते हैं कि पानी पीऊँगा। इस बीच में घर के लड़के और आत्मीय बन्धु भी आकर खड़े हो गए।---

----विद्यासागर ने व्यग्र होकर किसी से पानी लाने को कहा और मास्टर से पूछा, 'कुछ मिठाई लाऊँ, क्या ये खाएँगे?' मास्टर ने कहा, 'जी हाँ, ले आइये।' विद्यासागर जल्दी से भीतर जाकर कुछ मिठाइयाँ ले आए और कहा कि ये बर्दवान से आयी हैं। श्रीरामकृष्ण को कुछ खाने को दी गयी; हाजरा और भवनाथ ने भी कुछ पायी। जब मास्टर की बारी आयी तो विद्यासागर ने कहा, 'वह तो घर ही का लड़का है, उसके लिए चिन्ता नहीं।' श्रीरामकृष्ण एक भक्त लड़के के बारे में विद्यासागर से कह रहे हैं, जो सामने ही बैठा था। आपने कहा, 'यह लड़का बड़ा अच्छा है, और इसके भीतर सार है, जैसे फल्गु नदी; ऊपर तो रेत है, पर थोड़ा खोदने से ही भीतर पानी बहता दिखायी देता है।'

मिठाई पा चुकने के बाद आप हँसते हुए विद्यासागर से बातचीत कर रहे हैं। देखते ही देखते कमरा दर्शकों से भर गया; कोई बैठा है, कोई खड़ा है।

श्रीरामकृष्ण – आज सागर से आ मिला। इतने दिन खाई, सोता और अधिक से अधिक हुआ तो नदी देखी, पर अब सागर देख रहा हूँ। (सब हँसते हैं।) (अपनी प्रशंसा सुन संकोचीत होकर विनम्रता के भाव में) विद्यासागर – तो थोड़ा खारा पानी लेते जाइये। (हास्य)

श्रीरामकृष्ण – नहीं जी, खारा पानी क्यों? तुम तो अविद्या के सागर नहीं, विद्या के सागर हो! (सब हँसे।) तुम क्षीरसमुद्र हो! (सब हँसे।)

विद्यासागर – आप जो चाहें कह सकते हैं।

श्रीरामकृष्ण फिर कहने लगे –'तुम्हारा कर्म सात्त्विक कर्म है। यह सत्त्व का रजस् है। सत्त्वगुण से दया होती है। दया से जो कर्म किया जाता है, वह है तो राजसिक कर्म सही, पर यह रजोगुण सत्त्व का रजोगुण है, इसमें दोष नहीं है। शुकदेव आदि ने लोकशिक्षा के लिए दया रख ली थी – ईश्वर के विषय में शिक्षा देने के लिए। तुम विद्यादान और अन्नदान कर रहे हो – यह भी अच्छा है। निष्काम रीति से कर सको तो इससे ईश्वर-लाभ होगा। कोई करता है नाम के लिए, कोई पुण्य के लिए – उनका कर्म निष्काम नहीं। 'फिर सिद्ध तो तुम हो ही।'

विद्यासागर – महाराज, यह कैसे?

श्रीरामकृष्ण (सहास्य) – आलू-परवल सिद्ध होने से (पक जाने से) नरम हो जाते हैं – सो तुम भी बहुत नर्म हो। तुम्हारी ऐसी दया! (हास्य)

विद्यासागर (सहास्य) – पीसा उरद तो सिद्ध होने पर सख्त हो जाता है। (सब हँसे।)

श्रीरामकृष्ण – तुम वैसे क्यों होने लगे? खाली पण्डित कैसे हैं – मानो एक पके फल का अंश जो अन्त तक कठिन ही रह जाता है। वे न इधर के हैं न उधर के।----आसक्ति का घर अविद्या के संसार में है। दया, भक्ति, वैराग्य – ये विद्या के ऐश्वर्य हैं।-----

विद्यासागर चुपचाप सुन रहे हैं। सभी टकटकी बाँधे इस आनन्दमय पुरुष को देख रहे हैं, उनका वचनामृत पान कर रहे है।

विद्यासागर बड़े विद्वान् हैं। जब संस्कृत कालेज में पढ़ते थे तब अपनी श्रेणी के सबसे अच्छे छात्र थे। हरएक परीक्षा में प्रथम होते और स्वर्णपदक आदि अथवा छात्रवृत्तियाँ पाते थे। होते होते वे संस्कृत कालेज के प्रधान अध्यापक तक हुए थे। संस्कृत व्याकरण तथा काव्य में उन्होंने विशेष ज्ञान प्राप्त किया था। स्वयं के प्रयत्न से अंग्रेजी सीखी थी।

विद्यासागर किसी को धर्मशिक्षा नहीं देते थे। वे दर्शनादि ग्रन्थ पढ़ चुके थे। मास्टर ने एक दिन उनसे पूछा, 'आपको हिन्दू दर्शन कैसे लगते हैं?' उन्होंने जवाब दिया, 'मुझे यही मालूम होता है कि वे जो चीज समझाने गए उसे समझा न सके।' वे हिन्दुओं की भाँति श्राद्धादि सब धर्मानुष्ठान करते थे, गले में जनेऊ धारण करते थे, अपनी भाषा में जो पत्र लिखते थे, उनमें सबसे पहले 'श्रीश्रीहरिः शरणम्' यह ईश्वरवन्दनात्मक वाक्य लिखते थे।

मास्टर ने और एक दिन उनको ईश्वर के विषय में यह कहते सुना, 'ईश्वर को कोई जान तो सकता नहीं। फिर करना क्या चाहिए? मेरी समझ में, हम लोगों को ऐसा होना चाहिए कि यदि सब कोई वैसे हों तो यह पृथ्वी स्वर्ग बन जाय। हरएक को ऐसी चेष्टा करनी चाहिए कि जिससे जगत् का भला हो।'

विद्या और अविद्या की चर्चा करते हुए श्रीरामकृष्ण ब्रह्मज्ञान की बात कह रहे हैं। विद्यासागर बड़े पण्डित हैं – शायद षड्दर्शन पढ़कर उन्होंने देखा है कि ईश्वर के विषय में कुछ भी जानना सम्भव नहीं।

श्रीरामकृष्ण – ब्रह्म विद्या और अविद्या दोनों के परे है, वह मायातीत है।---'ब्रह्म क्या है सो मुँह से नहीं कहा जा सकता। सभी चीजें जूठी हो गयी हैं; वेद, पुराण, तन्त्र, षड्दर्शन सब जूठे हो गये हैं। मुँह से पढ़े गए हैं, मुँह से उच्चारित हुए हैं – इसी से जूठे हो गए। पर केवल एक वस्तु जूठी नहीं हुई है – वह वस्तु ब्रह्म है। ब्रह्म क्या है यह आज तक कोई मुँह से नहीं कह सका।'

विद्यासागर (मित्रों से) – वाह! यह तो बड़ी सुन्दर बात हुई! आज मैंने एक नयी बात सीखी।

श्रीरामकृष्ण – .... ब्रह्म क्या है यह मुँह से नहीं कहा जा सकता।--- 'देखो न, यह जगत् कैसा विचित्र है! कितने प्रकार की वस्तुएँ – चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र – कितने प्रकार के जीव इसमें हैं! बड़ा-छोटा, अच्छा-बुरा; किसी में शक्ति अधिक है, किसी में कम।'

विद्यासागर – क्या ईश्वर ने किसी को अधिक शक्ति दी है और किसी को कम?

श्रीरामकृष्ण – वह विभु के रूप में सब प्राणियों में है – चींटियों तक में है। पर शक्ति का तारतम्य होता है; नहीं तो क्यों कोई दस आदमियों को हरा देता है, और कोई एक ही आदमी से भागता है? और ऐसा न हो तो भला तुम्हें ही सब कोई क्यों मानते हैं? क्या तुम्हारे दो सींग निकले हैं? (हास्य।) औरों की अपेक्षा तुममें अधिक दया है, विद्या है, इसीलिए तुमको लोग मानते हैं और देखने आते हैं। क्या तुम यह बात नहीं मानते हो? (विद्यासागर विनम्रता से मुसकराते हैं।)

श्रीरामकृष्ण – केवल पण्डिताई में कुछ नहीं है। लोग किताबें इसलिए पढ़ते हैं कि वे ईश्वरलाभ में सहायता करेंगी – उनसे ईश्वर का पता लगेगा। 'आपकी पोथी में क्या है?' – किसी ने एक साधु से पूछा। साधु ने उसे खोलकर दिखाया। हरएक पन्ने में 'ॐ रामः' लिखा था, और कुछ नहीं।--- 'मैं और मेरा – ये दोनों अज्ञान हैं। यह भाव कि मेरा घर है, मेरे रुपये हैं, मेरी विद्या है, मेरा यह सब ऐश्वर्य है – अज्ञान से पैदा होता है और यह भाव ज्ञान से कि हे ईश्वर, तुम कर्ता हो और ये सब तुम्हारी चीजें हैं – घर-परिवार, लड़के-बच्चे, स्वजनवर्ग, बन्धु-बान्धव – ये सब तुम्हारी वस्तुएँ हैं।---- 'मृत्यु का सर्वदा स्मरण रखना चाहिए। मरने के बाद कुछ भी न रह जाएगा।----

'भगवान् दो बातों पर हँसते हैं। एक तो जब वैद्य रोगी की माँ से कहता है – माँ, क्या भय है? मैं तुम्हारे लड़के को अच्छा कर दूँगा। उस समय भगवान् यह सोचकर हँसते हैं कि मैं मार रहा हूँ और यह कहता है, मैं बचाऊँगा। वैद्य सोचता है – मैं कर्ता हूँ। ईश्वर कर्ता है – यह वह भूल गया है। दूसरा अवसर वह होता है जब दो भाई रस्सी लेकर जमीन नापते हैं और कहते हैं – इधर की मेरी है, उधर की तुम्हारी। तब ईश्वर और एक बार हँसते हैं; यह सोचकर हँसते हैं कि जगत्-ब्रह्माण्ड मेरा है, पर ये कहते हैं, यह जगह मेरी है और वह तुम्हारी।'

श्रीरामकृष्ण – उन्हें क्या कोई विचार द्वारा जान सकता है? दास होकर – शरणागत होकर उन्हें पुकारो। (विद्यासागर के प्रति, हँसते हुए) – 'अच्छा, तुम्हारा भाव क्या है?' विद्यासागर

मुसकरा रहे हैं। कहते हैं, 'अच्छा, यह बात आपसे किसी दिन निर्जन में कहूँगा।' (सब हँसे।)

श्रीरामकृष्ण (सहास्य) – उन्हें पाण्डित्य द्वारा विचार करके कोई जान नहीं सकता।

यह कहकर श्रीरामकृष्ण प्रेम से मतवाले होकर गाने लगे। संगीत का मर्म है –

'कौन जानता है कि काली कैसी है? षड्दर्शनों ने उसका दर्शन नहीं पाया।---

'सुना? कहते हैं – माता के जिस उदर में ब्रह्माण्ड समाया हुआ है समझो कि वह कितना बड़ा है' और यह भी कहा है कि षड्दर्शनों ने उसका दर्शन नहीं पाया। पाण्डित्य द्वारा उसे प्राप्त करना असम्भव है।--- 'विश्वास और भक्ति चाहिए। विश्वास कितना बलवान है, सुनो।---

'यह कहावत प्रसिद्ध है कि रामनाम पर हनुमान का इतना विश्वास था कि विश्वास ही के बल से वे समुद्र लाँघ गये, परन्तु स्वयं राम को सेतु बाँधना पड़ा था। यह कहकर श्रीरामकृष्ण भक्त के भावों से मस्त होकर विश्वास का माहात्म्य गा रहे हैं---

'विश्वास और भक्ति। भक्ति से वे सहज ही में मिलते हैं। वे भाव के विषय हैं।' यह कहते हुए श्रीरामकृष्ण ने फिर भजन आरम्भ किया----

'मन तू अँधेरे घर में पागल जैसा उसकी खोज क्यों कर रहा है? वह तो भाव का विषय है। --- गाते हुए श्रीरामकृष्ण समाधिस्थ हो गए, हाथों की अंजलि बँध गयी – देह उन्नत और स्थिर, – नेत्र स्पन्दहीन हो गए। पश्चिम की ओर मुँह किये उसी बेंच पर पैर लटकाए बैठे रहे। सभी लोग गर्दन ऊँची करके यह अद्भुत अवस्था देखने लगे। पण्डित विद्यासागर भी चुपचाप एकटक देख रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण प्रकृतिस्थ हुए। लम्बी साँस छोड़कर फिर हँसते हुए बातें कर रहे हैं – 'भाव भक्ति, इसके माने उन्हें प्यार करना। जो ब्रह्म हैं, उन्हीं को माँ कहकर पुकारते हैं।--- 'रामप्रसाद (भक्त-कवि) मन को इशारे ही से समझने के लिए उपदेश करते हैं। यह समझने को कहते हैं कि वेदों ने जिन्हें ब्रह्म कहा है उन्हीं को मैं माँ कहकर पुकारता हूँ। जो निर्गुण हैं वे ही सगुण हैं; जो ब्रह्म हैं वे ही शक्ति हैं। जब यह बोध होता है कि वे निष्क्रिय हैं तब उन्हें ब्रह्म कहता हूँ और जब यह सोचता हूँ कि वे सृष्टि, स्थिति और प्रलय करते हैं, तब उन्हें आद्याशक्ति काली कहता हूँ।

'ब्रह्म और शक्ति अभेद हैं, जैसे कि अग्नि और उसकी दाहिकाशक्ति। अग्नि कहते ही दाहिकाशक्ति का ज्ञान होता है और दाहिकाशक्ति कहने से अग्नि का ज्ञान। एक को मानिए तो दूसरा भी साथ मान लिया जाता है।

'उन्हीं को भक्तजन माँ कहकर पुकारते हैं। माँ बड़े प्यार की वस्तु है न। ईश्वर को प्यार करने से वे प्राप्त होते हैं; भाव, भक्ति, प्रीति और विश्वास चाहिए। एक गाना और सुनो –

(भावार्थ) – 'चिन्तन करने से भाव का उदय होता है। जैसा भाव होगा, लाभ भी वैसा होगा, मूल है प्रत्यय। काली के चरण-सुधासागर में यदि चित्त डूब जाय तो पूजा-होम, याग-यज्ञ – कुछ भी आवश्यक नहीं।'

'तुम जो काम कर रहे हो, ये सब अच्छे कर्म हैं। यदि 'मैं कर्ता हूँ' इस भाव को छोड़कर निष्काम भाव से कर्म कर सको तो और भी अच्छा है। यह कर्म करते करते ईश्वर पर भक्ति और प्रीति होगी। इस प्रकार निष्काम कर्म करते जाओ तो ईश्वर-लाभ भी होगा।

'उन पर जितनी ही भक्ति-प्रीति होगी, उतने ही तुम्हारे काम घटते जाएँगे।.... तुम जो काम कर रहे हो, उससे तुम्हारा ही उपकार है। निष्काम भाव से कर्म कर सकोगे तो चित्त की शुद्धि होगी, ईश्वर पर तुम्हारा प्रेम होगा। प्रेम होते ही तुम उन्हें प्राप्त कर लोगे। संसार का उपकार मनुष्य नहीं करता, वे ही करते हैं जिन्होंने चन्द्र-सूर्य की सृष्टि की, माता-पिता को स्नेह दिया, सत्पुरुषों में दया का संचार किया और साधु-भक्तों को भक्ति दी। जो मनुष्य कामनाशून्य होकर कर्म करेगा वह अपना ही हित करेगा।....

'भीतर सुवर्ण है, अभी तक तुम्हें पता नहीं चला। ऊपर कुछ मिट्टी पड़ी है। यदि एक बार पता चल जाय तो अन्य काम घट जाएँगे।---

'निष्काम कर्म कर सकने से ईश्वर पर प्रेम होता है। क्रमशः उनकी कृपा से उन्हें लोग पाते भी हैं। ईश्वर के दर्शन होते हैं, उनसे बातचीत होती है जैसे कि मैं तुमसे वार्तालाप कर रहा हूँ।' (सब निःशब्द हैं।)

सब की जबान बन्द है। लोग चुपचाप बैठे ये बातें सुन रहे हैं। श्रीरामकृष्ण की जिह्वा पर मानो साक्षात् वाग्वादिनी बैठी हुई जीवों के हित के लिए विद्यासागर से बातें कर रही हैं। रात हो रही है – नौ बजने को है। श्रीरामकृष्ण अब चलनेवाले हैं।

श्रीरामकृष्ण (विद्यासागर से, सहास्य) – यह सब जो कहा, वह तो ऐसे ही कहा। आप सब जानते हैं, किन्तु अभी आपको इसकी खबर नहीं। (सब हँसे।) वरुण के भण्डार में कितने ही रत्न पड़े हैं, परन्तु वरुण महाराज को कोई खबर नहीं।

विद्यासागर (विनम्रता से हँसते हुए) – यह आप कह सकते हैं।

श्रीरामकृष्ण (सहास्य) – हाँ जी, अनेक बाबू नौकरों के

नाम तक नहीं जानते! (सब हँसते हैं।) घर में कहाँ कौनसी कीमती चीज पड़ी है, वे नहीं जानते।

वार्तालाप सुनकर लोग आनन्दित हो रहे हैं। थोड़ी देर के लिए सब लोग शांत हो गए। श्रीरामकृष्ण विद्यासागर से फिर प्रसंग उठाते हैं।

श्रीरामकृष्ण (हँसमुख) – एक बार बगीचा देखने जाइए, रासमणि का बगीचा। बड़ी अच्छी जगह है।

विद्यासागर – जरूर जाऊँगा। आप आए और मैं न जाऊँगा? श्रीरामकृष्ण – मेरे पास? राम राम

विद्यासागर – यह क्या! ऐसी बात आपने क्यों कही? मुझे समझाइए।

श्रीरमकृष्ण (सहास्य) – हम लोग छोटी छोटी किश्तियाँ हैं जो खाई, नाले और बड़ी नदियों में भी जा सकती हैं। परन्तु आप हैं जहाज; कौन जानता है, जाते समय रेत में लग जाय! (सब हँसतेहैं।) विद्यासागर प्रफुल्लमुख किन्तु चुपचाप बैठे हैं। श्रीरामकृष्ण हँसते हैं।

श्रीरामकृष्ण – पर हाँ, इस समय जहाज भी जा सकता है। विद्यासागर – (हँसते हुए) – हाँ, ठीक है, यह वर्षाकाल है। (लोग हँसे।)

मास्टर (स्वगत) – नवानुराग की वर्षा, नवानुराग जब होता है, तब मान-अपमान का बोध क्या रह सकता है।

श्रीरामकृष्ण उठे। भक्तजन भी उठे। विद्यासागर आत्मीयों के साथ विनम्रता से खड़े हैं, श्रीरामकृष्ण को गाड़ी पर चढ़ाने जाएँगे।

श्रीरामकृष्ण अब भी खड़े हैं। करजाप कर रहे हैं। जपते हुए भाव के आवेश में आ गए, मानो विद्यासागर के आत्मिक हित के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हों।

भक्तों के साथ श्रीरामकृष्ण उतर रहे हैं। एक भक्त हाथ पकड़े हुए हैं। विद्यासागर स्वजन-बन्धुओं के साथ आगे आगे जा रहे हैं, हाथ में बत्ती लिए रास्ता दिखाते हुए। सावन की कृष्णपक्ष की षष्ठी है, अभी चन्द्रोदय नहीं हुआ है। अँधेरे से ढकी हुई उद्यान-भूमि को बत्ती के मन्द प्रकाश के सहारे किसी तरह पार कर लोग फाटक की ओर आ रहे हैं। श्रीरामकृष्ण भक्तों के साथ गाड़ी पर बैठ गए।

विद्यासागर (मास्टर से धीमी आवाज में) – गाड़ी का किराया क्या दे दें? मास्टर – जी नहीं, दे दिया गया है।

विद्यासागर और अन्यान्य लोगों ने श्रीरामकृष्ण को प्रणाम किया।

गाड़ी उत्तर की ओर चलने लगी, दक्षिणेश्वर काली मन्दिर को जाएगी। सब लोग गाड़ी की ओर देखते हुए खड़े हैं। सोच रहे हैं – ये महापुरुष कौन हैं? ये ईश्वर पर कितना प्रेम करते हैं फिर जीवों के घर घर जाकर कहते हैं कि ईश्वर पर प्रेम करना ही जीवन का उद्देश्य है। जब तक गाड़ी आँखों से ओझल नहीं हो गई विद्यासागर हाथ में बत्ती लिए लोगों के आगे परमहंस को विदा होते देख श्रद्धापूर्वक टकटकी लगाए खड़े रहे।

****

दिन बृहस्पतिवार है, सावन शुक्ला दशमी, २४ अगस्त १८८२ ई.। (विद्यासागर के घर से लौटनें के १९ दिनों के बाद)

श्रीरामकृष्ण दक्षिणेश्वर मन्दिर में भक्तों के साथ विराजमान हैं। मास्टर ने भूमिष्ठ हो श्रीरामकृष्ण की चरणवन्दना की।

श्रीरामकृष्ण का मुख सहास्य है। मास्टर से कहने लगे – 'विद्यासागर से और भी दो एक बार मिलना चाहिए। चित्रकार पहले नक्शा खींच लेता है, फिर उस पर रंग चढ़ाता रहता है। प्रतिमा पर पहले दो तीन बार मिट्टी चढ़ायी जाती है, फिर सफेद रंग चढ़ाया जाता है, फिर वह ढंग से रँगी जाती है। – विद्यासागर का सब कुछ ठीक है, सिर्फ ऊपर कुछ मिट्टी पड़ी हुई है। कुछ अच्छे काम करता है; परन्तु हृदय में क्या है उसकी खबर नहीं। हृदय में सोना दबा पड़ा है। हृदय में ईश्वर है, – यह समझने पर सब कुछ छोड़कर व्याकुल हो उसे पुकारने की इच्छा होती है।

****

एक दिन श्री म ने श्रीरामकृष्ण से विद्यासागर के एक प्रश्न - क्या ईश्वर निष्ठुर हैं? ईश्वर ने इतना दुःख क्यों बनाया?- की चर्चा की-

मास्टर – विद्यासागर प्रेमकोप से कहते हैं, 'ईश्वर को पुकारने की क्या आवश्यकता है! देखो चंगेजखाँ ने जिस समय लूटमार करना आरम्भ किया उस समय उसने अनेक लोगों को बन्द कर दिया। धीरे धीरे करीब एक लाख कैदी इकट्ठे हो गए। तब सेनापतियों ने आकर कहा, 'हुजूर, इन्हें खिलाएगा कौन? इन्हें साथ रखने पर भी हमारे लिए विपत्ति है। क्या किया जाए? छोड़ने पर भी विपत्ति है।' उस समय चंगेजखाँ ने कहा, 'तो फिर क्या किया जाए? उनका वध कर डालो।' इसलिए कचाकच काट डालने का आदेश हो गया! इस हत्याकाण्ड को तो ईश्वर ने देखा। कहाँ, निवारण भी तो नहीं किया। वे हैं, तो रहें। मुझे उनकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। मेरा तो कोई भला न हुआ!'

श्रीरामकृष्ण – 'क्या ईश्वर का काम, वे किस उद्देश्य से क्या करते हैं समझा जा सकता है? वे सृष्टि, पालन, संहार सभी कर रहे हैं। वे क्यों संहार कर रहे हैं, हम क्या समझ सकते हैं? मैं कहता हूँ, माँ, मुझे समझने की आवश्यकता भी नहीं है। बस, अपने चरणकमल में भक्ति दो। मनुष्य-जीवन का उद्देश्य

है इसी भक्ति को प्राप्त करना। और सब माँ जानें। बगीचे में आम खाने को आया हूँ, कितने पेड़, कितनी शाखाएँ, कितने करोड़ पत्ते हैं – यह सब हिसाब करने से मुझे क्या मतलब? मैं आम खाता हूँ, पेड़ और पत्तों के हिसाब से मेरा क्या सम्बन्ध?'

*****

२२ जुलाई १८८३

भक्त – महाराज, आपने विद्यासागर को देखा है? कैसा देखा?

श्रीरामकृष्ण – विद्यासागर के पाण्डित्य है, दया है, परन्तु अन्तर्दृष्टि नहीं है। भीतर सोना दबा पड़ा है, यदि इसकी खबर उसे होती तो इतना बाहरी काम जो वह कर रहा है, वह सब घट जाता और अन्त में एकदम त्याग हो जाता। भीतर, हृदय में ईश्वर हैं यह बात जानने पर उन्हीं के ध्यान और चिन्तन में मन लग जाता। किसी किसी को बहुत दिन तक निष्काम कर्म करते करते अन्त में वैराग्य होता हैं और मन उधर मुड़ जाता है – ईश्वर से लग जाता है।

'जैसा काम ईश्वर विद्यासागर कर रहा है वह बहुत अच्छा है। दया बहुत अच्छी है। दया और माया में बड़ा अन्तर है। दया अच्छी है, माया अच्छी नहीं। माया का अर्थ है आत्मीयों से प्रेम – अपनी स्त्री, पुत्र, भाई, बहन, भतीजा, भानजा, माँ, बाप इन्हीं से प्रेम। दया अर्थात् सब प्राणियों से समान प्रेम।

मास्टर – क्या दया भी एक बन्धन है?

श्रीरामकृष्ण – वह तो बहुत दूर की बात ठहरी। दया सतोगुण से होती है। सतोगुण से पालन, रजोगुण से सृष्टि और तमोगुण से संहार होता है, परन्तु ब्रह्म सत्त्व, रज, तम इन तीनों गुणों से परे है – प्रकृति से परे है ------'जहाँ यथार्थ तत्त्व है वहाँ तक गुणों की पहुँच नहीं। जैसे चोर-डाकू किसी ठीक जगह पर नहीं जा सकते; वे डरते हैं कि कहीं पकड़े न जायें। सत्व, रज, तम ये तीनों गुण डाकू हैं।

*****

बुधवार; भाद्रपद की कृष्णा दशमी, २६ सितम्बर, १८८३ ई.। तीसरे पहर का समय है। मास्टर को स्कूल से आज डेढ़ बजे छुट्टी मिल गयी है।

श्रीरामकृष्ण अपने चिरपरिचित बालसुलभ भाव से विद्यासागर को याद करते हुए अपनी खिन्नता श्री म से प्रकट करतें हैं-

श्रीरामकृष्ण (मास्टर से)– विद्यासागर सच बात क्यों नहीं कहता? 'सत्य बोलता रहे और परायी स्त्री को माता जाने, इन दो बातों से अगर राम न मिलें, तो तुलसीदास कहते हैं, मेरी बातों को झूठ समझो। सत्यनिष्ठ रहने से ही ईश्वर मिलते हैं। विद्यासागर ने उस दिन कहा था यहाँ आऊँगा, परन्तु फिर न आया।' (श्रीरामकृष्णवचनामृत से साभार, विस्तृत अध्ययन के लिए कृपया मूल ग्रंथ का पाठ करें।)

*****

भक्ति-योग का साधक मोक्ष नहीं चाहता, बार-बार जन्म लेकर दासानुदास भाव से अपने इष्ट की सेवा करनें मे ही वह मुक्ति का आनंद पाता है। इसी प्रकार एक कर्मयोगी अपनी निष्काम-भावना से कर्म करते हुए ईश्वर को प्राप्त करता है। एक ज्ञानी भी अपने अहं का नाश कर ब्रह्म की प्राप्ति करता है। मार्ग अलग-अलग हैं किन्तु लक्ष्य एक है। पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एक दृढ़ कर्मयोगी थे। परदुःखकातर्ता एवं दयाशीलता की प्रबल भावना के समक्ष उनका हृदय समर्पित था। उन्होंने श्रीरामकृष्ण को थोड़ा निराश अवश्य किया, किन्तु ईश्वरने संभवतः इन्हें उसी कार्यवश भेजा था जिसका निर्वहन उन्होंने जीवनपर्यंत किया। उन्होंने अपने इस मानवसेवा के कर्तव्य को पूरी निष्ठा से पूरा किया। उनके परोपकार और समाजकल्याण की कथा भारतीय इतिहास में अमर रहेगी। इनका जीवन एवं आदर्श सनातन-धर्म पर आधारित एक अनुकरणीय व्यक्तित्व है जो किसी भी सामान्य मानव को महान बना सकती है। ज्ञान केवल एक साधन है जिससे सच्चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। इसका मनन और अनुकरण करें।

इतिहास का अध्ययन इसलिए भी किया जाता है कि अतीत में की गई त्रुटियों को समझ कर उनकी पुनरावृत्ति से बचा जाय। महापुरुषों के जीवन-चरित्र का ज्ञान भी एक मनोरंजन नहीं, बल्कि इसका ध्येय उनके आदर्शों से शिक्षा लेकर स्वयं का विकासकर एक आदर्श मानव बनने का है। वर्तमान में भारत एक विषम परिस्थिति से पीड़ित है। समाज से सनातन-संस्कृति का ह्रास हो रहा है एवं पाश्चात्य सभ्यता की लुभावनी चमक-दमक के घात में लोग फसते जा रहें हैं। इसका परिणाम निकट भविष्य में ही अपने विकराल रूपमें प्रकट होगा। ऐसा अनुमान लेखक द्वारा लगभग ४५ वर्षों के पाश्चात्य-सांस्कृतिक वातावरण मे बितानें के बाद सहजता से किया गया विश्लेषण है। आशा है, प्रस्तुत निबंध से पाठकगण मनन-चिंतन द्वारा लाभान्वित होंगे और अपनी श्रेष्ठतम सनातन-संस्कृति में पूर्ण दृढ़-विश्वास रखकर उसका गौरवान्वित भाव से अनुकरण करेंगे और सुखी होंगे।

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः। सर्वे भद्राणी पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भागभवेत्।। ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः।।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

शिक्षा के जाज्वल्यमान नक्षत्र

कमलेश कमल

“राष्ट्रीय शिक्षा के पहले शिल्पकार, महान् लेखक, प्रकांड बौद्धिक-बौद्धित व्यक्ति, बांग्ला शिक्षा-पद्धति में क्रांतिकारी सुधार करने वाले, नारी-शिक्षा के लिए अलख जगाने वाले एवं विधवा-पुनर्विवाह हेतु अहर्निश कार्य करने वाले आदि विशेषण सुनते ही जिस विभूति का स्मरण आता है, वे कोई अन्य नहीं, ईश्वर चन्द्र 'विद्यासागर' हैं।”

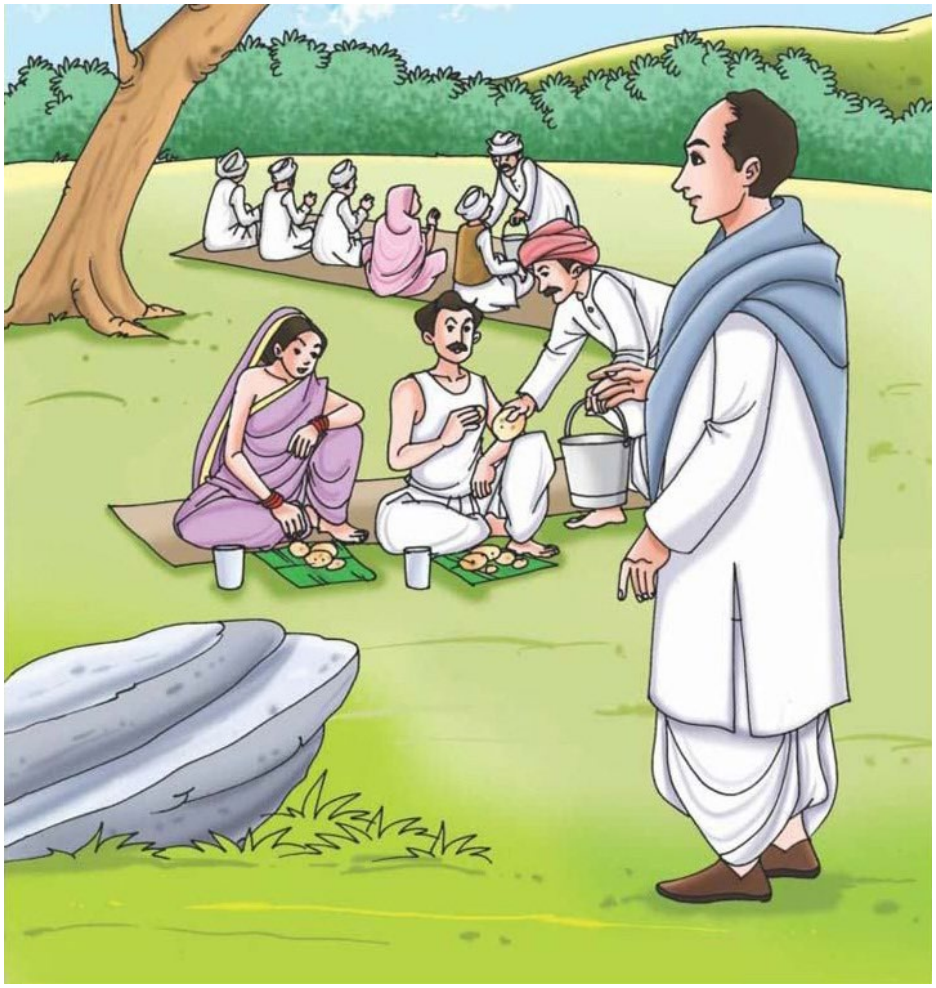

एक ही धर्म 'मानवता का कल्याण' समझने वाले मानवता के जिस पुजारी को माइकल मधुसूदन दत्त ने 'दयासागर' का विशेषण दिया, उनका बचपन अत्यंत दैन्य और दारिद्र्य में बीता। कदाचित् बचपन की इन करुण स्मृतियों ने मिदनापुर (तब हुगली) के वीरासिंहा में 26 सितंबर, 1920 को जन्मे विद्यासागर की

संवेदना को कभी क्षीण नहीं होने दिया

संस्कृत के अगाध ज्ञान और पाण्डित्य के कारण 'विद्यासागर' कहलाने वाले इस विभूति ने संस्कृत को वैज्ञानिक और तार्किक विधि से पढ़ाने की व्यवस्था की, साथ ही इसमें वैज्ञानिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयामों को भी जोड़ा।

आज जिस नई शिक्षानीति की बात हो ही है, उसके आरंभिक सूत्र हमें विद्यासागर के शैक्षणिक सुधारों में दिखता है। इन्होंने भारतीय भाषाओं में न केवल पाश्चात्य ज्ञान-

विज्ञान के विस्तार की बात की, वरन् शिक्षा को रोज़गार से जोड़ने हेतु 'वोकेशनल कोर्स' की भी व्यवस्था की। शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण और अधिक आनंददायक बनाने हेतु इन्होंने कहा कि विद्यार्थी क्रियात्मक ज्ञान लेंगे एवं व्यावहारिक जीवन से सीखेंगे।

इन्होंने वार्षिक परीक्षाओं की जगह मासिक परीक्षाओं का चलन किया ताकि विद्यार्थी वर्ष भर पठन-पाठन को गम्भीरता से लें। ज्ञातव्य है कि संवादात्मक कक्षाएँ (interactive classrooms), मातृभाषा में शिक्षा, छात्रवृत्ति, रविवार को साप्ताहिक अवकाश, गर्मी की छुट्टियों की सोच इनकी ही थी।

निस्सन्देह, इन्होंने प्राथमिक शिक्षा हेतु अनेकानेक कार्य किए। बच्चों के लिए अर्थपूर्ण के साथ-साथ आनंददायक शिक्षा-प्रणाली हेतु कई पुस्तकों की रचना की एवं बांग्ला वर्णमाला की पुनर्संरचना की। स्मर्तव्य है कि 'बर्ण पोरिचय' पुस्तिका आज भी बांग्ला वर्णमाला सीखने की मुख्य पुस्तिका है। इसके अतिरिक्त इन्होंने हिन्दी और अँगरेज़ी की बहुत सी पुस्तकों का बांग्ला में अनुवाद एवं संपादन किया। तत्त्वबोधिनी पत्रिका, सोमप्रकाश, सर्वशुभम्-करी पत्रिका आदि अनेकानेक पत्र-पत्रिकाओं के कुशल संपादन का श्रेय श्री ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को जाता है।

धार्मिक रूप से किसी भी अति से बचते हुए श्री विद्यासागर ने सौम्य-धार्मिकता को अपनाया। यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि यह वह समय था जब यथास्थितिवादी धर्म के परंपरागत रूप को अक्षुण्ण रखने हेतु प्रयासरत थे, डिरोजियो के नेतृत्व में प्रतिक्रियावादी लोग हिंदुत्व और धर्म को त्यागने की बात कर रहे थे; तो राजा राम मोहन राय जैसे विद्वान् धर्म-सुधार की बात कर रहे थे। इन विविध और विपरीत धाराओं के बीच ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा धार्मिक-औदात्य की एक नई धारा में बहना उनके विराट् और मौलिक व्यक्तित्व को दर्शाता है। 'सा विद्या या विमुक्तये' के आदर्श पर इन्होंने पूर्वाग्रहों से मुक्त होने की बात की एवं मानवता के कल्याण को ही सबसे बड़ा धर्म माना। कहा भी जाता है कि पुनर्जागरण के अग्रदूत राजा राम मोहन राय ने जो समाज सुधार आदि हेतु कार्यों को आरम्भ किया, इन्होंने उन्हें आगे बढ़ाया।

श्री विद्यासागर ने शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को शामिल करने हेतु भी कार्य किया। कथामाला, बोधायन आदि नैतिक शिक्षा की पुस्तिकाओं को पाठ्यक्रम में न केवल शामिल किया, बल्कि पाठ के अंत में कहानी से नैतिक सीख क्या मिली– इसे भी उद्धृत किया।

सांस्कृतिक मूल्यों से विहीन शिक्षा से न देश का भला हो सकता है और न ही व्यक्ति का। देश-रूपी भौगोलिक अवधारणा से राष्ट्र-रूपी सांस्कृतिक अवधारणा में संचरण हेतु सांस्कृतिक मूल्यों से संपृक्त शिक्षा-प्रणाली की महती आवश्यकता होती है। 1851 में जब विद्यासागर संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य (प्रिंसिपल) बने, तब इन्होंने ऐसे अनेकशः निर्णय लिए जो शिक्षण-प्रणाली को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़े। संस्कृत कॉलेज में प्रवेश के नियम को बदलते हुए अ-ब्रह्मणों को भी इसमें पढ़ने का अवसर दिया गया।

भागवद्पुराण को उद्धृत करते हुए विद्यासागर ने कहा कि शास्त्रों एवं अन्य आर्ष-ग्रंथों में किसी भी जाति के लिए संस्कृत का अध्ययन करना निषेध नहीं है। इससे संस्कृत शिक्षण अधिक समावेशी हुआ।

विद्यासागर ने संस्कृत प्रेस की स्थापना करते हुए कम कीमत पर पाठ्य-सामग्री एवं अन्य पुस्तकों को प्रकाशित किया, जिससे आम आदमी इन्हें ख़रीद सकें एवं लाभान्वित हो सकें। बांग्ला-अनुवाद के माध्यम से लोगों को संस्कृत सिखाने हेतु इन्होंने सरल बांग्ला में 'ब्याकरण कौमुदी' एवं 'उपक्रमोनिका' नामक दो पुस्तकों का लेखन एवं प्रकाशन किया।

विचारणीय है कि गार्गी, घोषा, अपाला की भूमि भारत में विदेशी आक्रांताओं के कारण बालिकाओं की शिक्षा नेपथ्य में चली गई। 1849 में लड़कियों के लिए प्रथम विद्यालय, 'बेथुम-स्कूल' खुलने के उपरांत इन्होंने इसे मिशन के तौर पर लिया और कई अन्य विद्यालय खोले। तथ्यों में देखें, तो उन्होंने 35 बालिका विद्यालय खोले जिनमें एकसाथ 1300 विद्यार्थिणियाँ शिक्षा ग्रहण करती थीं। बालिकाओं की शिक्षा हेतु 'नारी शिक्षा भंडार' नामक निधि की भी स्थापना की गई।

लड़कियों को संबोधित करते हुए इन्होंने कहा कि शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके सहारे स्त्रियाँ उन सामाजिक बेड़ियों को तोड़ सकती हैं, जिन्हें वे सदियों से झेलती रही हैं। साथ ही इन्होंने बालिकाओं हेतु स्वाबलंबन की बात की। विद्यालय में सिलाई, कढ़ाई हेतु प्रशिक्षण देना उस युग के अनुसार एक महत्त्वपूर्ण कदम था।

इन सबके उपरांत भी कहा जाता है कि उनका सबसे बड़ा योगदान स्वयं उनका व्यक्तित्व है

विश्व के 5 सर्वश्रेष्ठ समाज-सुधारकों में शामिल करते हुए कल्याणी मुखर्जी ने लिखा– 'एक पितृसत्तात्मक समाज में उन्होंने अपने संस्कृत भाषा पर अधिकार और मेधा से पुराने ग्रंथों से संदर्भ ढूँढकर अपने ही समुदाय के लोगों का प्रतिकार किया और विधवा पुनर्विवाह हेतु महत् योगदान दिया।'

निष्कर्षतः, हम कह सकते हैं कि श्री विद्यासागर भारतीय शिक्षण-जगत् के वे जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं, जिनकी विविध रश्मियों से कोटिशः जनता आलोकित हुई है, हो रही है एवं युगों-युगों तक होती रहेगी।

ईश्वरीय संपदा ईश्वर चंद

कैप्टन सुभाष ओझा

अंग्रेजों ने भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र बंगाल पर हमला करते हुए भारत के अभिजात्य वर्ग को अपने प्रभाव क्षेत्र में लेकर बाबू की (क्लर्क) फौज तैयार की जिससे संपूर्ण भारत में वैचारिक सांस्कृतिक, आर्थिक, संसाधनों पर कुटिलता पूर्वक अपना वर्चस्व बनाने में सफल रहे। जिसे अंग्रेजी संस्कृति या यूरोपी य संस्कृत ही के आधीन हो गया है जिसका तात्पर्य ही मेरी 'ही 'मैं ही' तक समस्त दोहन शोषण निहित स्वार्थों तक सीमित करने का प्रयास चल पड़ा।

भारत के एक बड़े हिस्से में बांग्ला सांस्कृतिक के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व करती है। कोलकाता की काली दक्षिणेश्वर मां कल्याणेश्वरी बामाखेपा के अनुयाई हैं न कि वामपंथ के लिए हैं। यह भटकाव बहुत ही शातिर तरीके से षड्यंत्र पूर्वक किया गया है।

आधारभूत सांस्कृतिक धरोहर को भटकाव वादी विचारधारा, मार्क्सवादी व्यक्तित्व पूर्व मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने भी मां काली की फोटो फ्रेम अपने कार्यालय में लगा रखा था किसी पत्रकार ने प्रश्न किया की आप तो साम्यवादी विचारधारा के हैं , फिर देवी मां की फोटो कैसे"? श्री ज्योति बसु ने कहा कि मां मेरी आस्था है विचार तो मेरी राजनीतिक दृष्टिकोण है।

अंग्रेजों ने भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र बंगाल पर हमला करते हुए भारत के अभिजात्य वर्ग को अपने प्रभाव क्षेत्र में लेकर बाबू की (क्लर्क) फौज तैयार की जिससे संपूर्ण भारत में वैचारिक सांस्कृतिक, आर्थिक, संसाधनों पर कुटिलता पूर्वक अपना वर्चस्व बनाने में सफल रहे। जिसे अंग्रेजी संस्कृति या यूरोपी य संस्कृत ही के आधीन हो गया है जिसका तात्पर्य ही मेरी 'ही 'मैं ही' तक समस्त दोहन शोषण निहित स्वार्थों तक सीमित करने का प्रयास चल पड़ा। दूसरी ओर भारतीय संस्कृति पल्लवित पुष्पित होती रही जिसका पर्याय 'हम भी' हमारा भी 'हम सभी 'हम सब भी' के साथ संस्कृति संसाधन में यथा आवश्यक उपभोग करने की परंपरा अनवरत चलती रही।

उसमें एक प्रणेता बंगाल के लाल ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी रहे तथास्वामी श्रद्धानंद, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, महिर्ष अरविंद, एनी बेसेंट, स्वामी सहजानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद का सांस्कृतिक आंदोलन में विशेष भूमिका रही। इसमें अंग्रेजी तथा संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद बांग्ला भाषा में किया और गद्य की सुंदर सरल शैली में विकसित किया ।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का जन्म 1820 ईस्वी में हुआ था और उनकी मृत्यु 1891 में हो गई ईश्वर बंदोपाध्याय वो मूलत बंदोपाध्याय उत्तर भारत के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे जो बंगाल में बंदोपाध्याय हो गए। आस्थावान ब्राह्मण परिवार में जन्मे विद्यासागर जी मां काली और भगवान शिव के उपासक थे। विद्यासागर जी ने विधवा पुनर्विवाह कानून बनाने के लिए एक संघर्षशील आंदोलन चलाया, सफल होने के साथ अपने इकलौते बेटे का विवाह एक विधवा से किया। जात-पात के भेद को मिटाने के लिए सनातन संस्कृति शिक्षा के लिए विद्यालय में सभी का खुला प्रवेश हो ऐसी मुहिम चलाई ।सामाजिक एकता, सांस्कृतिक पोषण के लिए समर्पित जीवन की प्रतिष्ठित मूर्ति को बंगाल की सरकार सुरक्षित नहीं रख पाई। यह खतरनाक संकेत है, सामाजिक पराभाव की ओर ढूलकता सत्ता का तुष्टीकरण है। जब जब ऐसी घटना इतिहास में हुई है एक नए पुनर्जागरण का शंखनाद हुआ है। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी का सरल व्यवहार और आचरण की कहानियां विद्यालयों में बच्चों को सुनाई जाती है। उनकी कथनी और करनी एक थी। अपने जीवन आचरण के प्रभाव से

ही बंगाल के एक दार्शनिक समाज सुधारक हुए। जिनका जीवन देश के लिए प्रेरणा स्त्रोत बना सन 2004 में एक सर्वेक्षण में उन्हें अब तक का सर्वश्रेष्ठ बंगाली माना गया। बंगाल के मिदनापुर जिले के वीर सिंह गांव में एक अति निर्धन ब्राह्मण परिवार में जन्म होने के बाद भी 52 पुस्तकों की रचना की जिसमें 17 संस्कृत में थी बंगाल और विद्यासागर में सागर और विद्या के साथ बंगाल को पूरक माना जाएगा । वह बंगाल के लिए ही नहीं अपितु पूरे भारत और विश्व के लिए प्रकृति प्रदत्त संपदा निधि रहेंगे।गरीबों और दलितों के संरक्षक थे। अभी विद्यासागर जी को भारत रत्न देना शेष रहा है । बंगाल की संस्कृति की पहचान को विश्व स्तर में ले जाने वाले महान समाज सुधारक को 200 वी जयंती पर समाज की कृतज्ञता होगी। ऐसी भारत सरकार से विनती एवं अपेक्षा है ।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रेरणात्मक विचार

- **विद्या सबसे अनमोल 'धन' है; इसके आने मात्र से ही सिर्फ अपना ही नही अपितु पूरे समाज का कल्याण होता है।**
- **संसार मे सफल और सुखी वही लोग हैं, जिनके अन्दर 'विनय' हो और विनय विद्या से ही आती है।**
- **समस्त जीवो मे मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बताया गया है, क्यूंकि उसके पास आत्मविवेक और आत्मज्ञान है।**
- **कोई मनुष्य अगर बडा बनना चाहता है, तो छोटे से छोटा काम भी करे, क्यूंकि स्वावलम्बी ही श्रेष्ठ होते है।**
- **मनुष्य कितना भी बडा क्यो न बन जाए उसे हमेशा अपना अतीत याद करते रहना चाहिए।**
- **जो व्यक्ति दुसरो के काम मे न आए, वास्तव मे वो मनुष्य नही है।**
- **अगर सफल और प्रतिष्ठित बनना है, तो झुकना सीखो। क्यूंकि जो झुकते नही, समय की हवा उन्हे झुका देती है।**
- **एक मनुष्य का सबसे बडा कर्म दुसरो की भलाई, और सहयोग होना चाहिए, जो एक सम्पन्न राष्ट्र का निमार्ण करता है।**
- **अपने हित से पहले, समाज और देश के हित को देखना एक विवेक युक्त सच्चे नागरिक का धर्म होता है।**
- **बिना कष्ट के ये जीवन एक बिना नाविक के नाव जैसा है, जिसमे खुद का कोई विवेक नही। एक हल्के हवा के झोके मे भी चल देता है।**
- **दुसरो के कल्याण से बढ कर, दुसरा और कोई नेक काम और धर्म नही होता।**
- **जो मनुष्य संयम के साथ, विर्द्याजन करता है, और अपने विद्या से सब का परोपकार करता है। उसकी पूजा सिर्फ इस लोक मे नही वरन परलोक मे भी होती है।**
- **संयम विवेक देता है, ध्यान एकाग्रता प्रदान करता है। शांति, संतुष्टि और परोपकार मनुष्यता देती है।**
- **जो नास्तिक हैं उनको वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भगवान में विश्वाश करना चाहिए इसी में उनका हित है।**

प्रेरक प्रसंग

दीप से दीप जलाओ

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर कलकत्ता में अध्यापन कार्य करते थे। वेतन का उतना ही अंश घर परिवार के लिए खर्च करते जितने में कि औसत नागरिक स्तर का गुजारा चल जाता। शेष भाग वे दूसरे जरूरतमंदों की, विशेषता छात्रों की सहायता में खर्च कर देते थे।

आजीवन उनका यही व्रत रहा। वे गरीबी में पढ़े थे ओर निर्धनों के लिए आवश्यकताएँ पुरी करने में लगा देते। एक दिन वे बाजार में चले जा रहे थे। एक हताश युवक ने भिखारी की तरह उनसे एक पैसा माँगा। विद्यासागर दानी तो थे पर सत्पात्र की परीक्षा किये बिना किसी की ठगी में ने आते। युवक से जबानी में हट्टे कट्टे होते हुए भी भीख माँगने का कारण पूछा। सारी स्थिति जानने पर माँगने का औचित्य लगा। सो एक पैसा तो दे दिया पर उसे रोककर उससे पूछा कि यदि अधिक मिल जाय तो क्या करोगे? युवक ने कहा कि यदि एक रुपया मिल तो उसका सौदा लेकर गलियों में फेरी लगाने लगूंगा ओर अपने परिवार का पोषण करने में स्वावलम्बी हो जाऊंगा।

विद्यासागर ने एक रुपया उसे ओर दे दिया। उसे लेकर उसने छोटा व्यापार आरंभ कर दिया। काम दिन दिन बढ़ने लगा। कुछ दिन में वह बड़ा व्यापारी बन गया।

एक दिन विद्यासागर उस रास्ते से निकल रहे थे कि व्यापारी दुकान से उतरा उनके चरणों में पड़ा ओर दुकान दिखाने ले गया ओर कहा - यह आपका दिया एक रुपया पूंजी का चमत्कार है। विद्यासागर प्रसन्न हुए ओर कहा जिस प्रकार तुमने सहायता प्राप्त करके उन्नति की उसी प्रकार का लाभ अल्प जरूरतमंदों को भी देते रहना। पात्र उपकरण लेकर ही निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिए वरन् वैसा ही लाभ अन्य अनेकों को पहुंचाने के लिए समर्थता की स्थिति में स्वयं कभी उदारता बरतनी चाहिए। व्यापारी ने वैसा ही करते रहने का वचन दिया।

आलेख

युगक्रान्ति के महानायक

अनिता अग्रवाल

वे जिस काल मे जन्म लिए उसके बाद के सर्वकालिक आदर्श हैं। युगक्रान्ति के महानायक हैं। उनकी उपास्थि अद्भुत है। स्त्री शक्ति की महत्ता और स्थापना में उनका योगदान अविस्मरणीय है। ईश्वर चंद्र विद्यासागर का समय केवल किसी शताब्दी का काल नही हैं, उनका समय चिरकालिक है जिसको जब भी अवसर आएगा लोक मूल्यांकन कर उसमें से लोक कल्याण के मोती चुनता रहेगा। उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल के प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद, समाज सुधारक, लेखक, अनुवादक, मुद्रक, प्रकाशक, उद्यमी और परोपकारी व्यक्ति थे।

“साहित्य के क्षेत्र में बँगला गद्य के प्रथम प्रवर्त्तकों में थे। उन्होंने 52 पुस्तकों की रचना की, जिनमें 17 संस्कृत में थी, पाँच अँग्रेजी भाषा में, शेष बँगला में। जिन पुस्तकों से उन्होंने विशेष साहित्यकीर्ति अर्जित की वे हैं, 'वैतालपंचविंशति', 'शकुंतला' तथा 'सीतावनवास'। इस प्रकार मेधावी, स्वावलंबी, स्वाभिमानी, मानवीय, अध्यवसायी, दृढ़प्रतिज्ञ, दानवीर, विद्यासागर, त्यागमूर्ति ईश्वरचंद्र ने अपने व्यक्तित्व और कार्यक्षमता से शिक्षा, साहित्य तथा समाज के क्षेत्रों में अमिट पदचिह्न छोड़े।”

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी बंगाल के पुनर्जागरण के स्तम्भों में से एक थे। उनके बचपन का नाम ईश्वर चन्द्र बन्दोपाध्याय था। संस्कृत भाषा और दर्शन में अगाध पाण्डित्य के कारण विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की थी। वे नारी शिक्षा के समर्थक थे। उनके प्रयास से ही कलकत्ता में एवं अन्य स्थानों में बहुत अधिक बालिका विद्यालयों की स्थापना हुई। उस समय समाज में विधवाओं की स्थिति बहुत ही शोचनीय थी। उन्होनें विधवा पुनर्विवाह के लिए लोकमत तैयार किया। उन्हीं के प्रयासों से 1856 ई. में विधवा-पुनर्विवाह कानून पारित हुआ। उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह एक विधवा से ही किया। उन्होंने बाल विवाह का भी विरोध किया। बांग्ला भाषा के गद्य को सरल एवं आधुनिक बनाने का उनका कार्य सदा याद किया जायेगा। उन्होने बांग्ला लिपि के वर्णमाला को भी सरल एवं तर्कसम्मत बनाया। बँगला पढ़ाने के लिए उन्होंने सैकड़ों विद्यालय स्थापित किए तथा रात्रि पाठशालाओं की भी व्यवस्था की। उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया। उन्होंने संस्कृत कॉलेज में पाश्चात्य चिन्तन का अध्ययन भी आरम्भ किया। सन 2004 में एक सर्वेक्षण में उन्हें 'अब तक का सर्वश्रेष्ठ बंगाली' माना गया था।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी की जन्मस्थली (वीरसिंह, घाटाल) ईश्वर चन्द्र विद्यासागर का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के वीरसिंह गाँव में एक अति निर्धन ब्राम्हण परिवार में हुआ था।पिता का नाम ठाकुरदास वन्द्योपाध्याय था। तीक्ष्णबुद्धि पुत्र को गरीब पिता ने विद्या के प्रति रुचि ही विरासत में प्रदान की थी। नौ वर्ष की अवस्था में बालक ने पिता के साथ पैदल कोलकाता जाकर संस्कृत कालेज में विद्यारम्भ किया। शारीरिक अस्वस्थता, घोर आर्थिक कष्ट तथा गृहकार्य के बावजूद ईश्वरचंद्र ने प्रायः प्रत्येक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 1841 में विद्यासमाप्ति पर फोर्ट विलियम कालेज में पचास रुपए मासिक पर मुख्य पण्डित पद पर नियुक्ति मिली। तभी 'विद्यासागर' उपाधि से विभूषित हुए। लोकमत ने 'दानवीर सागर' का सम्बोधन दिया। 1846 में संस्कृत कालेज में सहकारी सम्पादक नियुक्त हुए; किन्तु मतभेद पर त्यागपत्र दे दिया। 1851 में उक्त कालेज में मुख्याध्यक्ष बने। 1855 में असिस्टेंट इंस्पेक्टर, फिर पाँच सौ रुपए मासिक पर स्पेशल इंस्पेक्टर नियुक्त हुए। 1858ई. में मतभेद होने पर फिर त्यागपत्र दे दिया। फिर साहित्य तथा समाजसेवा में लगे। 1880 ई. में सी.आई.ई. का सम्मान मिला।

आरम्भिक आर्थिक संकटों ने उन्हें कृपण प्रकृति (कंजूस) की अपेक्षा 'दयासागर' ही बनाया। विद्यार्थी जीवन में भी इन्होंने अनेक विद्यार्थियों की सहायता की। समर्थ होने पर बीसों निर्धन विद्यार्थियों, सैकड़ों निस्सहाय विधवाओं, तथा अनेकानेक व्यक्तियों को अर्थकष्ट से उबारा। वस्तुतः उच्चतम स्थानों में सम्मान पाकर भी उन्हें वास्तविक सुख निर्धनसेवा में ही मिला। शिक्षा के क्षेत्र में वे स्त्रीशिक्षा के प्रबल समर्थक थे। श्री बेथ्यून की सहायता से गर्ल्स स्कूल की स्थापना की जिसके संचालन का भार उनपर था। उन्होंने अपने ही व्यय से मेट्रोपोलिस कालेज की स्थापना की। साथ ही अनेक सहायताप्राप्त स्कूलों की भी स्थापना कराई। संस्कृत अध्ययन की सुगम प्रणाली निर्मित की। इसके अतिरिक्त शिक्षाप्रणाली में अनेक सुधार किए। समाजसुधार उनका प्रिय क्षेत्र था, जिसमें उन्हें कट्टरपंथियों का तीव्र विरोध सहना पड़ा, प्राणभय तक आ बना। वे विधवाविवाह के प्रबल समर्थक थे। शास्त्रीय प्रमाणों से उन्होंने विधवाविवाह को बैध प्रमाणित किया। पुनर्विवाहित विधवाओं के पुत्रों को 1865 के एक्ट द्वारा वैध घोषित करवाया। अपने पुत्र का विवाह विधवा से ही किया। संस्कृत कालेज में अब तक केवल ब्राह्मण और वैद्य ही विद्योपार्जन कर सकते थे, अपने प्रयत्नों से उन्होंने समस्त हिन्दुओं के लिए विद्याध्ययन के द्वार खुलवाए।

साहित्य के क्षेत्र में बँगला गद्य के प्रथम प्रवर्त्तकों में थे। उन्होंने 52 पुस्तकों की रचना की, जिनमें 17 संस्कृत में थी, पाँच अँग्रेजी भाषा में, शेष बँगला में। जिन पुस्तकों से उन्होंने विशेष साहित्यकीर्ति अर्जित की वे हैं, 'वैतालपंचविंशति', 'शकुंतला' तथा 'सीतावनवास'। इस प्रकार मेधावी, स्वावलंबी, स्वाभिमानी, मानवीय, अध्यवसायी, दृढ़प्रतिज्ञ, दानवीर, विद्यासागर, त्यागमूर्ति ईश्वरचंद्र ने अपने व्यक्तित्व और कार्यक्षमता से शिक्षा, साहित्य तथा समाज के क्षेत्रों में अमिट पदचिह्न छोड़े।

वे अपना जीवन एक साधारण व्यक्ति के रूप में जीते थे लेकिन लेकिन दान पुण्य के अपने काम को एक राजा की तरह करते थे। वे घर में बुने हुए साधारण सूती वस्त्र धारण करते थे जो उनकी माता जी बुनती थीं। वे झाडियों के वन में एक विशाल वट वृक्ष के सामान थे। क्षुद्र व स्वार्थी व्यवहार से तंग आकर उन्होंने अपने परिवार के साथ संबंध विच्छेद कर दिया और अपने जीवन के अंतिम 18 से 20 वर्ष बिहार (अब झारखण्ड) के जामताड़ा जिले के करमाटांड़ में सन्ताल आदिवासियों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। उनके निवास का नाम 'नन्दन कानन' (नन्दन वन) था। उनके सम्मान में अब करमाटांड़ स्टेशन का नाम 'विद्यासागर रेलवे स्टेशन' कर दिया गया है।

वे जुलाई 1891 में दिवंगत हुए। उनकी मृत्यु के बाद रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा, 'लोग आश्चर्य करते हैं कि ईश्वर ने चालीस लाख बंगालियों में कैसे एक मनुष्य को पैदा किया!' उनकी मृत्यु के बाद, उनके निवास 'नन्दन कानन' को उनके बेटे ने कोलकाता के मलिक परिवार बेच दिया। इससे पहले कि 'नन्दन कानन' को ध्वस्त कर दिया जाता, बिहार के बंगाली संघ ने घर-घर से एक एक रूपया अनुदान एकत्रित कर 29 मार्च 1974 को उसे खरीद लिया। बालिका विद्यालय पुनः प्रारम्भ किया गया, जिसका नामकरण विद्यासागर के नाम पर किया गया है। निःशुल्क होम्योपैथिक क्लिनिक स्थानीय जनता की सेवा कर रहा है। विद्यासागर के निवास स्थान के मूल रूप को आज भी व्यवस्थित रखा गया है। सबसे मूल्यवान सम्पत्ति लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुरानी 'पालकी' है जिसे स्वयं विद्यासागर प्रयोग करते थे।

विद्यासा गर रचित ग्रन्थावली

शिक्षामूलक ग्रन्थ

- बर्णपरिचय : प्रथम और द्वितीय भाग -1855)
- ऋजुपाठः प्रथम, द्वितीय और तृतीय भाग -1851-52
- संस्कृत ब्याकरणेर उपक्रमणिका -1851
- ब्याकरण कौमुदी -1853

अनुवाद ग्रन्थ

(हिन्दी से बांग्ला)

- बेताल पञ्चबिंशति -1847 (लल्लूलाल कृत बेताल पच्चीसी पर आधारित)

संस्कृत से बांग्ला

- शकुन्तला - 1854 (कालिदास के अभिज्ञानशकुन्तलम् पर आधारित)
- सीतार बनबास - 1860 (भवभूति के उत्तर रामचरित और वाल्मीकि रामायण के उत्तराकाण्ड पर आधारित)
- महाभारतर उपक्रमणिका - 1860 (वेद व्यास के मूल महाभारत की उपक्रमणिका अंश पर आधारित)
- बामनाख्यानम् - 1873 (मधुसूदन तर्कपञ्चानन रचित 117 श्लोकों का अनुवाद)

अंग्रेजी से बांग्ला

- बाङ्गालार इतिहास - 1848 (मार्शम्यान कृत हिष्ट्री आफ बेङ्गाल पर आधारित)
- जीवनचरित - 1849 (चेम्बार्छ के बायोग्राफिज पर आधारित)
- नीतिबोध - प्रथम सात प्रस्ताव - 1851 (रबार्ट आरु उइलियाम चेम्बार्चर मराल क्लास बुक अवलम्बनत रचित)
- बोधोदय - 1851 (चेम्बार्चर रुडिमेन्ट्स आफ नालेज पर आधारित)
- कथामाला - 1856 (ईशब्स फेबलस पर आधारित)
- चरिताबली - 1857 (विभिन्न अंग्रेजी ग्रन्थ और पत्र-पत्रिकाओं पर आधारित)
- भ्रान्तिबिलास - 1861(शेक्सपीयर के कमेडी आफ एरर्स' पर आधारित)

अंग्रेजी ग्रन्थ (पोएटिकल सेलेक्शन्स)

- सेलेक्शन्स फ्रॉम गोल्डस्मिथ
- सेलेक्शन्स फ्रॉम इंग्लिश लिटरेचर

मौलिक ग्रन्थ

- संस्कृत भाषा आरु संस्कृत साहित्य बिषयक प्रस्ताब - 1853
- बिधबा बिबाह चलित हओया उचित किना एतद्विषयक प्रस्ताब -1855
- प्रभावती सम्भाषण - 1863
- शब्दमञ्जरी - 1864
- बहुबिबाह रहित हओया उचित किना एतद्विषयक प्रस्ताब -1871
- अति अल्प हइल -1873
- आबार अति अल्प हइल -1873
- ब्रजबिलास -1884
- रत्नपरीक्षा- 1886
- जीवन-चरित - 1891 (मरणोपरान्त प्रकाशित)
- निष्कृति लाभेर प्रयास - 1888
- भूगोल खगोल बर्णनम् - 1891(मरणोपरान्त प्रकाशित)

सम्पादित ग्रन्थ

- अन्नदामङ्गल - 1847
- किरातार्जुनीयम् - 1853
- सर्वदर्शनसंग्रह -1853-58
- शिशुपालबध - 1853
- कुमारसम्भवम् - 1862
- कादम्बरी - 1862
- वाल्मीकि रामायण - 1862
- रघुवंशम् - 1853
- मेघदूतम् - 1869
- उत्तरचरितम् - 1872
- अभिज्ञानशकुन्तलम् - 1871
- हर्षचरितम् - 1883
- पद्यसंग्रह प्रथम भाग - 1888 (कृत्तिबासी रामायण से संकलित)
- पद्यसंग्रह द्वितीय भाग - 1890 (रायगुणाकर भारतचन्द्र रचित अन्नदामङ्गल से संकलित)

विद्यासागर-विषयक ग्रन्थ

- अञ्जलि बसु (सम्पादित) , ईश्बरचन्द्र बिद्यासागरः संसद बाङालि चरिताभिधान, साहित्य संसद, कलकाता, 1976
- अमरेन्द्रकुमार घोष ; युगपुरुष बिद्यासागर : तुलिकलम, कलकाता, 1973
- अमूल्यकृष्ण घोष ; बिद्यासागर : द्वितीय संस्करण, एम सि सरकार, कलकाता, 1917
- असितकुमार बन्द्योपाध्याय ; बांला साहित्ये बिद्यासागर : मण्डल बुक हाउस, कलकाता, 1970
- इन्द्रमित्र ; करुणासागर बिद्यासागर : आनन्द पाबलिशार्स, कलकाता, 1966
- गोपाल हालदार (सम्पादित) ; बिद्यासागर रचना सम्भार (तिन खण्डे) : पश्चिमबङ्ग निरुक्षरता दूरीकरण समिति, कलकाता, 1974-76
- बदरुद्दीन उमर ; ईश्बरचन्द्र बिद्यासागर ओ उनिश शतकेर बाङालि समाज : द्वितीय संस्करण, चिरायत, कलकाता, 1982
- बिनय घोष ; बिद्यासागर ओ बाङालि समाज : बेङ्गल पाबलिशार्स, कलकाता, (1354 बङ्गाब्द)
- बिनय घोष ; ईश्बरचन्द्र बिद्यासागर : अनुबादक अनिता बसु, तथ्य ओ बेतार मन्त्रक, 1975
- ब्रजेन्द्रकुमार दे ; करुणासिन्धु बिद्यासागर : मण्डल अ्यान्ड सन्स, कलकाता, 1970
- महम्मद आबुल हाय आनिसुज्जामन ; बिद्यासागर रचना संग्रह : स्टुडेन्टस ओयेज, ढाका, 1968
- योगेन्द्रनाथ गुप्त ; बिद्यासागर : पञ्चम संस्करण, कलकाता, 1941
- योगीन्द्रनाथ सरकार ; बिद्यासागर : 1904
- रजनीकान्त गुप्त ; ईश्बरचन्द्र बिद्यासागर : 1893
- रमाकान्त चक्रबर्ती (सम्पादित) ; शतबर्ष स्मरणिका : बिद्यासागर कलेज, 1872-1972 : बिद्यासागर कलेज, 1972
- रमेशचन्द्र मजुमदार ; बिद्यासागर : बांला गद्येर सूचना ओ भारतेर नारी प्रगति : जेनारेल प्रिन्टार्स अ्यान्ड पाबलिशार्स, कलकाता, (1376 बङ्गाब्द)
- रबीन्द्रनाथ ठाकुर; बिद्यासागर-चरित : बिश्बभारती ग्रन्थनबिभाग, कलकाता
- राधारमण मित्र ; कलिकाताय बिद्यासागर : जिज्ञासा, कलिकाता, 1942
- रामेन्द्रसुन्दर त्रिबेदी ; चरित्र कथा : कलकाता, 1913
- शङ्करीप्रसाद बसु ; रससागर बिद्यासागर : द्वितीय संस्करण, दे'ज पाबलिशिं, कलकाता, 1992
- शङ्ख घोष ओ देबीप्रसाद चट्टोपाध्याय (सम्पादित) ; बिद्यासागर : ओरियेन्ट, कलकाता
- शम्भुचन्द्र बिद्यारत्न ; बिद्यासागर चरित : कलकाता, (1294 बङ्गाब्द)
- शम्भुचन्द्र बिद्यारत्न ; बिद्यासागर जीबनचरित : कलकाता
- शम्भुचन्द्र बिद्यारत्न ; बिद्यासागर चरित ओ भ्रमणिरास : चिरायत, कलकाता, 1992
- शशिभूषण बिद्यालङ्कार ; ईश्बरचन्द्र बिद्यासागर : जीबनीकोष, भारतीय ऐतिहासिक, कलकाता, 1936
- शामसुज्जामान मान ओ सेलिम होसेन ; ईश्बरचन्द्र बिद्यासागर : चरिताभिधान : बांला एकाडेमी, ढाका, 1985
- सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय, ब्रजेन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय ओ सजनीकान्त दास (सम्पादित) ; बिद्यासागर ग्रन्थाबली (तिन खण्डे) : बिद्यासागर स्मृति संरक्षण समिति, कलकाता, (1344-46 बङ्गाब्द)
- सन्तोषकुमार अधिकारी ; बिद्यासागर जीबनपञ्जि : साहित्यिका, कलकाता, 1992
- सन्तोषकुमार अधिकारी ; आधुनिक मानसिकता ओ बिद्यासागर : बिद्यासागर रिसार्च सेन्टार, कलकाता, 1984
- हरिसाधन गोस्बामी ; मार्कसीय दृष्टिते बिद्यासागर : भारती बुक स्टल, कलकाता, 1988

- (यह सूची पश्चिमबङ्ग पत्रिका के बिद्यासागर संख्या, सेप्टेम्बर-अक्टोबर 1994, से साभार ली गयी है।)

स्मारक

- 1970 में भारत सरकार ने विद्यासागर जी की स्मृति में एक डाक-टिकट जारी किया
- विद्यासागर सेतु
- विद्यासागर मेला (कोलकाता औ बीरसिंह में)
- विद्यासागर महाविद्यालय
- विद्यासागर विश्वविद्यालय (पश्चिम मेदिनीपुर जिला में)
- विद्यासागर मार्ग (मध्य कोलकाता में)
- विद्यासागर क्रीडाङ्गन (विद्यासागर स्टेडियम)
- भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर में विद्यासागर छात्रावास
- झारखण्ड के जामताड़ा जिले में विद्यासागर स्टेशन
- 1970 और 1998 में उनकी स्मृति में डाक टिकट जारी किया गया।

हे देवीरूप मातृभूमि!

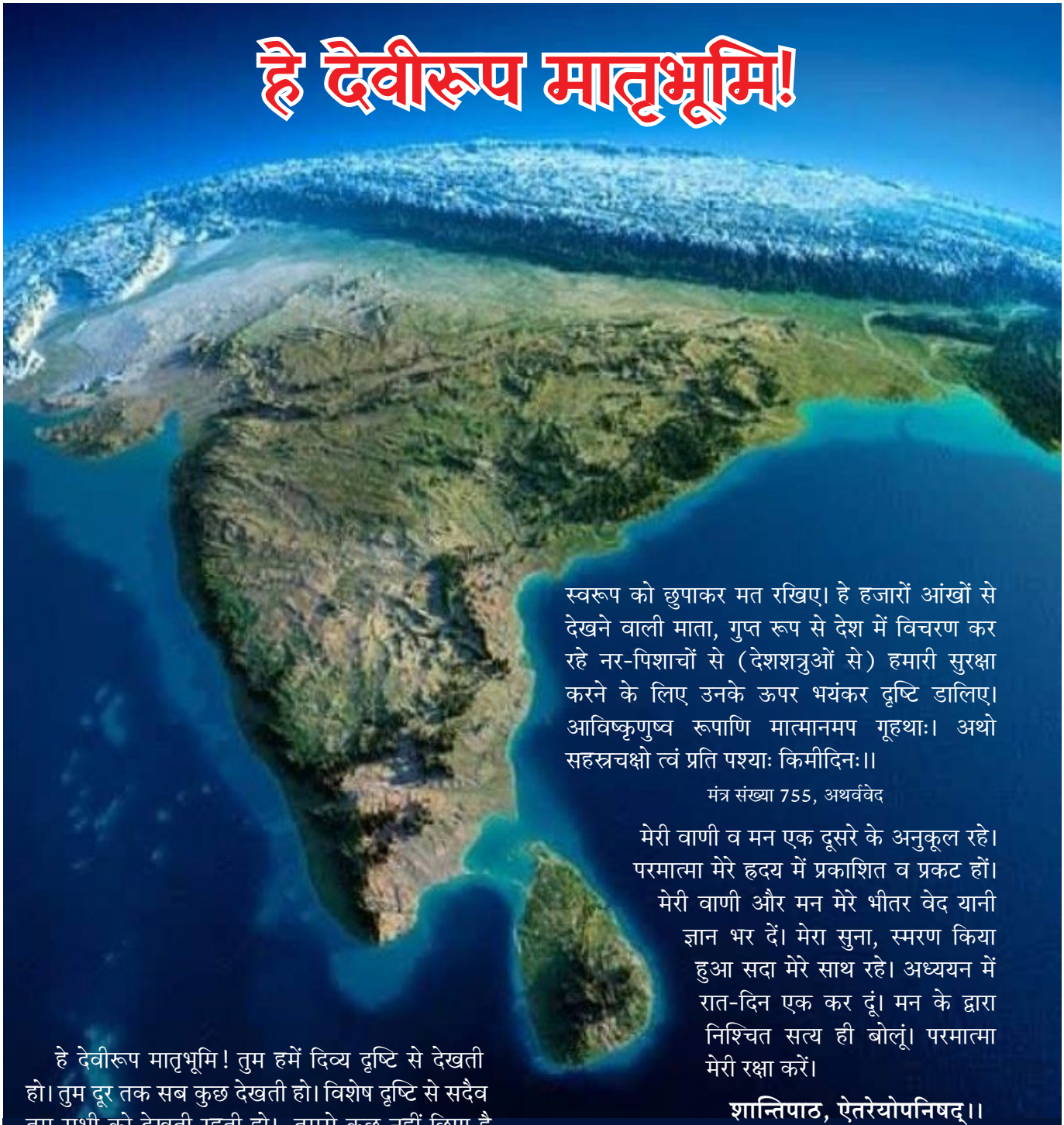

हे देवीरूप मातृभूमि! तुम हमें दिव्य दृष्टि से देखती हो। तुम दूर तक सब कुछ देखती हो। विशेष दृष्टि से सदैव तुम सभी को देखती रहती हो। तुमसे कुछ नहीं छिपा है क्योंकि तुम संपूर्ण और समग्र देखती हो। इस द्युलोक को, इस अन्तरिक्ष को, तुम पर बसे संपूर्ण लोक को देखती हो। हे देवी रूप मातृभूमि, तुम हमारी माता हो।।

आ पश्यति प्रति पश्यति परा पश्यति पश्यति।
दिवमन्तरिक्षमाद् भूमिं सर्वं तद् देवि पश्यति।।

मंत्र संख्या 751, अथर्ववेद

हे माता! आप दुष्ट राक्षसों को खत्म कर देने वाले अपने मौलिक स्वरूप को प्रकट करिए। आप अपने स्वरूप को छुपाकर मत रखिए। हे हजारों आंखों से देखने वाली माता, गुप्त रूप से देश में विचरण कर रहे नर-पिशाचों से (देशशत्रुओं से) हमारी सुरक्षा करने के लिए उनके ऊपर भयंकर दृष्टि डालिए। आविष्कृणुष्व रूपाणि मात्मानमप गूहथाः। अथो सहस्रचक्षो त्वं प्रति पश्याः किमीदिनः।।

मंत्र संख्या 755, अथर्ववेद

मेरी वाणी व मन एक दूसरे के अनुकूल रहे। परमात्मा मेरे हृदय में प्रकाशित व प्रकट हों। मेरी वाणी और मन मेरे भीतर वेद यानी ज्ञान भर दें। मेरा सुना, स्मरण किया हुआ सदा मेरे साथ रहे। अध्ययन में रात-दिन एक कर दूं। मन के द्वारा निश्चित सत्य ही बोलूं। परमात्मा मेरी रक्षा करें।

शान्तिपाठ, ऐतरेयोपनिषद्।।

ओम् वांड्. मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि। वेदस्य म आशीस्थः श्रुतं मे मा प्रहासीः। अनेनाधीते नाहोरात्रान्सन्दधाम्यृतं वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारमवतु वक्तारम्।। ओम् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

प्रो. राकेश कुमार उपाध्याय

नारी उत्थान के समर्थक ईश्वर चंद्र विद्यासागर

डॉ.अर्चना पाठया

पुरुष प्रधान समाज में ईश्वर चंद्र विद्यासागर ऐसे व्यक्ति थे जो महिलाओं और लड़कियों के हक में कार्य करते थे। उनकी आवाज महिलाओं और लड़कियों के हक लिए उठती थी। उनके प्रयासों से बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिला व विधवा पुनर्विवाह कानून पारित हुआ, जिसने महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर भारत के इतिहास में ऐसे महापुरुष के रूप में दर्ज हैं, जिनकी सोच और कार्य करने के तरीके समय से बहुत आगे थे। ईश्वर चंद्र को उनके ज्ञान के लिए सराहा गया। वह शिक्षा की शक्ति में विश्वास करते थे और उसी का जीता जागता सबूत थे। ईश्वर चंद्र विद्यासागर का जन्म 26 सितंबर 1820 को बंगाल प्रेसीडेंसी के मेदिनीपुर जिला में हुआ था। उनका बचपन का नाम ईश्वरचंद्र बन्दोपाध्याय था। उनका बचपन बेहद गरीबी में बीता। अपनी शुरुआती पढ़ाई गांव में रहकर ही की। जब वह 6 साल के थे पिता के साथ कलकत्ता आ गए। उत्कृष्ट शैक्षिक प्रदर्शन के कारण उन्हें विभिन्न संस्थानों द्वारा कई छात्रवृत्तियां प्रदान की गई। वे उच्चकोटि के विद्वान् थे। संस्कृत भाषा और दर्शन में अगाध ज्ञान होने के कारण विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की जिसका शाब्दिक अर्थ है ज्ञान का सागर। इसके बाद से उनका नाम ईश्वर चंद्र विद्यासागर हो गया ।

परिवार को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अध्यापन कार्य प्रारंभ किया। वर्ष 1839 में सफलता पूर्वक अपनी कानून की पढ़ाई संपन्न की। 1841 में मात्र इक्कीस वर्ष की आयु में उन्होंने संस्कृत के शिक्षक के तौर पर फोर्ट विलियम कॉलेज में पढ़ाना शुरू कर दिया। बंगाल के विद्यासागर ने अपने जीवन में वो काम किया, जिसकी वजह से महिलाएं आज कदम से कदम मिलाकर हर काम कर रही हैं। महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने के लिए ऐसा कुछ किया कि हर कोई दंग रह गया। वह एक बहुआयामी प्रतिभा थे, जिनकी बाल विवाह के खिलाफ धर्मयुद्ध और विधवा पुनर्विवाह की पहल के लिए सबसे अधिक प्रशंसा की जाती है। पुरुष प्रधान समाज में ईश्वर चंद्र विद्यासागर ऐसे व्यक्ति थे जो महिलाओं और लड़कियों के हक में कार्य करते थे। उनकी आवाज महिलाओं और लड़कियों के हक लिए उठती थी। उनके प्रयासों से बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन मिला व विधवा पुनर्विवाह कानून पारित हुआ, जिसने महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया। वे सामाजिक पुनर्जागरण के सूत्रधार रहे। ऐसा माना जाता है कि विद्यासागर जब किसी निर्धन, असहाय और निर्दोष व्यक्ति पर अत्याचार होते देखते थे, तब स्वतः ही उनकी आंखें भर आती थीं। उन्हें लोग दया का सागर भी कहते थे। ईश्वर चंद्र विद्यासागर वास्तव में एक ऐसी महान शख्सियत थे, जिन्होंने न केवल नारी शिक्षा के लिए व्यापक जनान्दोलन खड़ा किया बल्कि अंग्रेजों को विधवा पुनर्विवाह कानून पारित कराने को भी विवश किया। सुधारक के रूप में इन्हें राजा राममोहन राय का उत्तराधिकारी माना जाता है। राजा राममोहन राय के सिद्धांतों और उनके प्रयासों को आगे बढ़ाने वाले ईश्वर चंद्र विद्यासागर एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने अपने प्रभावी और कड़े प्रयासों द्वारा ना सिर्फ विधवा विवाह को कानूनी रूप से लागू करवाया बल्कि बंगाल की शिक्षा पद्धति में भी महत्वपूर्ण सुधार किए। ईश्वरचंद्र को गरीबों और दलितों का संरक्षक माना जाता था। उन्होंने नारी शिक्षा और विधवा विवाह कानून के लिए आवाज उठाई और अपने कार्यों के लिए समाज सुधारक के तौर पर पहचाने जाने लगे, लेकिन उनका कद इससे कई गुना बड़ा था। उन्हें बंगाल में पुनर्जागरण के स्तंभों में से एक माना जाता है। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने महिलाओं के

उत्थान को लेकर महत्वपूर्ण प्रयास किए। तत्कालीन समाज में बाल-विवाह जैसी कुप्रथा अपनी जड़ जमा चुकी थी, इसके विपरीत विधवा विवाह को बेहद घृणित दृष्टि से देखा जाता था। इसी कारण बंगाल में महिलाओं विशेषकर बाल विधवाओं की स्थिति बेहद दयनीय थी।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर वास्तव में एक ऐसी महान शख्सियत थे, जिन्होंने न केवल नारी शिक्षा के लिए व्यापक जनान्दोलन खड़ा किया बल्कि अंग्रेजों को विधवा पुनर्विवाह कानून पारित कराने को भी विवश किया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह के लिए लोकमत तैयार किया। ये उनके अनवरत प्रचार का ही नतीजा था कि 'विधवा पुनर्विवाह क़ानून-1856' आखिरकार पारित हो सका। उन्होंने इसे अपने जीवन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना था। वह उस दौर के पहले ऐसे पिता होंगे जिन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह भी एक विधवा से कराकर समस्त भारतीय समाज के समक्ष अविस्मरणीय मिसाल भी पेश की थी। नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ-साथ उन्होंने बहुपत्नी प्रथा तथा बाल विवाह के खिलाफ भी आवाज उठाई। उन्होंने 'बहुपत्नी प्रथा' और 'बाल विवाह' के ख़िलाफ़ भी संघर्ष छेड़ा। 1856-60 के मध्य इन्होने 25 विधवाओं का पुनर्विवाह कराया।

'अपना काम स्वयं करो' सिद्धांत के प्रवर्तक ईश्वर चंद्र विद्यासागर नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। अपने क्रियाकलापों से उन्होंने लोगों को हमेशा स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता की सीख दी। वर्ष 1855 ई। में जब उन्हें स्कूल-निरीक्षक/इंस्पेक्टर बनाया गया तो उन्होंने अपने अधिकार-क्षेत्र में आने वाले जिलों में बालिकाओं के लिए स्कूल सहित अनेक नए स्कूलों की स्थापना की थी। उच्च अधिकारियों को उनका ये कार्य पसंद नहीं आया और अंततः उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। वे बेथुन के साथ भी जुड़े हुए थे ,जिन्होनें 1849 ई। में कलकत्ता में स्त्रियों की शिक्षा हेतु प्रथम स्कूल की स्थापना की थी। इन्होने नारी शिक्षा के लिए भी प्रयास किए और इसी क्रम में 'बैठुने' स्कूल की स्थापना की तथा कुल 35 स्कूल खुलवाए। अपने समाज सुधार योगदान में ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने देशी भाषा और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूलों की एक श्रंखला के साथ ही कलकत्ता में 'मेट्रोपॉलिटन कॉलेज' की स्थापना भी की थी। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने स्थानीय भाषा और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूलों की एक श्रृंखला के साथ कोलकाता में मेट्रोपॉलिटन कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने इन स्कूलों को चलाने में आने वाले पूरे खर्च की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। स्कूलों के खर्च के लिए वह विशेष रूप से स्कूली बच्चों के लिए बांग्ला भाषा में लिखी गई किताबों की बिक्री से फंड जुटाते थे। ब्रिटिश शासनकाल में ऐसे कॉलेज विरले ही होते थे, जिनका संचालन पूर्ण रूप से भारतीयों के ही हाथों में हो और जहां पढ़ाने वाले सभी शिक्षक भी भारतीय ही हों किन्तु ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने सन् 1872 में कोलकाता में विद्यासागर कॉलेज की स्थापना कर यह कारनामा भी कर दिखाया था।

बंगाली भाषा के विकास बंगाली भाषा की लिपि और वर्णक्रम के विकास में ईश्वरचंद्र ने अमूल्य योगदान दिया। आज भी 160 वर्ष से अधिक समय बाद यदि कोई बच्चा बांग्ला की शिक्षा लेना प्रारंभ करता है, तो उसके हाथ में सबसे पहले विद्यासागर द्वारा रचित 'बर्णो पोरिचय' दी जाती है। इसमें बांग्ला अक्षरों की जानकारी होती है। बंगाल पुनर्जागरण के इस महापुरुष का ज्ञान के प्रति समर्पण अनेक पीढ़ियों से प्रेरणा बना हुआ है। ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा लिखी गई पुस्तकों ने न केवल अपने युग के दौरान महत्व रखा, बल्कि आज भी युवाओं की रुचि को जारी रखती हैं। उन्होंने बंगाली भाषा के विकास में भी योगदान दिया था और इसी योगदान के कारण उन्हें आधुनिक बंगाली भाषा का जनक माना जाता है।

विद्यासागर के दो प्रेरणादायक उद्धरण हैं

"शिक्षा का अर्थ केवल सीखना, पढ़ना, लिखना और अंकगणित नहीं है, यह व्यापक ज्ञान प्रदान करना चाहिए, भूगोल, ज्यामिति, साहित्य, प्राकृतिक दर्शन, नैतिक दर्शन, शरीर विज्ञान, राजनीतिक अर्थव्यवस्था आदि में शिक्षा बहुत आवश्यक है। हम ऐसे शिक्षक चाहते हैं जो बंगाली और अंग्रेजी दोनों भाषाओं को जानते हों और साथ ही साथ धार्मिक पूर्वाग्रहों से मुक्त हों।"पीड़ा के बिना जीवन नाविक के बिना एक नाव की तरह है, जिसमें स्वयं का विवेक नहीं है, यह हल्की हवा में भी चलता है"।

सदैव समाज की भलाई के लिए ही सोचने और समाज के लिए कुछ न कुछ नया करते रहने के कारण ही नैतिक मूल्यों के संरक्षक विद्यासागर को महान समाज सुधारक गरीबों और दलितों का संरक्षक माना जाता रहा।

विद्या के सागर तथा स्वावलम्बन के जीवन्त प्रतीक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अपने नाम के अनुरूप ही विलक्षण गुणों की मिसाल थे । एक सामान्य व्यक्ति भी अपने जीवनादर्शों से किस तरह महानता को प्राप्त करता है और दूसरों को भी ऐसा ही आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है, विद्यासागर का सम्पूर्ण जीवन हमें यही सीखाता है ।

अपनी सहनशीलता, सादगी शिक्षा तथा देशभक्ति के लिए प्रसिद्ध यह महान हस्ती 70 वर्ष की आयु में 29 जुलाई 1891 सदा-सदा के लिए अटल शून्य में विलीन हो गई। उनके निधन के बाद प्रख्यात बंगाली साहित्यकार और लेखक रबिन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि ईश्वर चंद्र विद्यासागर के जीवन के विषय में जानकर कोई भी आश्चर्यचकित हो सकता है कि कैसे भगवान ने लाखों बंगाली लोगों को जीवन देने के बाद एक इंसान को पैदा किया।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर और वर्तमान हालात

रजनी पाण्डेय

समाज सुधार के अनन्य कोशिशों के बाद आजाद भारत में आज महिलाएं दिन-प्रतिदिन अपनी लगन, मेहनत और सराहनीय कार्यों की बदौलत राष्ट्रीय पटल पर पहचान बनाने में कामयाब हो रही हैं। मौजूदा दौर में महिलाएं नए भारत के आगाज की अहम कड़ियों की नई इबारत लिख रही हैं।

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक क्षेत्रों में आज यदि आधी आबादी को कामयाबी मिली है तो इसमें महान समाज सुधारक ईश्वर चंद्र विद्यासागर के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। शिक्षा के क्षेत्र में उनके सराहनीय प्रयास की देन है कि आज भारतीय महिलाएं समूचे विश्व में सफलता का डंका बजा रही हैं। यह अतिशयोक्ति न होगी कि पुरुष प्रधान रूढ़िवादी समाज में महिलाएं निश्चित रूप से आगामी स्वर्णिम भारत की नींव और मजबूत करने का हर संभव प्रयास कर रहीं हैं, जो सचमुच काबिले तारीफ है। हां, यह जरूर है कि कुछ जगह अब भी महिलाएं घर की चारदीवारी में कैद होकर रूढ़िवादी परंपराओं का बोझ ढो रही हैं। वजह भी साफ है, पुरूष प्रधान समाज का महज संकुचित मानसिकता में बंधे होना।

> “यह अतिशयोक्ति न होगी कि पुरुष प्रधान रूढ़िवादी समाज में महिलाएं निश्चित रूप से आगामी स्वर्णिम भारत की नींव और मजबूत करने का हर संभव प्रयास कर रहीं हैं, जो सचमुच काबिले तारीफ है। हां, यह जरूर है कि कुछ जगह अब भी महिलाएं घर की चारदीवारी में कैद होकर रूढ़िवादी परंपराओं का बोझ ढो रही हैं। वजह भी साफ है, पुरूष प्रधान समाज का महज संकुचित मानसिकता में बंधे होना।”

संवैधानिक अधिकार एवं आधार

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने भारतीय संविधान में महिलाओं को मिले अधिकार को संरक्षण देते हुए उन्हें और मजबूत किया। इन अधिकारों में भारतीय महिलाओं को समान अधिकार (अनुच्छेद 14), राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने (अनुच्छेद 15(1)), अवसर की समानता (अनुच्छेद 16), समान कार्य के लिए समान वेतन (अनुच्छेद 39(घ)) की गारंटी देता है। इसके अलावा यह महिलाओं एवं बच्चों के पक्ष में राज्य द्वारा विशेष प्रावधान बनाए जाने की अनुमति देता है (अनुच्छेद 15(3), महिलाओं की गरिमा के लिए अपमानजनक प्रथाओं का परित्याग करने (अनुच्छेद 15(ए) ई) और साथ ही काम की उचित एवं मानवीय परिस्थितियां सुरक्षित करने, प्रसूति सहायता के लिए राज्य द्वारा प्रावधानों को तैयार करने की अनुमति देता है (अनुच्छेद 42) आदि शामिल है। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने महिलाओं की बेहतरी के लिए जो सबसे अहम काम किया उसमें पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, तीन तलाक, हलाला जैसी रूढ़िवादी बंदिशें शामिल रहीं। आज समूचा भारत हर संभव तरीके से समाज की सभी बहन, बेटियों की हिफाजत चाहता है। एक कदम आगे बढ़कर भारत सरकार ने सन् 2001 को महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषित किया था और सशक्तीकरण की राष्ट्रीय नीति भी सन 2001 में ही पारित की थी।

शिक्षा के क्षेत्र में बड़ा योगदान दिया

पता : कौशलपुरी, खरगापुर, गोमतीनगर लखनऊ

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर संस्कृत कॉलेज में प्रिंसिपल भी थे । कुछ समय तक उन्होंने स्कूलों में इंस्पेक्टर के पद पर भी काम किया । उनके समय में बंगाल में स्कूलों का बहुत प्रसार हुआ । महिलाओं के लिए अलग स्कूल खोले गये । संस्कृत पढना पहले उच्च वर्गो तक सिमित था ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने इसकी सुविधा सभी वर्गों में दिलाई । विद्यासागर सादा जीवन और उच्च विचारों के पोषक थे। उनके जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्व था । इसी प्रश्न पर उन्होंने शिक्षा विभाग की नौकरी छोड़ दी और समाज सुधार के कार्यों और पुस्तक रचना में लग गये ।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने की दिशा में उनका बड़ा योगदान रहा। उस समय बंगाल में विधवाओं की बड़ी दुर्दशा थी । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने शास्त्रों के प्रमाण देकर विधवा विवाह का समर्थन किया । जब रुढ़िवादियों ने उनका विरोध किया तो अपने एकमात्र पुत्र का विवाह एक विधवा से करके उन्होंने आदर्श स्थापित किया । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर निर्धन विद्यार्थियों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते थे । वे किसी को छोटा नही समझते थे। ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी की देन है कि आज

समाजिक संबलता हेतु बदलते भारत में महिलाओं की साक्षरता दर लगातार बढ़ती जा रही है, परंतु पुरुष साक्षरता दर से अब भी कम ही है। लड़कों की तुलना में बहुत कम लड़कियां ही स्कूल में दाखिला ले पा रही हैं और उनमें से कई बीच से ही अपनी पढ़ाई छोड़ देती हैं। दूसरी तरफ शहरी भारत में यह आंकड़ा संतोषजनक है। आज लड़कियां शिक्षा के मामले में लड़कों के लगभग बराबर चल रही हैं। एक सबल राष्ट्र बनाने के लिए महिलाओं की शिक्षा एवं उनकी सक्रिय भागीदारी अति आवश्यक है। इसलिए हम सबको महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

विद्यासागर के बारे में कुछ रोचक जानकारी...

एक रुपये देकर बना दिया बड़ा व्यापारी

यह तब की बात है जब विद्यासागर कोलकाता में पढ़ाते थे। उनका वेतन इतना ही था कि गुजारा हो सके। ऐसे में भी वे जरुरतमंदों की मदद में पीछे नहीं रहते थे। एक दिन की बात है। विद्यासागर बाजार से गुजर रहे थे, तभी एक युवक आगे आया और भीख में एक आना मांगने लगा। विद्यासागर ने देखा, युवक हट्टा-कट्टा है, फिर भी भीख मांग रहा है। उन्होंने युवक से बात की और उसकी परेशानी समझी।

सारी बात सुनने के बाद विद्यासागर ने कहा, यदि मैं तुम्हें एक रुपया दूं तो तुम उसका क्या करोगे? युवक बोला- मैं कुछ सामान खरीदूंगा और गली में घूम-घूमकर उसे बेचूंगा। इस तरह मुनाफा कमाने की कोशिश करूंगा। विद्यासागर प्रभावित हुए। उन्होंने उसे एक आने के बजाए एक रुपया दिया और अपने रास्ते चल दिए। युवक ने एक रुपए से छोटा-मोटा धंधा शुरू किया। खूब मेहनत की। धीरे-धीरे व्यापार बढ़ने लगा और वह देखते ही देखते बड़ा आदमी बन गया। कुछ माह बाद विद्यासागर का उसी रास्ते से गुजरना हुआ। वे अपनी धून में जा रहे थे, तभी अच्छे पकड़े पहने एक नौजवान आया और पैर छूने लगा। विद्यासागर कुछ समझ नहीं पाए। पूछने पर युवक ने बताया कि वह वही शख्स है, जिसे विद्यासागर ने एक रुपया दिया था और अब वह बड़ा व्यापारी बन गया है।

...जब विद्यासागर बने कुली :

एक बार विद्यासागर ट्रेन से कलकत्ता से वर्द्धमान आ रहे थे। उनकी बोगी में एक नौजवान भी था, जिसने बहुत अच्छे कपडे पहन रखे थे। वर्द्धमान पहुंचने पर वह कुली तलाशने लगा ता कि सामान उठाया जा सके। कुली नहीं मिला, तो परेशान होने गया। इस पर विद्यासागर ने कहा, लाओ, मैं तुम्हारा सामान उठा लेता हूं। युवक खुश हो गया। बोला- मैं आपकी पूरी मजदूरी दूंगा। घर पहुंचकर वह नवयुवक विद्यासागर को पैसे देने लगा, लेकिन उन्होंने नहीं लिए। अगले दिन वर्द्धमान में विद्यासागर के स्वागत के लिए बहुत से लोग जमा हुए। वह नवयुवक भी वहां आया। उसने देखा की यह तो वही व्यक्ति है जो कल मेरा सामान लेकर आया था। उसे आश्चर्य हुआ और शर्म भी आई। सभा समाप्त हुई तब वह विद्यासागर के पास गया और पैरो पर गिरकर माफी मांगी। विद्यासागर ने समझाया कि अपना काम स्वयं करना चाहिए।

आइये ईश्वर चंद्र विद्यासागर के बताये राह पर चलकर बदलाव का संकल्प लें

निष्कर्ष यह है कि महिलाओं के बेहतरीकरण के लिए हम सबको अपनी कुत्सित एवं रूढ़िवादी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। उन्हें सम्मान के साथ-साथ शिक्षा, व्यवसाय, नौकरी व अन्य सभी स्थानों पर बराबरी देना होगा। गौरतलब है कि भारतीय महिलाओं ने राष्ट्र की प्रगति में अपना अधिकाधिक योगदान देकर राष्ट्र को शिखर पर पहुंचाने हेतु सदैव तत्पर रही हैं। सच पूछो तो नारी शक्ति ही समाजिक धुरी और हम सबकी वास्तविक आधार हैं। महिलाओं के उत्थान के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही नीतियों में पूर्ण सहयोग देकर उसको परिणाम तक पहुंचाना होगा। युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था - ' जो जाति नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी, न आगे उन्नति कर सकेगी।' हमें भारतीय सनातन संस्कृति के 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' धारणा को साकार करते हुए महिलाओं को आगे बढ़नें में सदैव सहयोग करना चाहिए।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी एवं स्त्री उत्थान

डॉ प्रियंका एम तिवारी
निदेशक : डाल्को हेल्थकेयर
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

विद्यासागर जी कर्म, ज्ञान के अथाह सागर हैं, यदि इस सागर की कुछ बूंदें हम लोग ग्रहण कर उसे अपने जीवन में उतार सकें तो यह इक्कीसवीं सदी में भी समाज के बड़े सकारात्मक परिवर्तन का कारण बन सकती हैं। विद्यासागर जी के स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह एवं बहुपत्नी प्रथा उन्मूलन के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं स्त्री समाज सदैव उनका आभारी रहेगा।

बंगाल पुनर्जागरण, नारी शिक्षा , विधवा पुनर्विवाह एक्ट का नाम सुनते ही सबसे पहले हम सभी के मन मस्तिष्क में जो छवि उभरती है वह छवि है ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी की। यह हम सभी का सौभाग्य है कि इस 26 सितंबर 2020 में हम उनकी 200वीं जयंती मना रहे हैं। ईश्वरचंद्र विद्यासागर जी वह सागर हैं जिनके द्वारा किए गये कार्य आज तक हम सभी का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

आरंभिक जीवन

ब्रिटिश शासन में बंगाल प्रेसीडेंसी के मेदिनीपुर जिले के वीरसिंह ग्राम में 26 सितंबर 1820 को एक निर्धन भगवतपरायण ब्राह्मण के घर इनका जन्म हुआ। इनके पिता जी ठाकुरदास बंधोपाध्याय जी सरल, बुद्धिमान व्यक्ति थे, तथा माता भगवती देवी धार्मिक महिला थीं। जन्म के समय ही जब बालक की कुंडली देख पंडित जी ने बताया कि यह बालक अनंत काल तक अपने सत्कर्मों के लिए समाज में अमर रहेंगे,पर गरीब माता पिता को यह स्वप्न सा लगा।

प्रारंभिक शिक्षा गांव के पाठशाला में ही हुई,, उनके गुरु कालीकांत जी ने बालक की प्रतिभा का मूल्यांकन कर उनके पिता को बालक ईश्वरचंद्र को आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता भेजने के लिए कहा। 1828 में आठ वर्षीय बालक ईश्वरचंद्र को उनके पिता एवं गुरू कालीचरण कलकत्ता लेकर आए,, गांव से कलकत्ता तक की साठ मील की दूरी तीनों ने पैदल ही तय की।

वहां पहुंचकर बालक ईश्वरचंद्र बंधोपाध्याय ने संस्कृत कालेज में दाखिला लिया और 1841में अपनी शिक्षा पूर्ण की। इस दौरान ईश्वरचंद्र जी अपने पिता जी के मित्र के यहां ही रहते थे,,,उनके परिवार से मिले स्नेह ने उन्हें संवेदनशील बनाया, उन्हीं मित्र की एक विधवा बहन रायमणि के स्नेहसिंचित ममता ने उन्हें बहुत प्रेरणा दी,,शायद विधवा की स्थिति सुधार एवं विधवा पुनर्विवाह के लिए संघर्ष हेतु प्रेरणा का कार्य किया। 14वर्ष की आयु में ही ईश्वरचंद्र का विवाह धर्म परायण स्त्री दीनामणि जी से हुआ।

संस्कृत कालेज में ही उनकी विद्वता को देख लोगों ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि दे डाली। इस तरह ईश्वरचंद्र बंधोपाध्याय अब तक ईश्वरचंद्र विद्यासागर हो गये थे।

1841में विद्यासागर जी ने फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता में प्रमुख पण्डित आचार्य का पद ग्रहण किया। उसके बाद वे स्कूल इंस्पैक्टर एवं स्पेशल स्कूल इंस्पेक्टर के पदों पर अपनी सेवाएं देते रहे।

प्रगतिशील विद्यासागर

विद्वता तभी शोभती है जब वह विद्वता समाज के लिए हितकारी एवं परिवर्तन का वाहक बने। विद्यासागर जी ने ही प्रकांड संस्कृत के विद्वान थे अपितु एक बड़े समाज सुधारक भी थे। संस्कृत कालेज में संस्कृत अध्धयन के लिए केवल ब्राम्हणों और वैद्यों का ही चयन होता था परन्तु

अपने प्रयासों से उन्होंने हर जाति वर्ण के लिए संस्कृत कालेज के द्वार खुलवाए। उन्हें धार्मिक कट्टरपंथियों का पग पग पर सामना करना पड़ा,पर मजबूत इच्छाशक्ति के धनी विद्यासागर जी किसी और ही मिट्टी के बने थे।

विधवा पुनर्विवाह एक्ट

वे तो मानों समाज में परिवर्तन की बयार बनने के लिए ही जन्मे थे,, विधवाओं की स्थिति आज दो सौ वर्षों बाद भी बहुत अच्छी नहींहै, तो आज से दो सदी पहले तो आप सोच ही सकते हैं कि क्या स्थिति रही होगी,,नौ दस वर्ष की आयु में ही लड़कियों के विवाह हो जाते थे,, कहीं कहीं चार पांच वर्ष की आयु में ही विवाह होने पर वर को न भी देखने पर यदि वर कुछ वर्षों में यदि न जीवित रहे तो वह सात आठ वर्षों की कन्यायें पूरा जीवन विधवा की तरह जीने के लिए बाध्य थीं,, कयी बार दोनों ही पक्षों के परिवार जन बाल विधवा को रखने के लिए तैयार न होते तो विधवा को किसी आश्रम में पूरा जीवन निराशा की आड़ में पूरा जीवन बिताना पड़ता। इन्हीं विधवाओं की दीन दशा ने संवेदनशील विद्यासागर जी के मन को बहुत झझकोरा, उन्होंने लोकमत तैयार कर विधवा पुनर्विवाह के लिए तत्कालीन भारत सरकार के पास याचिका दायर की, एक लंबे संघर्ष के बाद 26 जुलाई 1856 को विधवा पुनर्विवाह एक्ट लागू किया गया, जिसके तहत प्रथम विवाह विद्यासागर जी ने अपने ही पुत्र का कराया,, उस समय यह कोई साधारण बात न थी,, कट्टरपंथियों और समाज के रूढ़िवाद से जकड़े लोगों को जगाना आसान कार्य न था,, पर आसान कार्यों के लिए विद्यासागर जन्मे भी न थे।

बालिका एवं नारी शिक्षा के मूल कर्ता धर्ता

शिक्षा बिना मनुष्य जानवर के समान होता है,, शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए विद्यासागर जी ने 20 आदर्श विद्यालय खुलवाए, और स्त्री शिक्षा को उन्होंने अपना ध्येय बना लिया, पूरे बंगाल में घूम घूम कर लोगों के बीच जा जा कर उन्होंने लड़कियों को पढ़ाने के लिए निवेदन किया और लोगों को जागरूक किया।

1857 -1858 के बीच वे लगभग 35 बालिका विद्यालय खोल चुके थे,, उन्होंने गांव गांव से लड़कियों को विद्यालय लाने ले जाने के लिए पालकियों की व्यवस्था भी कराई,, उस समय इन विद्यालयों में लगभग 1300 बालिकाएं पढ़ने के लिए आती थीं,,, बालिकाओं से कोई फीस न ली जाती थी एवं उन्हें निशुल्क पुस्तकें भी उपलब्ध करायी जाती थीं,, लाने ले जाने वाली पालकी पर मनुस्मृति का वाक्य लिखा था कि लड़कियों को भी लड़कों के समान ही शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

विद्यासागर जी के ऐसे ऐतिहासिक पहल पूरे देश के लिए एक प्रेरणा थी,, चहुंओर समाज में सुधार के कार्य चल रहे थे,, उनके कार्यों से प्रभावित होकर शांतिपुर ग्राम के बुनकरों ने ऐसी साड़ियां बुनीं जिन पर 'चिरंजीव विद्यासागर' लिखा था।

उन्हें इस सब सुधारों के लिए कट्टरपंथियों का बहुत सामना करना पड़ा। नारी शिक्षा के लिए 'बैठुनू' विद्यालय के निर्माण कराये।

संथाल जनजाति के लिए समर्पित विद्यासागर

अपने जीवन के अंत 18-20वर्ष उन्होंने बिहार अब झारखंड के जामताड़ा जिले के करमाताड़ा गांव में सन्थाल आदिवासियों के साथ जीवन बिताया । वे अच्छे पदों पर रहते हुए भी अतिसादगी पूर्वक अपना जीवन बिताते थे,, मां के हाथ का बनाया सूत का ही वस्त्र धारण करते थे,, ब्रिटिश शासन काल में ब्रिटिश उनकी सलाह के बगैर कोई काम न करते थे,, वे एक व्यक्ति नहीं एक संस्था हैं जिनसे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला, जुलाई 1891 में वे गोलोकवासी हो गये और पीछे छोड़ गए एक बेहतर संवेदनशील समाज।

विद्यासागर जी ने अपने जीवन में धन का उपयोग स्वयं के लिए बहुत कम किया,, अर्जित किया हुआ सारा धन लोगों की भलाई और बालिका शिक्षा के लिए जाता था, उन्होंने समाज को जितना दिया समाज ने भी उन्हें बहुत आदर दिया।

पश्चिम बंगाल में उनके सम्मान में विद्यासागर सेतु, विद्यासागर मेला, विद्यासागर छात्रावास , विद्यासागर रेलवेस्टेशन का नामकरण किया गया, विद्यासागर जी को सम्मान व्यक्त करने के लिए उनके नाम से डाक टिकट जारी किए गए। रामकृष्ण परमहंस जी भी विद्यासागर जी के कार्यों से अति प्रभावित थे। महान कवि रवींद्रनाथ टैगोर जी ने विद्यासागर जी के लिए कहा कि उनके जैसे मनुष्य बंगाल की धरती पर कम ही जन्म लेते हैं।

विद्यासागर जी कर्म, ज्ञान के अथाह सागर हैं, यदि इस सागर की कुछ बूंदें हम लोग ग्रहण कर उसे अपने जीवन में उतार सकें तो यह इक्कीसवीं सदी में भी समाज के बड़े सकारात्मक परिवर्तन का कारण बन सकती हैं। विद्यासागर जी के स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह एवं बहुपत्नी प्रथा उन्मूलन के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं स्त्री समाज सदैव उनका आभारी रहेगा।

स्त्री शिक्षा और विधवा विवाह के मसीहा

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

नीता चौबीसा

विद्यासागर जी कर्म, ज्ञान के अथाह सागर हैं, यदि इस सागर की कुछ बूंदें हम लोग ग्रहण कर उसे अपने जीवन में उतार सकें तो यह इक्कीसवीं सदी में भी समाज के बड़े सकारात्मक परिवर्तन का कारण बन सकती हैं। विद्यासागर जी के स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह एवं बहुपत्नी प्रथा उन्मूलन के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं स्त्री समाज सदैव उनका आभारी रहेगा।

सर्वमङ्गला,73,वृंदावन कॉलोनी,सुभाष नगर,बाँसवाड़ा
राजस्थान पिन-327001 मोब-9414567748

ईश्वर चंद्र विद्यासागर अर्थात भारतीय इतिहास के ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र जो ध्रुव तारे की भांति दिकभ्रांत पीढ़ियों का दिशानिर्देश करते रहे ताकि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से पूर्व के एक ऐसे दौर में जबकि अंग्रेजी राज में अधिकतर लोग अपने प्राचीन सांस्कृतिक गौरव को भूला कर आत्महीनता का अनुभव करते थे और पाश्चात्यकरण की अंधी दौड़ में भारतीय होने की गरिमा से पथभ्रष्ट हो चुके थे, बंगाल से कुछ बुलंद आवाजे उठी जिसे भारतीय इतिहास का पुनर्जागरण काल कहा जाता है, जिसकी एक प्रमुख प्रतिनिधि आवाज बन कर उभरे ईश्वरचंद विद्यासागर।उनकी मेधाशक्ति ने तत्कालीन भारतीय समाज एव राष्ट्र के प्रति पूर्ण निष्ठावान सांस्कृतिक संरक्षक का कार्य करते हुए भी तत्कालीन रूढ़िग्रस्त मानसिकता को सुधारने का बीड़ा उठाया। 19वीं शताब्दी के दौरान गुलाम भारत में स्त्री की सामाजिक दशा व स्थिति अत्यंत दयनीय थी।उन्होंने बालिका-अशिक्षा, बाल-विवाह, पर्दा-प्रथा, सती प्रथा, बहुपत्नी प्रथा के खिलाफ न केवल आवाज उठाई वरन नारी उद्धारक के रूप में अनेक महत्वपूर्ण कार्य कर वे उस युग के नारी समर्थकों के मसीहा हो गए जिनके कार्य अविस्मरणीय है।जब भारत मे नारी त्रासदीपूर्ण जीवन जीने को विवश थी, घर घर अशिक्षित बाल विधवाए होती थी जो नारकीय जीवन जीती थी या फिर ऐसे त्रासदीपूर्ण जीवन से बचने हेतु, वे सती होने को बाध्य हो जाती थी, तब वे नारी विमर्श और नारी के नारकीय यंत्रणा से मुक्ति की सशक्त आवाज़ बन कर उठे। एक ऐसी आवाज़ जैसे अनसुना करना या दबा देना नामुमकिन था। ऐसे में यह आवाज़ केवल एक नारी समर्थन की आवाज़ नही रह कर समाज सुधार का एक बड़ा आंदोलन बन गई। 19 वी शताब्दी में बंगाल से आरंभ हुए इस सांस्कृतिक पुनर्जागरण के चुनोतियो से जुझारू पढ़े लिखे नौजवानों में जो नाम अग्रिम पंक्ति में लिए जाते है, वे हैं- राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद जैसे कुछ समाज सुधारक नारी उत्थान और स्त्री अस्मिता की इस चुनोतिपूर्ण लड़ाई को लड़ रहे थे।

स्त्री विमर्श की यह लड़ाई न केवल समाज सुधार का कारण बनी बल्कि भारत की स्वतंत्रता आन्दोलन में भी भारतीय नारी की सहभागिता को बढ़ा कर स्त्री की गरिमा को समृद्ध करने में भी कामयाब रही। ईश्वरचंद विद्यासागर नारी अस्मिता के हक में लड़ने वाले प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में समूचे विश्व मे आज भी भारत की मूल पहचान बने हुए है। वस्तुतः विद्यासागर मात्र एक व्यक्तित्व नही वरन एक पूर्ण कृतित्व है जिनका समूचा जीवन ही आदर्श कर्म की गीता से अनुप्राणित है, स्वयमेव एक दृष्टांत है।यही कारण है कि वह स्त्री- स्वातंत्र्य की यह आदर्श मिसाल उन्होंने अपने स्वयं के जीवन मे भी सहर्ष पूरी जिम्मेदारी से उठाई जो उनके जीवन मूल्यों, आदर्शों की उनके कार्यो मे साक्षात चरम परिणीति है। स्वयम से ऊपर उठ कर बहुजनहिताय जीवन जीने की कला का जीवंत प्रमाण विद्यासागर राष्ट्रभक्त, समाज सेवक, समाज सुधारक, शैक्षिक चिन्तक, नारी समर्थक एव स्वतंत्रता सेनानी सभी एक साथ है। दो सदी पूर्व ही उन्होंने समाज के अनगढ़ बदलाव को नारी विमर्श का तथाकथित ढिंढोरा न पीटते हुए इस ओर युगांतरकारी कदम बढ़ा लिए थे।वे महिला सशक्तिकरण के पुरजोर समर्थक व महिला क्रांति के प्रमुख प्रणेता रहे,वह भी भारत की आजादी के पूर्व के उस दौर में

जब महिलाओं का घर की देहरी लांघना भी अपराध समझा जाता था। एक ऐसे परम्परागत रूढ़िवाद समाज की रीढ़ पर वार करते हुए विद्यासागर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय महिलाओं को जोड़ कर उन्हें राष्ट्रीय सहभागिता का संचालक बना कर उन्हें गरिमामय फलक का विस्तार दिया और नारी की अस्मिता को नव पहचान दी।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर उन्नीसवीं सदी के एक महान बहु प्रतिभाशाली समाज सुधारक, प्रकांड विद्वान, महान शिक्षाविद, अनुवादक और प्रगतिशील विचारधारा के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने बंगाली गद्य को आधुनिक बनाने का भी अभिनव प्रयास किया था।दो सदी बाद पिछले दिनों उनका नाम तब पुनः प्रकाशित हुआ जब राजनीतिक वितंडावाद के चलते पिछले दिनों उनकी प्रतिमा बंगाल में टूट गई और उसकी प्रतिमा की पुनर्स्थापना व अनावरण कर नव पीढ़ी ने उन्हें आत्मीय श्रद्धांजलि दी।

विध्यसागर का जन्म 26 सितंबर, 1820 को बंगाल के मेदिनीपुर में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वह असाधारण विद्या कौशल वाले बालक थे। उस युग मे अभावग्रस्त जीवन जीते हुए भी उन्होंने संस्कृत महाविद्यालय से स्नातक किया। ईश्वरचंद्र को गरीबों और दलितों का संरक्षक माना जाता था। उन्होंने स्त्रि यों की शिक्षा और विधवा विवाह कानून के लिए आवाज उठाई।उन्होंने बंगाल में पुनर्जागरण की अलख जगाई। उनके बचपन का नाम ईश्वर चंद्र बंद्योपाध्याय था। संस्कृत भाषा और दर्शन में अगाध ज्ञान होने के कारण छात्र जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की थी। 'विद्यासागर' दो संस्कृत शब्दों का मेल है। 'विद्या' का अर्थ है 'ज्ञान' और 'सागर' का अर्थ है 'समुद्र या महासागर'। इस प्रकार, विद्यासागर का अर्थ हुआ- 'ज्ञान का महासागर'। उन्होंने सचमुच इस उपाधि को सार्थक किया। जीवन भर वे विद्या की देवी भगवती वीणा पाणी की सेवा में संलग्न रहे और शिक्षा की अलख जगाते रहे।

ईश्वर चंद्र ने स्थानीय बांग्ला भाषा और लड़कियों की शिक्षा के लिए विद्यालयो की एक श्रृंखला के साथ कोलकाता में मेट्रोपॉलिटन कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने इन स्कूलों को चलाने में आने वाले पूरा खर्च स्वयं उठाया। उन्होंने लगभग 35 नवीन विद्यालयों की स्थापना की और इनके खर्च के लिए वह विशेष रूप से बच्चों के लिए बांग्ला भाषा में लिखी गई अपनी किताबों की बिक्री से फंड जुटाते थे।उन्होंने संस्कृत कॉलेज में आधुनिक पश्चिमी विचारों का अध्ययन शुरू कराया था। उन्होंने बंगाली भाषा के विकास में भी महती योगदान दिया था और इसी योगदान के कारण उन्हें 'आधुनिक बंगाली भाषा का जनक'माना जाता है। वे कई समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं के साथ भी गंभीरता से जुड़े हुए थे। उन्होंने सामाजिक सुधारों की वकालत करने वाले कई महत्वपूर्ण लेख भी लिखे जो तत्कालीन युग मे जनचेतना का कारण बने। उन्होने बांग्ला लिपि के वर्णमाला को भी सरल एवं तर्कसम्मत बनाया। संस्कृत अध्ययन की एक सुगम प्रणाली निर्मित की। इसके अतिरिक्त शिक्षाप्रणाली में भी अनेक सुधार किए। समाजसुधार उनका प्रिय क्षेत्र था, जिसमें उन्हें कट्टरपंथियों का तीव्र विरोध सहना पड़ा और अनेक बार उन्हें प्राणभय तक आ बना।

1855 ई. में जब उन्हें स्कूलों का निरीक्षक/इंस्पेक्टर बनाया गया तो उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा के लिए स्कूल सहित कई नए विद्यालयों की स्थापना की। अंग्रेजी सरकार के उच्च अधिकारियों को उनका ये कार्य पसंद नहीं आया तब अंततः उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। वे बेथुन के साथ भी जुड़े हुए थे, जिन्होनें 1849ई. में कलकत्ता में स्त्रियों की शिक्षा के लिए प्रथम स्कूल की स्थापना की थी। उनके विचार और शिक्षाएं और समग्र जीवन, युगों तक आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शन का कार्य करेंगी।

विधवा-पुनर्विवाह एवं स्त्री शिक्षा के लिए उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया था। विधवा-पुनर्विवाह को कानूनी वैधता प्रदान करने वाले अधिनियम को पारित कराने वालों में एक नाम उनका भी था। वे विधवा-पुनर्विवाह के प्रबल समर्थक थे। जब विधवा विवाह के खिलाफ घोर प्रदर्शन हो रहे थे तब भी बिना विचलित हुए उन्होंने विधवाओं के विवाह के लिए आवाज उठाई। उनके जीवन की कुछ ख़ास घटना ने उन्हें विधवाओं के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बना दिया था।

विद्यासागर के एक शिक्षक थे- शंभूचंद्र वाचस्पति. उनकी पत्नी का निधन हो गया था। उनके मित्रों ने उन्हें फिर से विवाह करने की सलाह दी। वाचस्पति विद्यासागर को अपने पुत्र तुल्य मानते थे। उन्होंने विद्यासागर से सलाह ली। विद्यासागर ने स्पष्ट मना कर दिया। उन्होंने कहा- 'इस आयु में विवाह करने का मतलब है किसी लड़की का जीवन बर्बाद करना!' उन्होंने वाचस्पति को काफी समझाया, लेकिन वाचस्पति ने एक गरीब लड़की से शादी कर ली। जब विद्यासागर को इसकी जानकारी हुई तो उन्होंने वाचस्पति को अंतिम प्रणाम कर यह कहते हुए अलविदा कह दिया-' मैं आपके यहां अब कभी नहीं आउंगा!' कुछ समय बाद वृद्ध वाचस्पति का निधन हो गया।तब उस लड़की के सामने पूरा जीवन पड़ा था, जो उस समय की मान्यताओं के मुताबिक नारकीय था। विद्यासागर के मानस पर इस घटना का बहुत

गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने विधवा विवाह के लिए जंग छेड़ दी। उन्हें पता था कि समाज उनके खिलाफ खड़ा हो जाएगा। लेकिन उन्होंने इसका भी समाधान ढूंढ लिया। जाने कितने दिन-रात उन्होंने अपने संस्कृत कॉलेज में ही बिता दिए ताकि वे शास्त्रों में विधवा विवाह के समर्थन में कुछ शास्त्रीय तर्क ढूंढ सकें। अथक परिश्रम के बाद अंततः 'पराशर संहिता'में उन्हें वह तर्क मिला जो कहता था कि 'विधवा विवाह धर्मसम्मत है।'

इसी तर्क को आधार बनाकर ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने हिंदू विधवा पुनर्विवाह एक्ट की लड़ाई शुरु की और इसकी चरम परिणीति के रूप में 19 जुलाई 1856 को यह एक्ट पास हुआ और चार महीने बाद जब 7 दिसंबर 1856 को कानून बना तब पहला विधवा विवाह हुआ और उन्हें आत्मिक संतोष हुआ। उन्होंने प्रथम विधवा विवाह करवाया। इस विवाह को देखने इतनी भीड़ उमड़ी कि पुलिस बुलानी पड़ी। यह विवाह था- 'कालीमती' का विवाह जो महज 10 साल की उम्र में ही विधवा हो गई थी। ईश्वरचंद्र ने अपने मित्र श्रीचंद्र विद्यारत्ना से कालीमती की शादी कराई। बहुत सारे लोगों ने इस विवाह का विरोध किया लेकिन दूसरी तरफ ऐसे लोग भी थे, जो ईश्वरचंद्र के साथ मजबूती से खड़े रहे। इतना ही नही कार्य रूप में अपने आदर्श को परिणीति देते हुए उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह भी एक विधवा से ही करवाया था।

उन्होंने बहुपत्नी प्रथा और बाल विवाह के खिलाफ भी आवाज उठाई थी। उनके इन्हीं प्रयासों ने उन्हें समाज सुधारक के तौर पर पहचान दी।उस दौर में विद्यासागर को रुढ़िवादियों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा लेकिन कुछ ऐसे भी थे जो उन्हें अपना मसीहा मानते थे,उनके साथ कदम से कदम मिलाकर खड़े रहते थे। ऐस ही कुछ साड़ी बुनकरों ने उनके प्रति अपना सम्मान व्यक्त करने के लिए साड़ियों पर बंगाली में कविता बुनना शुरु कर दिया,जिसमे कहा गया है- 'बेचे थाको विद्यासागर चिरजीबी होए 'अर्थात 'जीते रहो विद्यासागर, चिरंजीवी हो !'

नैतिक मूल्यों के संरक्षक और शिक्षाविद् विद्यासागर का मानना था कि अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं के ज्ञान का समन्वय करके भारतीय और पाश्चात्य परंपराओं के श्रेष्ठ को हासिल किया जा सकता है।वे एक दार्शनिक, अकादमिक शिक्षक, लेखक, अनुवादक, समाज सुधारक और परोपकारी व्यक्तित्व थे।

संस्कृत भाषा और दर्शन में अगाध ज्ञान होने के कारण विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि प्रदान की थी। इसके बाद से उनका नाम ईश्वर चंद्र विद्यासागर हो गया था। उनका कहना था की कोई भी व्यक्ति अच्छे कपड़े पहनने, अच्छे मकान में रहने तथा अच्छा खाने से ही बड़ा नहीं होता बल्कि अच्छे काम करने से बड़ा होता है। अपनी सहनशीलता, सादगी तथा देशभक्ति के लिए विशिष्ट योगदान करने वाले ईश्वरचंद्र ने स्त्री शिक्षा तथा विधवा विवाह प्रथा को सुधारने का काम किया। संस्कृत कालेज में अब तक केवल ब्राह्मण और वैद्य ही विद्योपार्जन कर सकते थे, अपने प्रयत्नों से उन्होंने समस्त हिन्दुओं के लिए विद्याध्ययन के द्वार खुलवाए।उनकी मृत्यु जुलाई 1981 में हुई। उनकी मृत्यु के बाद रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा था वह अत्यंत महत्वपूर्ण है।रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा था - 'लोग आश्चर्य करते हैं कि ईश्वर ने चालीस लाख बंगालियों में कैसे एक मनुष्य को पैदा किया !'

आज भी बंगाल और झारखंड में अनेक स्टेशनों, छात्रावासों और विद्यालयो का नामकरण उनके नाम पर अभिहित है। साहित्यिक व दर्शन उनके योगदान का ऋणी रहेगा और भारतीय सदा उनके लिए गौरवान्वित अनुभूत करेंगे।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने हिंदू विधवा पुनर्विवाह एक्ट की लड़ाई शुरु की और इसकी चरम परिणति के रूप में 19 जुलाई 1856 को यह एक्ट पास हुआ और चार महीने बाद जब 7 दिसंबर 1856 को कानून बना तब पहला विधवा विवाह हुआ और उन्हें आत्मिक संतोष हुआ। उन्होंने प्रथम विधवा विवाह करवाया। इस विवाह को देखने इतनी भीड़ उमड़ी कि पुलिस बुलानी पड़ी। यह विवाह था- 'कालीमती' का विवाह जो महज 10 साल की उम्र में ही विधवा हो गई थी।

सत्सङ्ग

स्वामी अखण्डानंद सरस्वती

'सङ्ग' शब्द हिन्दी में 'साथ' के अर्थ में होता है और सन्त में आसक्ति का नाम 'सत्सङ्ग' होता है। आसक्ति माने प्रीति। गीता में तो 'सत्' शब्द की 'डिक्शनरी' है-

सद्भावे साधूभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते।

प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते।।

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।

कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ।।

(गीता 17.26-27)

देखो 'सत्' शब्द का इसमें कितना अर्थ दिया है- सद्भाव, साधुभाव, प्रशस्त, कर्म, यज्ञ, दान, तप और इनके लिए जो प्रयत्न हैं उसके लिए भी 'सत्' शब्द बनता है। शायद ऐसा और शब्द गीता में नहीं है, जिसके इतने अर्थ बताये गये हों।

सत्सङ्ग का एक अर्थ यह है कि सत्स्वरूप जो आत्मा है, उसमें स्थित होना। दूसरा अर्थ हुआ कि अपने हृदय में जो सद्भाव है, दूसरों के प्रति साधु भाव है, दूसरों का भला करने का जो भाव है, उसमें स्थित रहना। जो अच्छे-अच्छे लोग हैं उनका संग करो और यज्ञ, दान, तप करो। इनके लिए प्रयास करो। इनको 'सत्' बोलते हैं और फिर इन 'सत्' शब्द के अर्थ की प्राप्ति, जिस व्यक्ति के संग से मिलती हो, उस व्यक्ति के संग को 'सत्संग' कहते हैं।

'सतां संगो हि भेषजम्' एक ने कहा कि गुड़ खा लो, फिर कहा कि नहीं, गुड़मार बूटी खालो। दूसरे ने कहा-खाना ही तो है गुड़ खाना भी खाना है और गुड़मार बूटी भी खाना है। चाहे जो खा लें। तीसरे ने कहा-नहीं। गुड़ आपके जीवन में मधुमेह पैदा कर सकता है और गुड़मार बूटी मधुमेह को मिटा सकती है। तो एक संग होता है जो संसार में आसक्ति बढ़ा करके फँसाता है और एक संग होता है वह, जो संसार से आसक्ति छुड़ाता है।

सतां संगो हि भेषजं, सर्वसंगापहो हि माम्।

(भागवत ११-१२-२)

सत्सङ्ग संसार की सम्पूर्ण आसक्तियों को मिटाने वाला परम औषध है, भेषज है। इसलिए 'सत्सङ्ग' शब्द का अर्थ भगवत्-संग भी होता है, भगवदासक्ति भी होता है और जिससे भगवदासक्ति मिलती हो, उन संतों की आसक्ति, उन सत्-कर्मों की आसक्ति, उन सत्-शास्त्रों की आसक्ति, ये सभी अर्थ 'सत्सङ्ग' के अन्तर्गत आते हैं।

॥ ओम नारायण ॥

सत्सङ्ग का एक अर्थ यह है कि सत्स्वरूप जो आत्मा है, उसमें स्थित होना। दूसरा अर्थ हुआ कि अपने हृदय में जो सद्भाव है, दूसरों के प्रति साधु भाव है, दूसरों का भला करने का जो भाव है, उसमें स्थित रहना। जो अच्छे-अच्छे लोग हैं उनका संग करो और यज्ञ, दान, तप करो।

सेठी एण्ड सन्स, ४४ यू. बी. जवाहर नगर, कमला नगर, दिल्ली द्वारा 'आज का सत्संग २०१६' में परम पूज्य अनन्तश्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती महाराज के प्रवचनों से।

नवभारत फाउण्डेशन की स्थापना

नेशन फर्स्ट नेशन लास्ट : इन्द्रेश जी

भारत के साथ-साथ विश्व को भी संवारेंगे

23 सितम्बर 1918 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने नवभारत की स्थापना की थी। नेता जी के प्रयास से उस समय से ही अनेक कार्यक्रम होते रहे। 23 सितम्बर 1918 एक ऐसी तिथि है जो विश्व के भूगोल में बदलाव का बहुत बड़ा कारण रही है। नेता जी के उसी प्रकल्प को आधार बनाकर प्रबुद्ध लोगों और नवजवानों को एक आंदोलन फोरम फॉर अवेयरनेस ऑन नेशनल सेक्युरिटी के नाम से चल रहा है जिसे संक्षेप में 'फैन्स' कहा जाता है। इसी प्रकल्प को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ इन्द्रेश जी के संरक्षण और मार्गदर्शन में नवभारत फाउण्डेशन की शुरूआत की जा चुकी है। इस नये फाउण्डेशन की स्थापना के अवसर पर इन्द्रेश जी द्वारा दिये गए उद्धबोधन को शब्दशः प्रस्तुत किया जा रहा है।

मैचोर तथा यूथ यानि युवक प्रबुद्ध और युवक। इनका मिला जुला एक मूवमेंट जो पहले से था और फैन्स के रूप में एक प्रकल्प के रूप में फैन्स में कार्यरत था। फैन्स फॉरम फार एवेयरनेस ऑन नेशनल सिक्युरिटी उसके समय इस मुख्य कार्यक्रम 23 सितंबर 1918 को हर साल सेलिब्रेट करना जब भारतीय सेनाओं ने होटनमा एंपायर से इजराइल के स्वतंत्रता के इतिहास को जन्म दिया था तीनमूर्ती चैक जिसकी यादगार में एक स्मारक है। 900 के लगभग भारतीय सैनिकों का बलिदान हुआ और हाइफा नाम का एक शहर कहिए एक छोटा समुद्र का द्वीप कहिए जो धरती से जुड़ा हुआ था उसको आजाद करवा कर इजराइल की स्वतंत्रता के युग को जन्म दिया था। उसको वो मानते हैं। ऐसे ही भारत का प्रथम स्वतंत्रता दिवस 30 दिसंबर 1943 नेताजी जी ने जब पोर्ट ब्लेयर में तिरंगा लहरा कर घोषणा की थी- दिल्ली चलो, अब दिल्ली दूर नहीं। दुनिया के 13 देशों में मान्यता दे दी थी 19 देशों में भारत के राजदूत घोषित हो गए थे पूरा मंत्रिमंडल बन गया था बैंक भी था करेंसी भी थी झंडा भी था राष्ट्रगान भी था डिप्लोमेटिक रिलेशंस भी थे भारत खंडित नहीं था। दुर्भाग्य से बाद में खंडित हुआ संतालीस में। उसकी शहीद स्वराज चिप्सू नमन यात्रा भी करता है ऐसे ही उनके और एक दो कार्यक्रम हैं उन्हीं में नव भारत फाउंडेशन भी एक कार्यक्रम के रूप में था। परन्तं फेन्स में कुछ अन्य प्रोजेक्ट बन गए हैं। एक प्रोजेक्ट है नो मोर पाकिस्तान, टूटता विखरता पाकिस्तान। विश्व को और भारत को उसकी जानकारी मिले और एक जन्मादेश जो पाप रूप में अपराध रूप में है उसका धरती पर ना रहने का समय आ गया है इस रूप में वह प्रोजेक्ट काम करता है इसी प्रकार से चीन हिमालय को खाली करे सिंहक्यान, ताइवान, तिब्बत और हांगकांग को स्वतंत्र देश की मान्यता मिले यह एक प्रकल्प है। ऐसे ही पुत्रं यत समुद्रश्चे, हिमाद्रे चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारते नाम भारती यत्र संतति।। एक तरफ हिमालय दूसरी तरफ हिंद महासागर तीसरी और फारस की खाड़ी ईरान आदि चैथी और इंडोनेशिया। राजसौ यज्ञ के बाद युधिष्ठिर जहां के राजा घोषित हुए थे आज उसके 54 देश है अलग अलग मतों, धर्मों के देश हैं इनमें कॉनफ्लिक्स न हों। व्हेन देयर कल्चरल बैकग्राउंड इज द सेम। तो इसलिए कास्ट कनफ्लिक्स नहीं हो रिलीजन कनफ्लिक्स

नहीं हो लिंग कनफ्लिक्स नहीं हो बाउन्ड्री के डिस्प्यूट्स न हो। ऐसा एक हिमालय हिंद महासागर राष्ट्र समूह ऑफ द 54 कंट्रीज यह भी उनका एक प्रोजेक्ट है जिस पर काम हो रहा है। और ऐसे ही चोल वंशीय शासन जहां था ऐसे ही एशिया के 14 - 15 देश हैं जो समान सिविलाइजेशन और कल्चर के हैं रिलीजियस लिए अलग-अलग है स्टेटस ऑफ नेशन है हर एक के बाद इनका भी एक छोटा समूह यह भी डिवेलप हो रहा है और इसलिए ऐसे प्रोजेक्ट्स देखते हुए कुछ दिन पूर्व एक निर्णय लिया था नवभारत फाउंडेशन को एक प्रोजेक्ट के रूप में या एक मूवमेंट के रूप में स्वतंत्र अस्तित्व दिया जाए और स्वतंत्र रूप से एक प्रबुद्ध एवं युवा जन का आंदोलन एक नए भारत के निर्माण का जो इस समय अवसर आया है तो भारत के प्रबुद्ध और युवा योग्य रीति से सोचने वालों को वह मंच मिल जाए इसलिए आज भारत फाउंडेशन का नए कलेवर में शुभारंभ करने के लिए हम सब एकत्रित हुए हैं। आज के इस तरंग गोष्टी यानी वेबीनार में उपस्थित भाइयों और बहनों मैं इस समय लखनऊ में हूं वहीं से आप से वार्ता कर रहा हूं यहां पर एक चर्च में क्रिसमस कार्यक्रम था एक मुस्लिम मंच के रूप में बड़ी संख्या में मुसलमानों का कार्यक्रम था। कल दिल्ली में एथोपियन एंबेसी में अनेक देशों के डिप्लोमेट्स के साथ और भारत के कुछ प्रबुद्धजन ने ईसाइयों के साथ भी क्रिसमस था। एक मजेदार बात सुना देता हूं। मैंने मां मरियम और उनकी गोद में आने वाले ईसा इसका विस्तार से वर्णन किया वहां संक्षेप में परंतु विस्तृत वर्णन संक्षिप्त वर्णन था इस सत्य को हमें भी जानना चाहिए। जब मैसेंजर कहिए देवदूत कहिए ईसा के रूप में आया तो येरूसलम के राजा की और सेठ की सबसे बड़ी गौशाला लगभग 20200 से ओतप्रोत गौशाला में उसका अवतरण हुआ था और उनको पहला खाद्यान्न भोजन भी गाय के थन से दूध का ही प्राप्त हुआ था और पहला बिछोना भी वह गाय के उम्दा घास का ही प्राप्त हुआ था नाम का यीशु ईसा। शिष्यों का फोलोवर का नाम था ईसाई रिलीजन का नाम मार्ग का नाम बना ईसाइयत और पूजा स्थल का नाम गिरजाघर था। ये चारों शब्द संस्कृत शब्द है जब धीरे-धीरे युरोप का साम्राज्यवाद फिर से अंगड़ाई लेने लगा इसलिए ईसाइयत फैले तो यूरोपियन साम्राज्यवाद के रूप में जन्म ले और फैले इसलिए अनेक वर्षों बाद उसको लेटिन और इंग्लिश ट्रांसलेशन में नए नाम दिए गए। ईशा क्राइस्ट हुए फोलोवर क्रिश्चिन हुआ, मार्ग रिलीजन क्रिश्चियनिटी हुआ, पूजा स्थल का नाम चर्च हुआ। ताकि रिलिजन इनफ्रिलियोजन से ओत-प्रोत हो जाए इस डिजाइन में ईसाइयत का विस्तार प्रारंभ हुआ है। मैंने इसकी एक सुंदर व्याख्या करते हुए इसको ईसाइयों में रखा तो उनको सत्य का आभास भी हुआ और यह भी उनको लगा कि जितना वह लोग जानते हैं उससे कहीं अधिक समाज में और भी लोगों को बहुत सत्य मालूम है। मैंने वहां पर यह भी बात कही सारे विषय नहीं रखूंगा एक दूसरा टोपिक जरूर रखूंगा सुख और दुख यानी स्वर्ग और नर्क जन्नत और जहन्नुम हेवन ओर हेल। ये बाई सिविलाइजेशन नहीं है बाइ कल्चर नहीं है बाइ कास्ट नहीं है बाई रिलीजन नहीं है बाई लैंग्वेज नहीं है बाई मनी नहीं है बाई एजुकेशन नहीं है बाई स्टेटस पद से नहीं है और इसलिए सुख दुख का स्वर्ग नरक का नियंत्रक मापक केवल कर्म है। कर्म अच्छे होंगे तो सुख और नरक स्वर्ग है कर्म बुरे होंगे तो दुख और नर्क है। इसलिए छुआछूत, धर्मांतरण, धर्मांधता, लव जिहाद लिंगभेद अन्य प्रकार के भेद यह नर्क है दुख है। इनसे मुक्ति सुख और स्वर्ग है। इसलिए इनका नियंत्रक और मापक आदमी का केवल और केवल कर्म है इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है इसलिए फॉलो योर ओन डोण्ट क्रिटिसाइज अदर्स इफ यू विल क्रिटिसाइज इफ यू विल कन्वर्ट तो कनफ्लिक्स जन्म लेंगे इफ यू रेस्पक्ट एण्ड गिभ ऑनर टू अदर्स तो प्रेम और सद्भाव जन्म लेगा। ऐसी सुंदर वार्ताओं में क्रिसमस के उत्सव को मनाते हुए आप सबके बीच में उपस्थित हुआ हूं। आज लखनऊ से दिल्ली आते हुए फ्लाइट साढे तीन घंटे की देरी से थी इसलिए 11:30 बजे वाले कार्यक्रम में मैं 2:30 बजे पहुंचा और 2:30 बजे वाले कार्यक्रम में 4:30 बजे पहुंचा इसलिए थोड़ा देर से आप से जुड़ा हूं और

आप सब ने परिचय भी कर लिया कुछ बंधुओं ने विचार भी रख लिए यह बधाई के योग्य है और समय पर समाप्त हो जाए इस बात को सोचते हुए कुछ संक्षेप में बातें कहूंगा। मैं वर्तमान को विश्व के और भारत के स्तर पर एक नाम देता हूं जो असंभव चीजें थी उनके संभव होन का युग जन्म ले चुका है। भारत के स्तर पर भी और विश्व के स्तर पर भी और समस्याओं का विकराल रूप भी सामने हैं और उनके समाधान निकालते हुए हमें अपने भारत के लिए और भारत को विश्व के लिए एक नई भूमिका निभाने का अवसर परिस्थितियां और ईश्वर देने जा रहा है। आज जब अमेरिका और भारत के प्रमुख मिलते हैं चीन और भारत के नेताओं का मिलन होता है तो विश्व में हर चैनल बोलता है अखबार लिखता है सोशल मीडिया पर उसका बहुत बड़ा आंदोलन चलता है दो महा शक्तियों का मिलन। यानि भारत महाशक्ति के क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है और उसको मान्यता भी मिल चुकी है किसी की मान्यता के सहारे पर अब भारत नहीं खड़ा है। यूएनओ की असेंबली को संबोधित करते हुए भारत के होनहार प्रधानमंत्री कहते हैं- अगर भारत को उसका योग्य स्थान नहीं मिला तो यूएनओ धीरे-धीरे इर्रेनिवेंट हो जाएगी इसलिए दुनिया के देशों को यूएनओ में भारत को ध्यान में रखना ही होगा और यूएनओ को जो इस समय कार्यक्रम है कार्यक्रम पद्धति है कार्य का स्वरूप है उसमें बड़े परिवर्तन की आवश्यकता है ताकि आने वाले वर्तमान और आने वाले भविष्य के प्रति यूएनओ अपनी जिम्मेदारी निभा सके पूरे विश्व ने इसको टिप्पणी नहीं की बल्कि स्वीकार किया। इसलिए भारत इस स्थिति में जरूर है। शरीर मन बुद्धि के लिए सहज सरल उपचार पद्धति, उसके लिए औषधि यह योग में है। पूरे विश्व में मान लिया और इसलिए योग दिवस ने जन्म ले लिया। कोई भी दिन जो यूएनओ से निर्धारित है इतने व्यापक रूप में नहीं मनाया जाता है जो यह योग दिवस मनाया जाता है। किसी भी मतपंथ के किसी भी विचार के किसी भी प्रकार के तंत्र के देश थे सब ने इसको स्वीकार किया है। भारत जब चीन ने आसुरी रूप दानवीर रूप को दिखाया और कोविड-19 कोरोना का एक बायोवेपन तैयार किया मानव और मानव जाति के विरुद्ध मानवता भी हाहाकार कर बैठे और मानव जाति दहशत में आकर मौत की तरफ बढ़ती चली जाए ईट इज नॉट वायरस फ्रॉम नेचर बाय नेचर इन नेचर इट इज ए वायरस फ्राम मेन मेड इन चाइना मेड बाय चाइना। पूरी दुनिया में संक्रमण किया पहले व्हाइटरेस कंट्रीज में फिर तबलीक का उपयोग करते हुए भारत और एशिया में जब तक ब्लैकरेस कंट्रीज की तरफ बढ़ा तो कोविड अपनी ताकत खो चुका था इसलिए ब्लैकरेस कंट्रीज जो 50 के लगभग हैं दुनिया में उनमें कोविड नगण्य है हाहाकार वाइटरेस कंट्रीज में है सर्वाधिक उसके बाद भारत और एशिया के अनेक देश है मिनिमम इन ब्लैकरेस कंट्रीज मैक्सिमम इन वाइटरेस कंट्रीज है। ऐलोपैथिक जो दुनिया की इस समय प्रधान चिकित्सा पद्धति है। एक साल तीन महीने बीत गए और वह पूरी तरह से असफल है उसकी दवाई नहीं निकाल सके। कभी तो बडी अजीब सा लगता है मरीज अस्पताल में प्राइवेट अस्पताल में है उसका बच्चा रो रहा है दवाई नहीं है या वह मर रहा है या वह ठीक हो रहा है और बिल दो चार लाख से लेकर 20 लाख का बन रहा है तो प्रश्न खड़ा होता है जब दवाई नहीं है तो भी ट्रीटमेंट क्या है और उसका इतना बड़ा बिल कैसे है इसलिए कहीं ना कहीं जीवन मूल्यों का पतन इंटलेक्चुअल लेवल पर इतना भोग वादी हो गया है इसलिए मैं कभी-कभी किसी चिकित्सक से और लोगों से पूछता हूं दवाई नहीं है ट्रीटमेंट हो रहा है। बिल बन रहा है 20 लाख का आखिरकार यह सब क्यों है और किसलिए है और कितना विचित्र है। जब दुनिया का डेथ रेट 6 परसेंट चल पड़ा था भारत ने परंपरागत दवाइयों से और पुरानी एचसीक्योर एम डब्लू से डेथ रेट कंट्रोल करते-करते 1.2 ले आया स्टिल मेडिसन इज नॉट देयर। दुनिया का रिकवरी रेट जब 54 से 56 परसेंट था भारत अपने रिकवरी नो कंट्री बिलीव और जैसे उसका प्रयोग हुआ तो वह अयोग्य घोषित हो गए ब्रिटेन ने किया 2000 रुपये से अधिक का वैक्सीन का एक डोज मिलेगा परंतु जब प्रयोग किया तो एलर्जेटिक निकली। रूस और अमेरिका जल्दबाजी में है अमेरिका ने भी उसको फूलोट किया है उपयोग शुरू किया है रिजल्ट दुनिया प्रतीक्षा में है। भारत ने अहमदाबाद यानि गूजरात सूरत के और फिर हैदराबाद फिर पूना दुनिया के 63 देशों के डिप्लोमेट्स जो स्वास्थ्य संबंधी थे वह आए दे आर फुली सेटिस्फाइड और वहां से उनको समाचार मिला कि 400 रुपये के आसपास वैक्सिन का रेट बन जाएगा। सस्ता होगा सबसे प्रभावी होगा फुल्ली बेस्ट होगा। परंतु प्रश्न खडा होता है जितने वैक्सीन वाले हैं देश वह सब कह रहे हैं कि 85 परसेंट 86 परसेंट से ज्यादा रिकवरी रेट नहीं होगा अभी एक दो ने कहा कोशिश कर सकते तो 90 भी हो सकता है तो क्या वैक्सीन लेकर भारत अपना रिकवरी रेट 93 परसेंट से 85 परसेंट घटायेगा और लोगों को मरने की इजाजत देगा। ये एक बड़ा विचित्र सा वैज्ञानिक प्रश्न है बौद्धिक प्रश्न है परंतु जो भी होगा दुनिया को यह लगता है कि भारत अगर वैक्सिन निकाल लेगा उसका व्यापार नहीं होगा शोषण नहीं होगा भारत के द्वारा किसी का और सस्ती भी होगी इस विश्वास ने आज विश्व में धारणा स्थापित कर ली। क्योंकि भारत ने कोविड-19 के समय में 150 देशों को मास्क भी दिया सोशल डिस्टेंसिंग भी दिया काढ़े भी दिये आयुर्वेदिक और योग के प्रयोग भी दिए प्राकृतिक चिकित्या के भी प्रयोग दिये होम्योपैथि और यूनानी से भी दिए और जो भारत के पास एक स्टोरेज था उसका टेस्टिंग करके ऐसी क्यों जो पुराना एक 25-30 साल पहले से पूर्व का वैक्सीन था उसको फिर से फ्रेस करके वह भी दिया दुनिया ने लिया और दुनिया को बड़ा संतोष मिला भारत ने उसका व्यापार नहीं किया भारत ने मानवीय

जीवन मूल्य को प्रतिष्ठित करते हुए उसका वितरण किया इसलिए एट द टाइम ऑफ क्राइसिस भारत ने मानवीय जीवन मूल्यों का प्रगटीकरण विश्व के सामने किया दुनिया का कोई दूसरा देश नहीं कर सकता सारी दुनिया में इस समय बीमारियों से फिर कोविड-19 से और भूख से मौत हुई कोई देश नहीं है जिसमें भूख से मौत नहीं हुई पर हमें उस भारत को भी सोचना और समझना जानना होगा हमारा देश ही एक मात्र देश निकला इसकी सरकार और जनता ने कोविड-19 के खिलाफ स्वच्छता, रक्षा, चिकित्सा और समाजसेवी एक बड़ी फौज खड़ी थी जिसमें हजारों ने बलिदान दिया लोगों ने अन्न से घर भरे और जहां भोजन की जरूरत थी वहां भोजन गया देयर इज ओनली वन नेशन इन वर्ल्ड इन दिस ईयर ऑफ कोविड-19 जहां भूख से एक भी मौत नहीं हुई भारत के साधारण और असाधारण इंसान की जीवन मूल्यों के प्रति गहराई से कैसी आस्था इन प्रैक्टिस है इसको भी देखा है दुनिया ने इमें एहसास करके इसको जीना होगा क्योंकि समाज जिन से संचालित होता है उनके शरीर मन बुद्धि में यह विश्वास जागना चाहिए कि भारत कैसा था कैसा हुआ और आज कैसा चल पड़ा है अगर आज आपने इसको नहीं सोचा और नहीं किया तो हमारा और भारत का दुर्भाग्य है यह पुनः ना जन्मे यह ईश्वर की इच्छा है हमें उसको साकार करने के लिए वी हैव टू प्रिपेयर आवर सेल्फ और आने वाली पीढ़ी इसको जीना चाहती है लोग इस पर डिबेट करेंगे कि भारत का ज्ञान विज्ञान कैसा है पूरब पश्चिम फिल्म के अंदर एक गीत था और एक कला का एक गाना बनाते हैं है प्रीत जहां की रीत मैं उस देश का रहने वाला हूं भारत का रहने वाला हूं भारत की बात सुनाता हूं। है प्रीत जहां की रीत मैं उसके गुण गाता हूं भारत का रहने वाला हूं भारत की बात बताता हूं उसने बताया कि भारत ने दुनिया शून्य दिया दशमलव दिया आज तक दुनिया में किसी ने उस गाने पर यह लेख लिखा नहीं लिखा यह भारत का गलत है अहंकार है इसलिए हमारा कलाकार भी संकल्प कर ले तो वह सत्य का एहसास दुनिया को दे सकता है जनता में जागृत कर सकता है तो फिर इस देश का प्रबुद्धजन इस सत्य का साक्षात करके वह उसको एस्टेब्लिश करेगा या भोगवाद अल्ट्रालेफ्ट अल्ट्रावेस्ट अल्ट्रासुडोसेकुलरिस्ट करते रहेंगे वो उसको ड्रेग करते रहेंगे और वो उसको भ्रमित कर भारत को सही मार्ग पर ना आने देने में ही कारण बज जाए इसलिए आप सब और ऐसे अनेकानेक प्रबुद्ध जन और युवाजनों के मन में एक तड़प है कि नए भारत का निर्माण और उसको ठीक से समझना और ठीक से समझाना हम अल्ट्रावेस्ट अल्ट्रालेफ्ट अल्ट्रासुडोसेकुलरिस्ट इसके ज्ञान से निकलेंगे और सत्य और सही के ज्ञान में और विज्ञान में आएंगे तो दुनिया हमें स्वीकार करेगी। मैंने पिछले सत्रह अट्ठारह वर्ष में 20-25 लाख मुसलमानों से भारत में अब तक संवाद कर लिया है। लाखों से बार बार भी किया है और रहा हूं। दुनिया के 22-23 देशों के डिप्लोमेट से और रिलीजियस और इंटेलेक्चुअल लीडर से भी वार्तालाप मैंने किया है। ईसाइयों से हजारों से लाखों में वार्तालाप किया 15 से अधिक ईसा देशों से भी वार्तालाप किया उनके जितने सेग्मेंटस् 229 हैं फिरके के सब रिलीजन अधिकांश जो बड़े हैं 70-80 उनसे भी किया है। मैने 30-40 बौद्ध देशों से और लाखों लाख बौद्धों से पूज्य बाबा साहब से बने हुए नवबोध उनसे भी वार्तालाप किया। जनजातियों से भी किया मैंने सिखों से भी कुछ शुरू किया और कुछ अच्छा

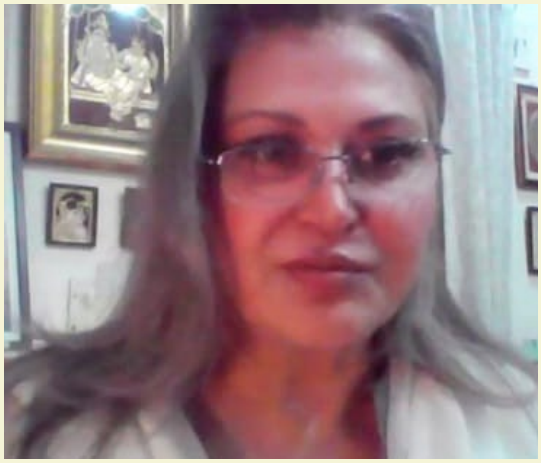

बढ़ भी रहा है मुझे नहीं लगा कि यह असंभव चीजें लगता है हम सत्य और सही भारत को ज्ञान और विज्ञान के परिपेक्ष में समझ कर कंज्यूमरिज्म का भोग वाद का दिमाग पर से चश्मा उतार कर दिल के अंदर भारत निर्माण का संकल्प लेकर अगर इस समय भारत को नेतृत्व देंगे गैर राजनीतिक, बौद्धिक सामाजिक सांस्कृतिक तो यह नवभारत के संचार का एक सुंदर और स्वस्थ समय है और अवसर है और मार्ग। इसलिए युवा तैयार है प्रबुद्ध जन उस मार्ग पर है बस इतना ही है कि उसकी सक्रियता बढ़ानी है आप सब वह लोग है जिन्होंने अपने पूरे जीवन को एक पुशलैम्प के रूप में दिया है जिसमें प्रकाश है उस प्रकाश के अंदर एक सौंदर्य है उस प्रकाश के अंदर एक खुश्बू है उस प्रकाश के अंदर दीन दुखी गरीब पीड़ित के प्रति ममता है उसको गले लगाकर ऊपर उठाने की क्षमता है इसलिए हम सब अनेक जगह अनेक मंचों पर कार्यरत भी हैं और अपनी पॉजिटिव कंट्रीव्यूशन भी समाज और देश के प्रति और मानवता के प्रति कर रहे हैं तो हम सब जहां जहां जहां जो कर रहे हैं वह करते रहे पर इस मंच से मिलकर हम सब एक बड़े आंदोलन को धीरे-धीरे जन्म दें जो छुआछूत से मुक्त भारत को लाएगा क्योंकि अनटचेब्लिटी इज ए सिन एंड क्राइम और हेड ऑफ द भारत एंड ह्यूमन रेस यह जब तक है तो प्रगति हमेशा अवरूद्ध रहेगी सद्भाव जब तक नहीं आएगा तो शिक्षा और विकास भी रुके रहेगी इट इस नॉट प्रॉब्लम बाय द अवर्न इट इज ए प्रॉब्लम टोटली बाय द स्वर्णस् इसलिए उसमें एक प्रायश्चित मूवमेंट भी आएगा तो एक परिवर्तन की बयार बहेगी। रिलीजन टकराने के लिए नहीं है वे ऑफ वर्शिप के मार्ग हैं। अपने पर चलो दूसरे का सम्मान करो धर्मांधता धर्मांतरण लव जिहाद जैसे अपराधों से बचो लिंग भद नहीं नारी सम्मान हर हालत में अमीर गरीब है पढ़ा लिखा अनपढ़ है गांव का शहर का है ऐसे जो भेद से आदमी कुंठित रहता है उनसे ऊपर उठें। इसलिए जितने प्रकार की विविधता है और अनीता हैं यह भेद नहीं है संघर्ष नहीं है कल फिक्स नहीं है भ्रूण जो खिलता विविधताएं और अनेएकताएं हैं यह भेद नहीं है संषर्घ नहीं है कनफ्लिक्स नहीं है यह एक भूरण जो खिलाता और विकसित होता है अनेकता और विविधत में बीज हम एक है पर खिलता और विकसित होता है वह अनेकता और विविधता में है। इसलिए प्रकृति और ईश्वर ने हमें एक किया है और उसके विकास का मार्ग अनेकता और विविधता में खिलने के लिए छोड़ा है तो इसलिए डायवर्सिटी में संघर्ष नहीं है कनफ्लिक्स नहीं है बल्कि यह तो सौंदर्य है सुगंध है प्रकाश है और यह मूल रूप में एक था एक है और एक ही रहेगा। चाहे देश के रूप में हो चाहे व्यक्ति के रूप में हो चाहे परिवार के रूप में हो। कभी-कभी जब कुछ लोग यह कहते हैं देश डायवर्सिटीज में है उसको यूनिटी में खिलाना है तो कभी भी वह सफल नहीं होते हैं। हम मूल रूप से एक है खिले और विकसित हुए हम अनेकता में विविधता में हैं तो फिर टकराव नहीं दिखाई देंगे सुंदरता दिखाई देगी सुगंध आएगा और इसलिए ऐसे शब्द भेदों से ऊपर उठाते हुए और देश के अंदर एक बात को तेज गति से जन्म देना है कि लोग अपनी ड्यूटी को पूजा मानकर भक्ति मानकर राष्ट्र और समाज के प्रति समर्पित होकर करें और जो आज किसी भी काम को करने के लिए धन का लेनदेन चला है देट इज एन करप्शन, करप्शन इज ए क्राइम। यह विकास के लिए सबसे बड़ा संकट है तो क्या मनुष्य अपनी जो भूख बढ़ाकर जीता है वह अपनी भूख के राक्षस को

जलाकर जीता है वह उससे मुक्त होकर वह संतुष्ट मानव के रूप में विकास करें नए नए आयाम लाए इसलिए आत्मनिर्भर भारत आत्म समर्थ भारत। जब इसका आगाज होता तो डोकलाम से भी चीन को निकाल देते हैं एलएसी से दूर कर देते हैं बालाकोट में सर्जिकल स्ट्राइक करके पाकिस्तान को सबक सिखाते हैं पर चीन को चेतावनी दे देते हैं दुनिया में आतंकवाद के लिए आह्वाहन करने पर अमेरिका को 20-22 देशों का समर्थन मिलता है चीन के समर्थन ही नहीं मिलता रूस को भी कुछ का मिलता है भारत जब आह्वाहन करता है तो 126 देशों के समर्थन के साथ वह दुनिया में आगे बढ़ता है बहुत समय के बाद देश की अर्थनीति समाज नीति खेल नीति उद्योग नीति राजनीति कूटनीति में संबोधन देंगे कैसा साहित्य लाएंगे कौन सी चीजों को कहां पर प्रतिष्ठित करेंगे आप सब पूर्णतया व्यक्तिगत रूप से और समूलरूप में सक्षम थे सक्षम है और सक्षमता और अधिक आपकी बनती चली जाने वाली है। बहुत अधिक बातें न करते हुए जोकि आप ऐसे है जो स्वयं एक-एक पंक्तियों पर एक एक ग्रंथ तैयार कर सकते हैं। अभी एक प्रोफेसर ख्वाजा इश्तकार हैं उनके मन कें अंदर एक क्राइसिस था जिससे वह डील कर रहे थे और उसके कारण भारत में संप्रदायों में सद्भाव आये विशेष रूप से इस्लाम और सनातन मुसलमान और आर एस एस स्कूल ऑफ थॉट उन्होंने 500 पेज का ग्रंथ लिखा है द मीटिंग ऑफ माइंडस् ए में सूदींग ब्रिदिंग इनीशिएटिव ए ब्रिदिंग इनीशिएटिव उसका हिंदी उर्दू अनुवाद भी छपने की तैयारी में है ऐसे अनेक प्रकार के साहित्य भी आ रहे हैं मैं इन्हीं शब्दों के साथ नवभारत फाउंडेशन एक स्वतंत्र बुद्धिजीवी प्रबुद्ध और युवा जनों का आंदोलन चले एक छोटी टीम की घोषणा करने के बाद मैं आप सबको जय हिंद करूंगा क्योंकि पूर्व चीफ जस्टिस श्री बालाकृष्ण जी भी हम सबके बीच में है मैं उने साथ बिहार के अंदर एक बौद्धों के कार्यक्रम में साथ था जहां मैंने उनको सुना था एकस्पीरियंस्ड हैं दिशा देने की क्षमता रखते हैं उनको सुनेंगे इसलिए दो मिनट में मैं अपने कथन को खत्म कर देता हूं जो टीम रहेगी उसमें यूएसए से महेश बादवा और रवि विज जी अभी रहेंगे साउथ अफ्रिका से भावना खन्ना भारत से श्री रामेश्वर मिश्र पंकज इस नाम से विख्यात है डॉक्टर ए पी सिंह? वसीम रिजवी, विशाल चतुर्वेदी कैप्टन संजय पाराशर डॉक्टर फादर इग्निसी मुथु राजेश पोद्दार विक्रमादित्य श्रीमती रेशमा सिंह इनको जो दो संयोजक के रूप में रहेंगे वह रेशमा सिंह और कैप्टन संजय परासर रहेंगे मेरा आप सब से निवेदन है और भी हो सकता है कि एक दो लोग जोड़ लिए जाए तीन चार लोग जुड़ जाए यह बैठकर नव भारत फाउंडेशन के आप सब से सलाह मशवरा करते हुए और इसकी रचना कार्यक्रम कार्य और कार्य पद्धति को आगे ले जाए इन्हीं शब्दों के साथ आप सब भाईयों और बहनों को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं बहुत-बहुत बधाई इस विश्वास के साथ हम सब एक पथ के प्रतीक थे एक पद के पथिक के रूप में चल रहे हैं और एक पथ के पथिक बनकर नेशन फर्स्ट नेशन लास्ट और उसके साथ-साथ विश्व को भी हम संवारेंगे और सजाएंगे भारत माता की जय । आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं और बधाई आप स्वस्थ रहिए प्रसन्न रहिए सक्रिय रहिए निरोग रहिए और अपने जीवन को उस चरम तक जीइये जहां आप पूरे संतुष्टि के भाव से और दिखाई दें इन्हीं शब्दों के साथ बहुत-बहुत बधाई बहुत-बहुत धन्यवाद।

000000000

नेहा त्रिपाठी

अधुनिकता के सर्प पाशों से

अधुनिकता के सर्प पाशों से,
हम थे जकड़े हुए
जिन हाथो से दूध पिलाया
उस काल को समझ अपना लाल
अंततः डंसे गए
पलपल उन्हीं सपोलों से
विमुख हो गए हैं हम,
अपनी उस पुरातन संस्कृति से
जो पूर्वजों से उपहार में
हम नई पीढ़ी को मिले

'प्रेम'

'प्रेम' ये शब्द स्वीट पॉइजन की
तरह है
जितना करोगे उतना दिनप्रतिदिन
जर्जर
होते जाओगे
हालांकि एक दिन ये शब्द विलुप्त
हो जाएगा
और भाषा वैज्ञानिक खोज में
निकलेंगे
अब तो चाँद से उपमा देने के
बजाय
तारों से उपमा दी जाए
हमारे आस पास कुछ ऐसे ही
अनेक तारें होते हैं
और हम सारी जिंदगी दाग लगे
चाँद पर मर रहे होते हैं, अच्छा
मैं गिलोय की शाख सी हूं
और वो नीम के पेड़ सा है
उसके अंदर तीखापन भरा है
फिर भी उसी के तीखेपन में
उलझती चली जा रही हूँ
और एक दिन काट दी जाएंगी
इसकी जड़ों को,
और एक दिन फेक दिया जाएगा
किसी और नीम के पास।

गाँव की औरतें

आँगन में किरणों के आगमन से
पूर्व स्त्रियां दस्तक देती हैं,
उनके पायलों, चूड़ियों
के बीच बजती है सुप्रभात की
घंटी, बालों को एक टीले का
स्वरूप
दे शुरू करती हैं दैनिक चर्या,
गाँव की औरतें निकल पड़ती हैं
हाथ में खुरपी हसिया लिए,
मोतियों सी बिखरी ओस
की बूंदों को समेट
लेती हैं आँचल में
हरे घास का गट्ठर ले
लौटती हैं नीड की ओर
दिनभर जिम्मेदारियों की
बेड़ियों में बंधी
मोटी दीवारों के पीछे
अधूरे स्वप्नो में डूबी हुई
आँगन से निहारती हैं उस
चाँद को, शायद वही उनके
मन के घावों में चाँदनी का
लेप लगा दे, और
दिनभर की थकान
मिटाने की कोशिश में
चांदनी की चादर ओढ़
प्रभात के इंतजार में
निद्रा में डूब जाती हैं

000000000

दिव्या शुक्ला

'और प्रेम लिखना..'

दूर क्षितिज पर
जब सूर्य ओझल हो रहा हो
तब तुम अंधकार के भय से मत
काँपना,
उसकी डूबती हुई लाली में भी
मुझे महसूस करना
और प्रेम लिखना।

रंगबिरंगी पतंगों से भरे आसमां
में
मेरे सतरंगे प्रणय को महसूस
करना
और प्रेम लिखना।
किसी ठूंठ खड़े पेड़ में भी
गाती हुई चिड़ियों के मधुर
कूजन
को सुनना
और प्रेम लिखना।

गुड़ के छोटे से दाने को
जब चींटियाँ बराबर बराबर
अपने कंधों में ले जा रही हों
तब तुम मुझे महसूस करना
और प्रेम लिखना।

जानती हूँ ! ऐसे भीषण समय में
प्रेम लिख पाना सरल नहीं
जहाँ दमन और कत्ल सत्ता की
पहचान बन गए हों
बलात्कार और चीत्कार युग
पर्याय बन गए हों
जब आज का वीभत्स रूप रचा
जा रहा हो
समाज का स्याहपक्ष उकेरा जा
रहा हो
हत्याएं लिखी जा रहीं हों
तब तुम भावी जीवन को प्रेम
कल्पित करना
और प्रेम लिखना।

जब वैमनष्यता की बड़ी बड़ी
इमारतें
निर्मित की जा रहीं हों
तुम प्रेम की झोपड़ियां गढ़ना
क्योंकि भूकम्प आने पर इमारतें
ढहती हैं, झोपड़ियां नहीं
अतः तुम प्रेम ही गढ़ना।

मुझे पता है
असंख्य बेजुबानों और हजारों
निरपराधों
के खूं से लबालब होंगी तुम्हारे
जमाने की
कलमों की स्याही
पर तुम अपने प्रेम पल्लवित
रक्ताक्षरों से
प्रेम ही लिखना।

यह भी अनुमान है
कोई नहीं पढ़ेगा तुम्हारे
अप्रासंगिक प्रेमकाव्य को
पर उन वृद्ध जोड़ों के लिए
जो कष्ट में कराहते हुए भी
अपनी जवानी के दिनों की
सुखद स्मृति में
जी रहे रहें
तुम उनकी धुंधलाई आंखों में
मुझे महसूस करना
और प्रेम लिखना।

000000000

निधि भार्गव 'मानवी'

गुरुवर की आराधना

गुरुवर की आराधना, करती है कल्याण ।
गुरु की आज्ञा मानकर, शिष्य बने गुणवान ।।

कदम कदम पर देखिये, झूठे लोग हजार ।
रचा हुआ हर ओर है, स्वारथ का संसार ।।

अंतःकरण की वेदना, देती दिल को चीर ।
बस मन का संतोष ही, हर लेता सब पीर ।।

सरहद पर जो दे गया, लड़ते-लड़ते प्राण ।
ऐसे वीर सपूत को, करता नमन मसान ।।

यदि माया में लिप्त हो, छोड़ा अपना देश ।
अपनों से होकर विमुख, बीते जीवन शेष ।।

करूँ नमन गुरुदेव को, नित्य नवाऊँ शीश ।
गुरु चरणन में दीखते, परम पुरुष जगदीश ।।

हिंदी हिंद की आत्मा, मन से करो प्रचार ।
श्रेष्ठ सभी से है सखे, हिंदी का संसार ।।

सखे बिगाड़े क्या भला, उनका ये संसार ।
राम नाम के आसरे, करते जो भव पार ।।

होनी तो होकर रहे, समय बदलता चाल ।
कभी खुशी उर झूमती, कभी घूरता काल ।।

चाहे जितने ले बदल, रे मन अपने भेष ।
एक दिवस ले जायगा, काल पकड़कर केश ।।

जल

पलकों की कोरों में भी
रहता है एक जलाशय
रिस कर जो, बुझाता
है प्यास मायूसियों की..
जिस तरह सूखा जीवन
तृप्त होता है न जल से
बुझ जाती है प्यास
धरती की भी.. बरस
कर जब सैंकड़ों बादल
फट पड़ते है.. और बह
जाता है अमृत जल,
लहलहा उठती हैं फसलें
ये जल ही तो स्त्रोत है
जीने का.. देखो..
कभी मापना मत इसे
कोई पैमाना नहीं होता
इसका, क्यूंकि सींचता है
ये असंख्य जिंदगियां
और, प्रकृति का पोर-पोर।

000000000

पूजा खत्री

भ्रम था जो

भ्रम था जो
मेरे अक्स का
तेरे साथ के
साथ छूट गया

छूटा जो
मेरे हाथों से
गिर कर तू और
गिरते ही टूट गया

बिखर गए थे मेरे
भी कुछ अंश
जमीं पर फैले
जो अब तेरे वजूद में

छुपा रखे थे उसने
कई राज मेरे
अपने सीने में
किसी राजदार
की ही तरह....

कुछ गुमनाम लोग

अतीत के झरोखें में छुपे
वो कुछ गुमनाम लोग,
कभी जख़्म तो कभी दिलशाद हुए
वो कुछ गुमनाम लोग..

किरायेदार हुए जो दिल के मकाँ मे
वो कुछ गुमनाम लोग,
दे गये कुछ दर्दे-निशां,अजब थे
वो कुछ गुमनाम लोग...

आती-जाती सांसों में फेरा लगाते
वो कुछ गुमनाम लोग,
जल जाएंगे मेरे साथ ही कुछ नाम के
वो कुछ गुमनाम लोग...

रहते थे जो परझाई बन के मेरे साथ
वो कुछ गुमनाम लोग,
जुबां पे नहीं साथ पर खास का अहसास
कराते वो कुछ गुमनाम लोग ....

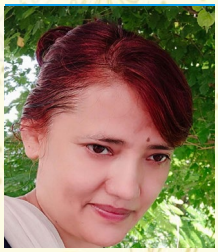

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

1

हो मख़मली-सी इक ज़मीं,
रँगीला आसमान हो
न तीरगी, न बेकली,
खिला-खिला जहान हो

इधर भी गुल खिले हुए,
उधर भी ज़ाफ़रान हो
बहार से सजा हुआ,
मेरा भी इक मकान हो

हो गुनगुनाती चाँदनी,
हों कश्तियों की मस्तियाँ
नदी के उस कछार पर,
लहर का इक उफान हो

वो गर्मियाँ पहाड़ की,
वो सुरमई-सी शाम इक
चिनारों से सजी हुई
नई-सी दास्तान हो

हो चाहतों का सिलसिला,
हो हसरतों का क़ाफ़िला
वो इक कशिश,
वो इक तड़प हमारे दरमियान हो

न दर्द हो, न दूरियाँ,
न उलझनें, न नफ़रतें
ख़ुदा तेरे जहान में,
दिलों का अब मिलान हो

कफ़स-सी हो न ज़िन्दगी,
परों पे हौसले सजें
उमंग से भरी हुई,
नई-सी इक उड़ान हो

2

सब इन आम तुम्हारे हिस्से
लो ये शाम तुम्हारे हिस्से

मोह लिया जब से इस मन को
आठों याम तुम्हारे हिस्से

मन-मन्दिर की बात करूँ क्या
चारों धाम तुम्हारे हिस्से

मेरा मुझमें बचा कहाँ कुछ
अब ये नाम तुम्हारे हिस्से

मधुबन, गोकुल की सब गलियाँ
लो घनश्याम तुम्हारे हिस्से

मुझको मुझसे छीन लिया अब
ये इल्ज़ाम तुम्हारे हिस्से

थामे रहना डोर प्रेम की
बस ये काम तुम्हारे हिस्से

डॉ. ममता त्रिपाठी

वीरान गाँव

जाओ खेतों में
खलिहानों में
बगिया और चौपालों में
घर की कुण्डी बन्द मिलेगी
प्रवास की व्यथा कहेगी।

अब कोई भीड़ नहीं जुटेगी
जब भी कभी गुहार उठेगी।

मिलकर छपरा न छायेगा
न साथ उठाया जायेगा।
अब सामूहिक श्रम से
न लिंटर डाला जायेगा।।

अब अमराई के आने पर
आमों की प्रतीक्षा नहीं रहेगी
महुआ के फूलों के रस में
बचपन की इच्छा नहीं रहेगी।।

घर-आँगन ड्योढ़ी सूनी है
चारों ओर बहुत वीरानी है।
गृह वानप्रस्थियों के कुटीर बने
उन्हें धूनी यहीं रमानी है।।

अब गोहराने पर कोई मुन्ना
न झट दौड़ा आयेगा।
अब सावन ऐसे बरसेगा
झूला तरस जायेगा।
अब तितली और टिड्डियों के
पीछे न बच्चे दौड़ेगे।
डिबिया जैसे घरों में रहकर
वे नगरों में पढ़े-बढ़ेंगे।।

गाँव-गाँव औ घर-घर की
यह कथा बड़ी निराली है।
तथाकथित विकास ने
क्या दुर्दशा कर डाली है!

बबिता ओबराए

हां, श्रृंगार अधिकार है मेरा

कभी मन को, कभी तन को
कर लेती हूं अलंकृत
आंतरिक खुशियों में.....
कभी निहार लेती हूं
स्वयं को दर्पण में
नज़र आती है लकीरें
कुछ महीन निशान
अनुभव बीते साल के
खट्टे मीठे क्षण.....

यकायक आंखें बन्द कर
मुस्कुराते खोलती हूं
नज़र आ ती हैं स्त्री
खूबसूरत, दमकती
जन्मदात्री,घर संजोने वाली
माथे पर बिंदिया, होंठों पर लाली
थोड़ा पाउडर थोप चेहरे पर
छिपा लेती हूं, उभरती लकीरें
उम्र के बढ़ते निशान.....
क्योंकि श्रंगार मेरा अधिकार है
तन से,मन से जानती हूं
खुद को अलंकृत करना.....!!

अर्चना मालवीय

एक गीत,,,,,,,,,!!!

लिख दिए जो गीत हमने,
प्रीत वैदेही की जीकर
क्या परम् तुम माँग लोगे
विरह का प्रतिदान मुझसे?

इन नयन में देखकर प्रतिबिंब,
तुम निश्चिंत रहना
और इन अनुतप्त अधरों पर
नहीं कुछ स्वप्न गढ़ना
हो गए हैं जब समर्पित
प्राण उस रजधूलि में तब-
क्या परम् तुम माँग लोगे
हृदय का अभिमान मुझसे?

क्या लिखूँ जब सत्य का,
आँचल हुआ उन्मुक्त जबसे
लेखनी की रागिनी में
स्वर हुएअवमुक्त तबसे
दे दिए हैं शब्द सारे प्रिय!
तुम्हारी व्यंजना में-
क्या परम् तुम माँग लोगे
आत्म का सम्मान मुझसे?

लय हुई स्वरबद्ध कुछ,
आबद्ध स्वप्नों ने किया है
इस गहनतम निशा में अब
व्यग्र नयनों ने किया है
हो गए हैं जब तुम्हारे
तंत्र में वात्सल्य मेरे
क्या परम् तुम माँग लोगे
श्वांस का गतिमान मुझसे?

मोह के प्रश्नों से बढ़कर,
अनगढ़े कुछ सुख पड़े हैं
धैर्य का विश्वास लेकर
भाग्य से भी कब लड़े हैं
कर दिए हैं मुक्त हमने
कल्पना के चित्र सारे-
क्या परम् तुम माँग लोगे
सुखों का प्रतिमान मुझसे???

कुछ रंग निखारे हैं तुमने
चटकीले से,,,
कहो तो भर दूँ
उनको सिंदूरी कर दूँ
तुम्हारी ही लय में
मिला दूँ उनका चटकीलापन
यही तो कहा था तुमने
सरल बनो,,,,
तब होगा आसान-
पीना गरल जिंदगी का,,,,,,
कठिन होकर जीना आसान है
तभी तो-
सुर्ख़ हो रही हूँ,,,,,,,
जीवन के धरातल पर
सहज हो रही हूँ
कलम के नीलांचल पर
मेरे प्रभु!
देना आशीष,,,,
सहज ही रहूँ
सुर्ख़ ही रहूँ
उस विस्तृत आकाश सा
जिसमें मेरी पूरी दुनिया हो,,,,!!

संस्कृति पर्व परिवार के लिए गर्व का क्षण

संस्कृति पर्व परिवार के लिए यह गर्व का क्षण है। इस परिवार के सलाहकार और वरिष्ठ साहित्यकार भाई दयानंद जी पांडेय को उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से हिंदी संस्थान का दूसरा सबसे बड़ा सम्मान लोहिया सम्मान एवं संस्कृति पर्व की वरिष्ठ सहसंपादक श्रीमती अनिता अग्रवाल जी को इसी क्रम में कविता के लिए श्रीधर पाठक सम्मान मिला है। यह संस्कृति पर्व परिवार के लिए वास्तव में एक ऐसा पल है जिसको इस पत्रिका की यात्रा में एक स्वर्णिम पृष्ठ कह सकते हैं। भाई दयानंद जी की साहित्यिक और पत्रकारीय यात्रा से सभी परिचित हैं। अनिता जी को यह सम्मान उनकी काव्यकृति स्मृतियों का वातायन के लिए प्रदान किया जा रहा है। अनिता जी और दयानंद जी को 'संस्कृति पर्व' एवं 'भारत संस्कृति न्यास' परिवार की ओर से हृदय से बधाई।

पत्रकार, लेखक और साहित्यकार के रूप में दयानंद पाण्डेय किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। अपने उपन्यासों और कहानियों के लिए वह हिन्दी जगत में विशिष्ट पहचान रखते हैं। एक पत्रकार के रूप में अपनी बेबाक रिर्पोटिंग के लिए उन्हें बड़े सम्मान से देखा जाता है। वह अभी भी अपने लेखन के साथ-साथ सोशल मीडिया पर व्यापक सक्रियता के साथ उपस्थित हैं।

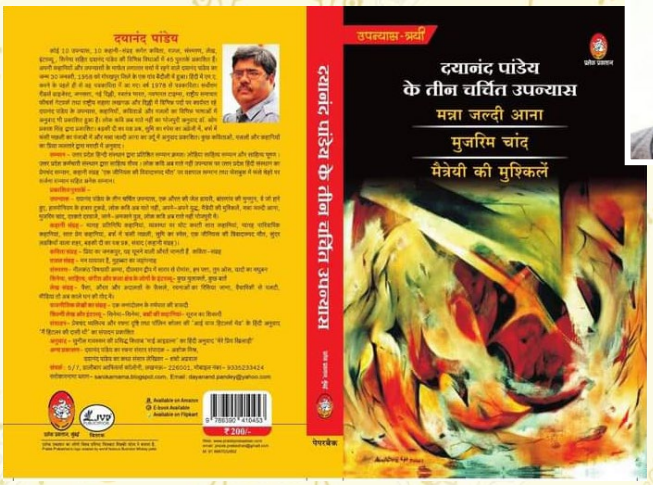

कविता, संस्मरण, संस्कृति और स्त्री मुद्दों पर लगातार लिखते हुए अनिता अग्रवाल ने साहित्य में लम्बी यात्रा तय की है। विधि की छात्रा होकर भी हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए वह लगातार सक्रिय हैं। उनकी सक्रियता नई पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है।

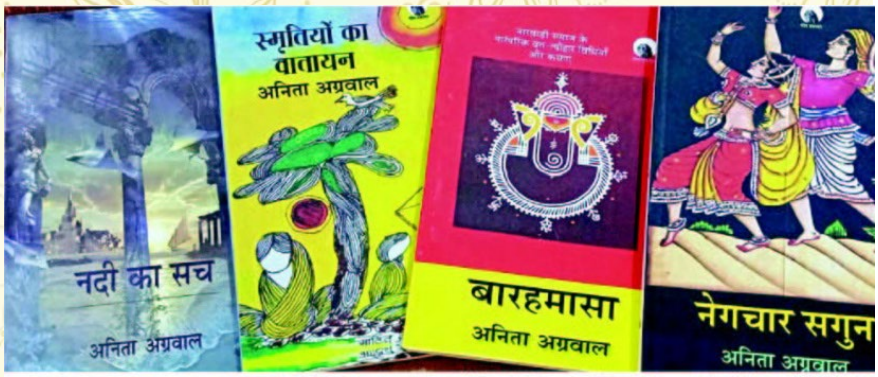

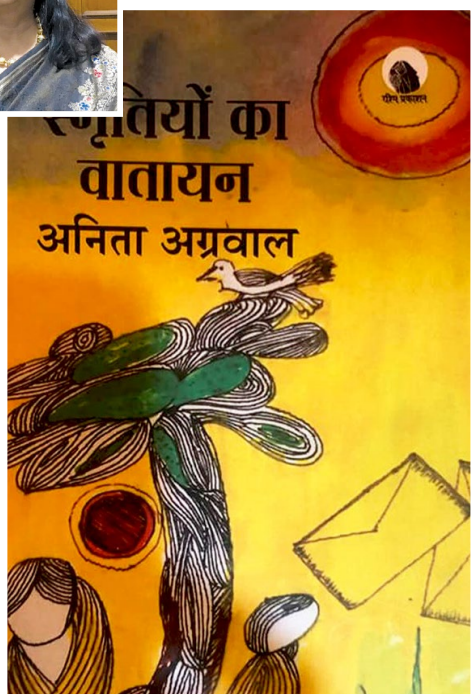

संस्कृति पर्व

संस्कृति, साहित्य, अध्यात्म और जीवन दर्शन की मासिक द्विभाषी पत्रिका

Sanskriti Parva

Bilingual Monthly of Culture, Literature, Spiritualism & Philosophy

(भारत संस्कृति न्यास का प्रकल्प)

सदस्यता फॉर्म - SUBSCRIPTI0N FORM

नाम
NAME ____________________

पिता/पति
FATHER/HUSBAND ____________________

पत्रिका के लिए स्थाई डाक का पता
PERMANENT POSTAL ADDRESS FOR MAGAZINE ____________________

____

____

पिन कोड
PIN CODE ____________________

कन्ट्री कोड
COUNTRY CODE ____________________

ई-मेल
MAIL ID ____________________

मोबाइल नं०
MOBILE NO. ____________________

सदस्यता का प्रकार एवं शुल्क / TYPES OF MEMBERSHIP & FEE

	भारत में /IN INDIA	अप्रवासियों के लिए/FOR NRIs
वार्षिक/ANNUAL	1000/-	$100
त्रैवार्षिक/THREE YEARS	2500/-	$250
पंच वार्षिक/FIVE YEARS	5000/-	$400
आजीवन व्यक्ति/LIFETIME PERSON	11000/-	$750
आजीवन संस्था/LIFETIME INSTITUTION	21000/-	$1000

शुल्क का भुगतान नगद, ड्राफ्ट या चेक से किया जा सकता है। ऑनलाइन भुगतान पत्रिका के खाते में किया जा सकता है। चेक या ड्राफ्ट 'संस्कृतिपर्व प्रकाशन' के नाम होना चाहिए।

Account Detail

NAME : SANSKRITIPARVA PRAKASHAN,
BANK : HDFC, PRANAY TOWERS, LUCKNOW.
A/c NO. : 50200035311373 , IFSC : HDFC0000594, MICR : 226240002, BRANCH CODE: 000594

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001
लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
दिल्ली कार्यालय : बी-38 डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
सम्पर्क : + 91 94508 87186-87
यू.एस कार्यालयः 17413 Blackhawk St. Granada Hills, CA 91344 USA, Cell: 1-818-815-9826

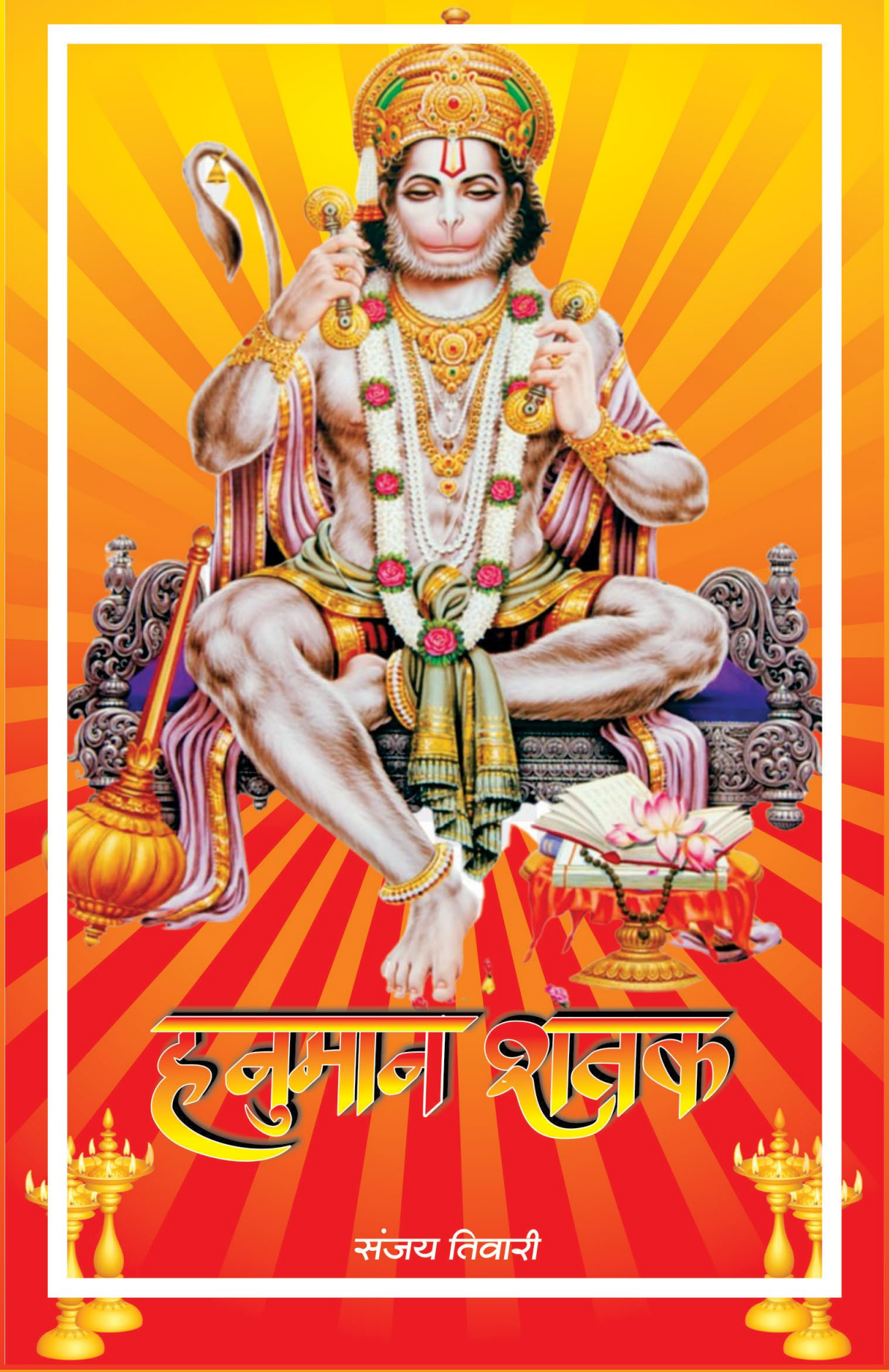
हनुमान शतक
संजय तिवारी

श्री रामचरितामानस

सुन्दरकाण्ड

(मारवाड़ी)

अनिता अग्रवाल

भारत संस्कृति न्यास

उद्देश्य

- सनातन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील
- राष्ट्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रयासरत
- प्राथमिक से स्नातक तक पाठ्यक्रम में संस्कृति शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल कराने का प्रयास
- राष्ट्रीय संस्कृति आयोग का गठन एवं राष्ट्रीय संस्कृति दिवस के निर्धारण के लिए प्रयास

पत्र व्यवहार

बी–64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड गोरखपुर–273001

1–454 वास्तुखण्ड, गोमती नगर लखनऊ–226010

✆ +91:–9450887186, +91:–9450887187

Follow us

पंजीकृत कार्यालय

बी–38, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

Contact : 011-24337573

bharatsanskritinyas@gmail.com

Website - www.bharatsanskritinyas.org